जामिआतुल मदीना (लिलबनात) के निसाब में शामिल

इस्लामी अ़क़ाइद की अहम किताब

अल ह़क़्क़ुल मुबीन

मुसन्निफ़ :-

ग़ज़ालिये ज़मां, राज़िये दौरां ह़ज़रते अ़ल्लामा

सय्यिद अहमद सईद काज़िमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى

फ़ेहरिस्त

अल ह़दीस : *"अगर (बद मज़हब) बीमार पड़ें तो उन को पूछने न जाओ और अगर वोह मर जाएं तो उन के जनाज़े पर ह़ाज़िर न हो और अगर उन का सामना हो तो सलाम न करो ।"* (سنن ابن ماجه المقدمة باب القدر)

और एक जगह यूं फ़रमाया : "उन से शादी बियाह न करो, उन के साथ न खाओ, उन के साथ न पियो, उन के जनाज़े की नमाज़ न पढ़ो और उन के साथ नमाज़ न पढ़ो ।

(كنز العمال، كتاب الفضائل في الباب الثالث في ذكر الصحابة وفضلهم)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

पेशे लफ़्ज़

तख़्लीक़े इन्सानी का मक़्सद मा'रिफ़ते इलाही है और मा'रिफ़ते इलाही का मम्बा[1] मुशाहदए तजल्लिय्याते हुस्ने ला मुतनाही[2] । इस मक़्सदे अ़ज़ीम के तसव्वुर ने इन्सान को वर्त़ए ह़ैरत[3] में मुब्तला कर दिया। वोह एक ऐसे ज़ईफ़ व नादार अजनबी मुसाफ़िर की त़रह़ ह़ैरान था जिसे करोड़ों मील की दुश्वार गुज़ार राहें दरपेश हों और मन्ज़िले मक़्सूद तक पहुंचने का कोई ज़रीआ़ उस के पास मौजूद न हो।

वोह आ़लमे ह़ैरत में ज़बाने ह़ाल से कहता था : इलाही ! तेरी मा'रिफ़त की मन्ज़िल तक कैसे पहुंचूं ? मैं कमज़ोर ज़ईफ़ुल बुनयान[4] और फिर मुझे बहकाने के लिये क़दम क़दम पर शैत़ान। वोह परेशान हो कर सोचता था कि ज़ो'फ़ को कुव्वत से क्या निस्बत ? इम्कान[5] को वुजूब[6] से क्या वासित़ा ? मह़दूद को ग़ैर मह़दूद से क्या अ़लाक़ा ? कहां ह़ादिस[7] कहां क़दीम ? कहां इन्सान कहां रह़मान ? न उस के हुस्नो जमाल की तजल्लियों तक मेरी निगाहें पहुंच सकती हैं ? न मैं उस के दीदारे जमाल की ताब ला सकता हूं !

इन्सान इसी कश्मकश में मुब्तला था कि क़ुदरत ने बर वक़्त उस की दस्तगीरी फ़रमाई और रूहे दो आ़लम ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आईनए वुजूद से अपने हुस्ने ला मह़दूद की तजल्लियां ज़ाहिर फ़रमा कर अपनी मा'रिफ़त की राहें उस पर रोशन कर दीं।[8]

---

(1) बुन्याद (2) खुदाए तआ़ला के ला मह़दूद हुस्न की तजल्लिय्यात का मुशाहदा करना। (3) इन्तिहाई ह़ैरत की ह़ालत में (4) पैदाइशी कमज़ोर (5) जो अपने वुजूद में दूसरे का मोह़ताज हो या'नी मख़्लूक़ (6) जो अपने वुजूद में दूसरे का मोह़ताज न हो या'नी ख़ालिक़ (7) क़दीम की ज़िद नई चीज़ जो पहले न हो, फ़ानी (8) या'नी अल्लाह तआ़ला ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपनी ज़ात व सिफ़ात का मज़हरे अतम बना कर इन्सान पर अपनी मा'रिफ़त की राहें खोल दीं कि जिस ने रब के हुस्नो जमाल और क़ुदरत को देखना हो वोह हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देख ले।

सलातो सलाम हो उस बरज़ख़े कुब्रा[(1)] ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा عليه وآله التحية والثناء पर जिस ने ज़ो'फ़े इन्सानी को कुव्वत से बदल दिया। हुदूस को क़दीम का आईना बना दिया। इमकान को बारगाहे वुजूब में ह़ाज़िर कर दिया। मकान का रिश्ता ला मकान से जोड़ दिया। मह़दूद को ग़ैरे मह़दूद से मिला दिया या'नी बन्दे को ख़ुदा तक पहुंचा दिया।

ह़क़ येह है कि रुख़्सारे मुह़म्मदी आईनए जमाले ह़क़ है और ख़द्दो ख़ाले मुस्त़फ़ा मज़हरे हुस्ने किब्रिया।[(2)] फिर किस त़रह़ मुमकिन है कि एक का इन्कार दूसरे के इक़रार के साथ जम्अ़ हो जाए। अगर ह़क़ के साथ बात़िल, नूर के साथ ज़ुल्मत, कुफ़्र के साथ इस्लाम का इजतिमाअ़ मुतसव्वर हो तो येह भी[(3)] मुमकिन होगा। जब वोह मुह़ाल है तो येह भी मुह़ाल।

बिना बरीं इस ह़क़ीक़त को तस्लीम करने के सिवा कोई चारा ही नहीं कि हुस्ने मुह़म्मदी का इन्कार जमाले ख़ुदावन्दी का इन्कार और बारगाहे नबुव्वत की तौहीन ह़ज़रते उलूहिय्यत[(4)] की तन्क़ीस है। शाने उलूहिय्यत की तौहीन करने वाला मोमिन नहीं तो गुस्ताख़े नबुव्वत क्यूंकर मुसलमान हो सकता है।

कोई मक्तबए ख़याल[(5)] हो हमें किसी से इनाद नहीं अलबत्ता मुन्किरीने कमालाते नबुव्वत और मुनक़्क़िसीने शाने रिसालत[(6)] से हमें त़बई तनफ़्फ़ुर[(7)] है। इस लिये कि वोह आईनए जमाले उलूहिय्यत में ऐब के मुतलाशी हैं और उन का येह त़र्ज़े अमल न सिर्फ़ मक़सदे तख़्लीक़े इन्सानी के मुनाफ़ी है बल्कि आदाबे बन्दगी[(8)] के भी ख़िलाफ़ और ख़ालिक़े काइनात से खुली बग़ावत के मुतरादिफ़ है।

---

(1) बरज़ख़ से मुराद वोह शै जो दो अश्या के दरमियान वासित़ा हो चूंकि सरकार عليه السلام ख़ालिक़ और मख़्लूक़ के दरमियान वासित़ा हैं लिहाज़ा ह़क़ीक़ते मुह़म्मदी बरज़ख़ है। (2) या'नी हुज़ूर عليه السلام का हुस्नो जमाल और सिफ़ात अल्लाह तआ़ला के हुस्नो जमाल और सिफ़ात का मज़हर हैं। (3) या'नी हुज़ूर صلى الله تعالى عليه وآله وسلم का इन्कार अल्लाह तआ़ला का इन्कार न हो। (4) शाने ख़ुदावन्दी (5) फ़िर्क़ा (6) शाने रिसालत घटाने वाले (7) फ़ित़री नफ़रत (8) इबादत के आदाब

इस के बा वुजूद भी हमें उन से कुछ सरोकार नहीं, हमारा ख़िताब तो जमाले उलूहिय्यत के दीवानों और शम्ए रिसालत के उन परवानों से है जो ज़ाते पाके मुस्तफ़ा عليه وآله التحية والثناء को मा'रिफ़ते इलाही और क़ुर्बे ख़ुदावन्दी का वसीलए उ़ज़्मा जान कर उन की शम्ए हुस्नो जमाल पर क़ुरबान हो जाने को अपना मक़्सदे ह़यात समझते हैं और इसी लिये हम ने दलाइल से अलग हो कर सिर्फ़ मसाइल बयान किये हैं। अलबत्ता इब्तिदा में बतौ़र मुक़द्दमा चन्द ऐसे उसूल लिख दिये हैं जिन की रोशनी में नाज़िरीने किराम पर उन तमाम तावीलात का फ़साद रोज़े रोशन की त़रह़ वाज़ेह़ हो जाएगा जो तौहीन आमेज़ इ़बारात[1] में आज तक की गई हैं। रहे दलाइल तो ان شاء الله تعالیٰ मुस्तक़बिले क़रीब में हर इख़्तिलाफ़ी मस्अले पर एक मुस्तक़िल रिसाला हदिय्यए नाज़िरीन होगा जिस में पूरी तफ़सील के साथ दलाइल मरक़ूम होंगे। وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ[2]

इस के बा'द येह भी अ़र्ज़ कर दूं कि इस रिसाले में तमाम ह़वालाजात व इ़बाराते मन्क़ूला को मैं ने बज़ाते ख़ुद अस्ल कुतुब में देख कर पूरी तह़क़ीक़ और एह़तियात़ के साथ नक़्ल किया है। अगर एक ह़वाला भी ग़लत़ साबित हो जाए तो मैं उस से रुजूअ़ कर के अपनी ग़लत़ी का ए'तिराफ़ कर लूंगा और साथ ही इस का ए'लान भी शाएअ़ कर दूंगा।

आख़िर में दुआ़ है कि अल्लाह तआ़ला इस मुख़्तसर रिसाले को बरादराने अहले सुन्नत के लिये अपने मस्लक पर साबित क़दम रहने का मूजिब और दूसरों के लिये रुजूअ़ इलल ह़क़[3] का सबब बनाए। (आमीन)

सय्यिद अह़मद सई़द काज़िमी غُفِرَلَهٗ

---

1 जो देवबन्दी फ़िर्क़े के अकाबिर उ़-लमा की किताबों में मौजूद हैं।
2 और येह अल्लाह पर कुछ दुश्वार नहीं 3 ह़क़ की त़रफ़ लौटने

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّى عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْم

اَمَّابَعْدُ : नाज़िरीने किराम की ख़िदमत में अर्ज़ है कि इस रिसाले में अस्ल मवाद तो मैं ने सि. **1946** ई. में ही मुरत्तब कर लिया था लेकिन बा'ज़ मवानेअ़[1] की वजह से त़बाअ़त न हो सकी...ह़त्ता कि इस अ़र्से में देवबन्दी ह़ज़रात के बा'ज़ रसाइल व मज़ामीन नज़र से गुज़रे जिन से मुफ़ीदे मत़लब कुछ इक़्तिबासात ले कर इस में शामिल कर दिये गए।

इस रिसाले की इशाअ़त से मेरी ग़रज़ सिर्फ़ येह है कि जो भोले भाले मुसलमान उ़-लमाए देवबन्द के ज़ाहिरे ह़ाल को देख कर उन्हें अहले ह़क़ और सही़हुल अ़क़ीदा सुन्नी मुसलमान समझते हैं और इसी बिना पर दीनी मा'मूलात में उन्हें अपना मुक़्तदा व पेशवा[2] बनाते हैं। उन के पीछे नमाज़ें पढ़ते हैं। उन से मज़हबी मसाइल दरयाफ़्त करते हैं और उन के साथ मज़हबी उलफ़त रखते हैं मगर येह नहीं जानते कि उन के अ़क़ाइद कैसे हैं? इस रिसाले को पढ़ कर उन्हें उ़-लमाए देवबन्द के अ़क़ाइद से वाक़िफ़िय्यत हो जाए और वोह अपनी आ़क़िबत[3] की फ़िक्र करें और सोचें कि जिन लोगों के ऐसे अ़क़ीदे हैं उन को अपना मुक़्तदा और पेशवा मान कर हमारा क्या ह़श्र[4] होगा।

वहाबी - देवबन्दी

अगर्चे वहाबी-देवबन्दी दो लफ़्ज़ हैं लेकिन इन से मुराद सिर्फ़ वोही गुरौह है जो अपने मा सिवा दूसरे तमाम मुसलमान को काफ़िर व मुशरिक और बिदअ़ती क़रार देता है और जिस के सर बरआवरदा लोगों ने[5] अपनी किताबों में

1 रुकावटों 2 अ़मल व अ़क़ाइद में उन की पैरवी करते हैं। 3 आख़िरत 4 अन्जाम 5 वहाबिय्या के अकाबिर उ़-लमा ने

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم व दीगर अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام व मह़बूबाने ख़ुदावन्दी की शान में तौहीन आमेज़ इबारतें लिखीं और बा 'ज़ उ़यूब व नक़ाइस को अम्बिया व औलिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ बे धड़क मन्सूब किया । इस क़िस्म के लोगों का वुजूद अ़हदे रिसालत[1] से ही चला आ रहा है । चुनान्चे, अल्लाह तआ़ला कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है ।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ فِى الصَّدَقٰتِ فَاِنْ اُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَ اِنْ لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَاۤ اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَرَسُوْلُهٗۤ اِنَّاۤ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ (پ ١٠،سورة التوبة، ٥٨،٥٩)

तर्जमा : और इन में कोई वोह है जो सदक़े बांटने में तुम पर त़ा'न करता है तो अगर इन में से कुछ मिले तो राज़ी हो जाएं और न मिले तो जब ही वोह नाराज़ हैं और क्या अच्छा होता अगर वोह इस पर राज़ी होते जो अल्लाह और उस के रसूल ने उन को दिया और कहते अल्लाह काफ़ी है अब देता है अल्लाह हमें अपने फ़ज़्ल से और उस का रसूल, हमें अल्लाह ही की त़रफ़ रग़बत है ।

येह आयत ज़ुल ख़ुवैसिरा तमीमी[2] के ह़क़ में नाज़िल हुई । इस शख़्स का नाम हुरक़ूस बिन ज़ुहैर[3] है येही ख़वारिज की अस्ल बुन्याद है ।

ख़ारिजिय्यत की इब्तिदा

बुख़ारी और मुस्लिम की ह़दीस में है कि रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم माले ग़नीमत तक़्सीम फ़रमा रहे थे तो ज़ुल ख़ुवैसिरा ने कहा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अ़द्ल कीजिये ।[4]

---

1 सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़मानए मुबारका से 2 ज़ुल ख़ुवैसिरा तमीमी 3 हुरक़ूस बिन ज़ुहैर 4 इन्साफ़ से तक़्सीम कीजिये ।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुझे ख़राबी हो, मैं अ़द्ल न करूंगा तो कौन करेगा ? ह़ज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने अ़र्ज़ किया : मुझे इजाज़त दीजिये कि इस मुनाफ़िक़ की गर्दन मार दूं । **हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इसे छोड़ दो । इस के और भी हमराही[1] हैं कि तुम उन की नमाज़ों के सामने अपनी नमाज़ों को और उन के रोज़ों के सामने अपने रोज़ों को ह़क़ीर देखोगे । वोह क़ुरआन पढ़ेंगे और उन के गलों से न उतरेगा । वोह दीन से ऐसे निकल जाएंगे जैसे तीर शीकार से ।[2]**

दीन में दाख़िल हो कर बे दीन होने वालों की इब्तिदा ऐसे ही लोगों से हुई है जो नमाज़, रोज़ा और दीन के सब काम करने वाले थे लेकिन इस के बा वुजूद उन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने अक़्दस में गुस्ताख़ी की और बे दीन हो गए ।

ह़ज़रते अ़ली को शहीद करने वाले कौन ?

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने मुबारक में तौहीन करने वाले ज़ुल ख़ुवैसिरा के जिन हमराहियों का ज़िक्र ह़दीस शरीफ़ में आया है उन से मुराद वोही लोग हैं जिन्हों ने ज़ुल ख़ुवैसिरा की त़रह़ शाने रिसालत में गुस्ताख़ियां कीं । **इस्लाम में येह पहला गुरौह ख़ारिजियों का है, येही गुरौह अहले ह़क़ को काफ़िर व मुशरिक कह कर उन से क़िताल व जिदाल[3] को जाइज़ क़रार देता है ।** चुनान्चे,

---

1 साथी

2 ...... مسلم ،كتاب الزكاة،باب ذكر الخوارج و صفاتهم،ص٥٣٣،الحديث:١٠٦٤ ...... بخاري،كتاب المناقب، باب علامة النبوة في الاسلام،٢/٥٠٣،الحديث:٣٦١٠

3 जंग

सब से पहले ह़ज़रते अ़ली رضی اللہ تعالٰی عنہ और आप के हमराहियों को ख़ारिजियों ने مَعَاذَاللہ काफ़िर क़रार दिया और ख़लीफ़ए बरह़क़ से बग़ावत की और अहले ह़क़ के साथ जिदाल व क़िताल किया ह़त्ता कि अ़ब्दुर्रह़मान बिन मुलजिम ख़ारिजी के हाथों ह़ज़रते अ़ली کرم اللہ تعالٰی وجہہ الکریم शहीद हुवे ।[1]

फ़ितनए ख़ारिजिय्यत की ग़ैबी ख़बर

इसी बद बख़्त गुरौह के फ़ितनों की ख़बर ज़बाने रिसालत ने सर ज़मीने नज्द[2] में ज़ाहिर होने के मुतअ़ल्लिक़ दी है और फ़रमाया है : هُنَاکَ الزَّلَازِلُ وَالْفِتَنُ وَبِهَا يَطْلُعُ قَرْنُ الشَّيْطَان[3]
(رواہ البخاری ، مشکاۃ ،مطبوعہ مجتبائی دھلی،ص ۵۸۲)[4]

चुनान्चे, हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की पेशगोई के मुत़ाबिक़ येह फ़ितना "**नज्द**" में बड़े ज़ोरो शोर से ज़ाहिर हुवा ।

फ़ितनए ख़ारिजिय्यत और उ़-लमाए उम्मत

मुह़म्मद बिन **अ़ब्दुल वह्हाब** ख़ारिजी ने सर ज़मीने नज्द में मुसलमानों को काफ़िर व मुशरिक कह कर सब को "**मुबाहुद्दम**"[5] क़रार दिया और तौह़ीद की आड़ ले कर शाने नबुव्वत व विलायत में ख़ूब गुस्ताख़ियां कीं और अपने मज़हब व अ़क़ाइद की तरवीज के लिये "**किताबुत्तौह़ीद**" तस्नीफ़ की । जिस पर उसी ज़माने के उ़-लमाए किराम ने सख़्त मुआख़ज़ा[6] किया और इस के शर से

---

1 ......تاریخ الخلفاء،فصل فی مبایعة علی، ص۱۳۸

2 सऊ़दी अ़रब का मौजूदा शहर "**रियाज़**" 3 **तर्जमा :** वहां (नज्द में) ज़लज़ले और फ़ितने हैं और वहां से शैत़ानी गुरौह निकलेगा ।

4 بخاری،کتاب الاستسقاء،باب ما قیل فی زلازل،۱/۳۵٤ ...... مشکاۃ،کتاب المناقب،باب ذکر الیمن و الشام،۲/٤۵۹،الحدیث:٦۲۷۱

5 जिस का क़त्ल जाइज़ हो 6 सख़्ती से रद्द किया

मुसलमानों को महफ़ूज़ रखने के लिये सइये बलीग़[1] फ़रमाई हत्ता कि **मुहम्मद बिन अ़ब्दुल वह्हाब के ह़क़ीक़ी भाई ''सुलैमान बिन अ़ब्दुल वह्हाब''[2] ने अपने भाई पर सख़्त रद्द किया और उस की तरदीद में एक शानदार किताब तस्नीफ़ की जिस का नाम** ''اَلصَّوَاعِقُ الْاِلٰهِيَّةُ فِى الرَّدِّ عَلَى الْوَهَّابِيَّةُ''[3] **है और इस में वहाबिय्यत को पूरी त़रह़ बे नक़ाब कर के अहले सुन्नत के मज़हब की ज़बरदस्त ताईद व ह़िमायत फ़रमाई ।**

अ़ल्लामा शामी ह़नफ़ी,[4] इमाम अह़मद सावी मालिकी[5] वग़ैरहुमा जलीलुल क़द्र उ़-लमाए उम्मत ने **मुहम्मद बिन अ़ब्दुल वह्हाब** को बाग़ी और ख़ारिजी क़रार दिया और मुसलमानों को इस फ़ितने से महफ़ूज़ रखने के लिये अपनी जिद्दो जहद में कोई दक़ीक़ए फ़िरोगुज़ाश्त[6] न किया । (मुलाह़ज़ा फ़रमाइये शामी, जिल्द 3, बाबुल बग़ात, सफ़ह़ा 339 और तफ़्सीरे सावी जिल्द 3, सफ़ह़ा 255, मत़्बूआ़ मिस्र)[7]

हिन्द में फ़ितनए ख़ारिजिय्यत और उ़-लमाए उम्मत

फिर इसी ''**किताबुत्तौह़ीद**'' के मज़ामीन का ख़ुलासा ''**तक़्वियतुल ईमान**'' की सूरत में सर ज़मीने हिन्द में शाएअ़ हुवा और **मौलवी इस्माईल देहल्वी** ने अपने मुक़्तदा **मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल वह्हाब** की पैरवी और जा नशीनी का ख़ूब ह़क़ अदा किया और इसी **तक़्वियतुल ईमान** की तस्दीक़ व तौसीक़ तमाम **उ़-लमाए देवबन्द** ने की । जैसा कि फ़तावा रशीदिय्या, जिल्द 1, स. 20 पर मरक़ूम है ।

---

1 बहुत ज़ियादा कोशिश 2 رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه 3 **तर्जमा :** वहाबिय्या के रद्द में ख़ुदाई बिजली 4 मुतवफ़्फ़ा 1252 हि. 5 मुतवफ़्फ़ा 1241 हि. 6 कसर न छोड़ी

7 رد المحتار، كتاب الجهاد، مطلب فى اتباع عبد الوهاب الخوارج فى زماننا، ٦/٤٠٠ — تفسير الصاوى، پ ٢٢، سورة فاطر، تحت الآية ٨، ٣/٧٨، مكتبة الغوثيه

फिर जिस त़रह़ **मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल वह्हाब** के ख़िलाफ़ उस ज़माने के उ़-लमाए अहले सुन्नत ने आवाज़ उठाई और उस का रद्द किया इसी त़रह़ **मौलवी इस्माईल देहल्वी** मुसन्निफ़े तक़्वियतुल ईमान के ख़िलाफ़ भी उस दौर के उ़-लमाए ह़क़ ने शदीद एह़तिजाज किया और उन के मस्लक पर सख़्त नुक्ताचीनी की।

तक़्वियतुल ईमान उ़-लमा की नज़र में

तक़्वियतुल ईमान के रद्द में कई रिसाले शाएअ़ हुवे। मौलाना शाह फ़ज़्ले इमाम ह़ज़रत शाह अह़मद सईद देहलवी शागिर्दे रशीद मौलाना शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिसे देहलवी[1] رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ मौलाना फ़ज़्ले ह़क़ ख़ैराबादी[2] मौलाना इनायत अह़मद काकोरवी मुसन्निफ़े इ़ल्मुस्सीग़ा[3] मौलाना शाह रऊफ़ अह़मद नक़्शबन्दी मुजद्दिदी तल्मीज़े रशीद ह़ज़रते मौलाना शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिसे देहलवी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने "**मौलवी इस्माईल देहलवी**" और मसाइले "**तक़्वियतुल ईमान**" का मुख़्तलिफ़ त़रीक़ों से रद्द फ़रमाया ह़त्ता कि "शाह रफ़ीउ़द्दीन साह़िब मुह़द्दिसे देहलवी" ने अपने फ़तावा में भी "**किताबुत्तौह़ीद**" और मसाइले "**तक़्वियतुल ईमान**" के ख़िलाफ़ वाज़ेह़ और रोशन मसाइल त़हरीर फ़रमा कर उम्मते मुस्लिमा को इस फ़ित्ने से बचाने की कोशिश की। **लेकिन उ़-लमाए देवबन्द और उन के बा'ज़ असातिज़ा ने मौलवी इस्माईल देहलवी और उन की किताब तक़्वियतुल ईमान की तस्दीक़ व तौसीक़ कर के इस फ़ित्ने का दरवाज़ा मुसलमानों पर खोल दिया।** उ़-लमाए देवबन्द ने न सिर्फ़ **तक़्वियतुल ईमान** और इस के मुसन्निफ़ **मौलवी इस्माईल देहलवी** की तस्दीक़ पर इक्तिफ़ा किया बल्कि ख़ुद मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल वह्हाब की ताईद व तौसीक़ से भी दरेग़ न किया। मुलाह़ज़ा फ़रमाइये (फ़तावा रशीदिय्या जिल्द 1 सफ़ह़ा 111 मुसन्निफ़ह़ू मौलवी रशीद अह़मद साह़िब गंगोही)

---

[1] बिन शाह वलिय्युल्लाह देहलवी मुतवफ़्फ़ा 1239 हि. [2] शहीदे जंगे आज़ादी 1857 ई. [3] मुतवफ़्फ़ा 1279 हि.

सच्चा कौन ......?

लेकिन चूंकि तमाम रूए ज़मीन के अह़नाफ़ और अहले सुन्नत मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल वह्हाब के ख़ारिजी और बाग़ी होने पर मुत्तफ़िक़ थे। इस लिये फ़तावा रशीदिय्या की वोह इ़बारत जिस में मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल वह्हाब की तौसीक़ की गई थी, उ़-लमाए देवबन्द के मज़हब व मस्लक को अहले सुन्नत की नज़रों में मश्कूक क़रार देने लगी और अहले सुन्नत फ़तावा रशीदिय्या में मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल वह्हाब की तौसीक़ पढ़ कर येह समझने पर मजबूर हो गए कि उ़-लमाए देवबन्द का मज़हब भी मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल वह्हाब से तअ़ल्लुक़ रखता है। इस लिये मुतअख़्ख़िरीन उ़-लमाए देवबन्द ने अपने आप को छुपाने की ग़रज़ से मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल वह्हाब से अपनी ला तअ़ल्लुक़ी का इज़हार करना शुरूअ़ कर दिया बल्कि मजबूरन उसे ख़ारिजी भी लिख दिया[1] ताकि आ़म्मतुल मुस्लिमीन पर उन का मज़हब वाज़ेह़ न होने पाए।

लेकिन उ़-लमाए अहले सुन्नत बराबर इस फ़ितने के ख़िलाफ़ नबर्द आज़मा रहे।[2] इन उ़-लमाए ह़क़ में मज़कूरैने सद्र[3] ह़ज़रात के इ़लावा "ह़ज़रते ह़ाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की", ह़ज़रते मौलाना अ़ब्दुस्समीअ़ साह़िब रामपूरी मुअल्लिफ़ अन्वारे सात़िआ़, ह़ज़रते मौलाना इरशाद हुसैन साह़िब रामपूरी, ह़ज़रते मौलाना अह़मद रज़ा ख़ां साह़िब बरेलवी, ह़ज़रते मौलाना अन्वारुल्लाह साह़िब ह़ैदराबादी, ह़ज़रते मौलाना अ़ब्दुल क़दीर साह़िब बदायूनी वग़ैरहुम[4] ख़ास त़ौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं।

इन उ़-लमाए अहले सुन्नत का उम्मते मुस्लिमा पर अह़साने अ़ज़ीम है कि इन ह़ज़रात ने ह़क़ व बात़िल में तमीज़ की और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने अक़्दस में तौहीन करने वाले ख़वारिज से मुसलमानों को आगाह किया। **उन लोगों के साथ हमारा उसूली इख़्तिलाफ़[5] सिर्फ़ उन इ़बारात की वजह से है**

---

1 अल मुहन्नद, स 19-20 2 मुक़ाबला करते रहे 3 वोह उ़-लमाए अहले सुन्नत जिन का अभी ज़िक्र हुवा 4 رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن 5 बुन्यादी इख़्तिलाफ़

जिन में उन लोगों ने अल्लाह तआला और रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم व महबूबाने हक़ سبحانہ وتعالیٰ की शान में सरीह[1] गुस्ताखि़यां की हैं । बाक़ी मसाइल में महज़ फ़रोई इख़्तिलाफ़[2] है जिस की बिना पर जानिबैन[3] में से किसी की तक्फ़ीर व तज़लील[4] नहीं की जा सकती ।

तअज्जुब है कि सरीह तौहीन आमेज़ इबारात लिखने के बा वुजूद येह कहा जाता है कि हम ने तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'रीफ़ की है । गोया तौहीने सरीह को ता'रीफ़ कह कर कुफ़्र को इस्लाम क़रार दिया जाता है । हम ने इस रिसाले में उ़-लमाए देवबन्द और उन के मुक़्तदाओं की इबारात बिला कमी व बेशी नक़्ल कर दी हैं ताकि मुसलमान खुद फ़ैसला कर लें कि इन में तौहीन है या नहीं...? उम्मीद है नाज़िरीने किराम ह़क़ व बातिल में तमीज़ कर के हमें दुआए ख़ैर से फ़रामोश न फ़रमाएंगे ।

सबबे तालीफ़

इस में शक नहीं कि इस मौज़ूअ पर इस से पहले बहुत कुछ लिखा जा चुका है लेकिन बा'ज़ किताबें इतनी त़वील हैं कि इन्हें अव्वल से आखि़र तक पढ़ना हर एक के लिये आसान नहीं और बा'ज़ इतनी मुख़्तसर हैं कि उ़-लमाए देवबन्द की अस्ल इबारात के बजाए उन के मुख़्तसर खुलासों पर इक्तिफ़ा कर लिया गया । जिस की वजह से भी बा'ज़ लोग शुकूक व शुब्हात में मुब्तला होने लगे । इस लिये ज़रूरी मा'लूम हुवा कि इस मौज़ूअ पर ऐसा रिसाला लिखा जाए जो इस तत़वील व इख़्तिसार[5] से पाक हो ।

---

(1) वाज़ेह (2) जैसे फ़िक़्हए ह़नफ़ी, शाफ़ेई वग़ैरा का बाहमी इख़्तिलाफ़ है । (3) दोनों त़रफ़ से (4) ला'न त़ा'न करना या काफ़िर कहना (5) न बहुत ज़ियादा त़वील न बहुत ज़ियादा मुख़्तसर

जरूरी गुज़ारिश

अभी गुज़ारिश की जा चुकी है कि देवबन्दी हज़रात और अहले सुन्नत के दरमियान बुन्यादी इख़्तिलाफ़ का मूजिब उ़-लमाए देवबन्द की सिर्फ़ वोह इ़बारात हैं जिन में अल्लाह तआ़ला और नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने अक्दस में खुली तौहीन की गई है। उ़-लमाए देवबन्द कहते हैं कि इन इ़बारात में तौहीन व तन्क़ीस का शाइबा तक नहीं पाया जाता और उ़-लमाए अहले सुन्नत का फ़ैसला येह है कि इन में साफ़ तौहीन पाई जाती है।

इस रिसाले में उ़-लमाए देवबन्द की वोह अस्ल इ़बारात बि लफ़्ज़िहा मअ़ ह़वाला कुतुब व सफ़्ह़ा व मत़बअ़[1] पूरी एह़तियात़ के साथ नक़्ल कर दी गई हैं अपनी त़रफ़ से इन में किसी क़िस्म की बह़्स व तमहीस नहीं की गई।

अलबत्ता इन मुख़्तलिफ़ इ़बारात पर मुतअ़द्दिद उ़नवानात मह़्ज़ सहूलते नाज़िरीन और तनव्वुअ़ फ़िल कलाम[2] की ग़रज़ से क़ाइम कर दिये गए हैं और फ़ैसला नाज़िरीने किराम पर छोड़ दिया गया है कि बिला तशरीह़ इन इ़बारात को पढ़ कर इन्साफ़ करें कि इन इ़बारतों में अल्लाह तआ़ला और उस के रसूलों की तौहीन व तन्क़ीस है या नहीं?

इस के साथ ही हर उ़नवान और इ़बारत के तह़्त अपना मस्लक भी वाज़ेह़ कर दिया गया है ताकि नाज़िरीने किराम को उ़-लमाए देवबन्द और अहले सुन्नत के मस्लक का तफ़्सीली इ़ल्म हो जाए और ह़क़ व बात़िल में किसी क़िस्म का इल्तिबास बाक़ी न रहे।

---

1 उ़-लमाए देवबन्द की इ़बारात के अस्ल अल्फ़ाज़, किताब का नाम, सफ़्ह़ा नम्बर और छापने वाले मक्तबे का नाम, सब बहुत एह़तियात़ से लिखा गया है। 2 कलाम को मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में लाना

क़ुरआने करीम और ता'ज़ीमे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

इस ह़क़ीक़त से इन्कार नहीं हो सकता कि तमाम दीन हमें हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते अक़्दस से मिला है ह़त्ता कि **अल्लाह** तआ़ला की ज़ात व सिफ़ात, उस के मलाइका, उस की किताबों और रसूलों और यौमे क़ियामत वग़ैरा अ़क़ाइदो आ'माल सब चीज़ों का इल्म रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम को अ़ता फ़रमाया। इस लिये सारे दीन की बुन्याद और अस्लुल उसूल[1] नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुक़द्दसा है और बस....बिनाबरीं रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़ैसिय्यत ऐसी अ़ज़ीम है जिस के वज़्न को मोमिन का दिलो दिमाग़ मह़सूस करता है। मगर कमाह़क़्क़ुहु[2] इस का इज़्हार किसी सूरत से मुमकिन नहीं।

ऐसी सूरत में ता'ज़ीमे रसूल की अहम्मिय्यत किसी मुसलमान से मख़्फ़ी नहीं रह सकती। इसी लिये अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआने करीम में निहायत एहतिमाम के साथ मुसलमानों को बारगाहे रिसालत के आदाब की ता'लीम फ़रमाई।

पहली आयते मुबारका

इरशाद होता है :

﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ﴾ (پ٢٦، الحجرات، الآية ٢)

(ऐ ईमान वालो ! बुलन्द न करो अपनी आवाज़ें नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आवाज़ पर और न इन के साथ बहुत ज़ोर से बात करो जैसे तुम एक दूसरे से आपस में ज़ोर से बोला करते हो कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारा किया कराया सब अकारत जाए और तुम्हें ख़बर भी न हो।)

---

1 ख़ुलासा, लुब्बे लुबाब 2 जैसा उस का ह़क़ है।

दूसरी आयते मुबारका

इस के साथ ही दूसरी आयत में इरशाद होता है :

﴿ اِنَّ الَّذِیۡنَ یَغُضُّوۡنَ اَصۡوَاتَہُمۡ عِنۡدَ رَسُوۡلِ اللّٰہِ اُولٰٓئِکَ الَّذِیۡنَ امۡتَحَنَ اللّٰہُ قُلُوۡبَہُمۡ لِلتَّقۡوٰی لَہُمۡ مَّغۡفِرَۃٌ وَّ اَجۡرٌ عَظِیۡمٌ ﴾(1)

(बेशक जो लोग अपनी आवाज़ें पस्त करते हैं रसूलुल्लाह के नज़दीक वोह ऐसे लोग हैं जिन के दिल को **अल्लाह** तआ़ला ने परहेज़गारी के लिये परख लिया है। उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है।)

तीसरी आयते मुबारका

और तीसरी आयत में इरशाद फ़रमाया :

﴿اِنَّ الَّذِیۡنَ یُنَادُوۡنَکَ مِنۡ وَّرَآءِ الۡحُجُرٰتِ اَکۡثَرُہُمۡ لَا یَعۡقِلُوۡنَ وَلَوۡ اَنَّہُمۡ صَبَرُوۡا حَتّٰی تَخۡرُجَ اِلَیۡہِمۡ لَکَانَ خَیۡرًا لَّہُمۡ وَاللّٰہُ غَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ﴾(2)

(ऐ नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बेशक जो लोग आप को आप के रहने के हुजरों से बाहर पुकारते हैं इन में अकसर बे अ़क़्ल हैं अगर येह लोग इतना सब्र करते कि आप ख़ुद हुजरों से निकल कर इन की त़रफ़ तशरीफ़ ले आते तो इन के ह़क़ में बहुत बेहतर होता और **अल्लाह** तआ़ला बख़्शने वाला मेहरबान है।)

चौथी आयते मुबारका

चौथी जगह इरशाद फ़रमाया :

﴿ یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَقُوۡلُوۡا رَاعِنَا وَقُوۡلُوا انۡظُرۡنَا وَاسۡمَعُوۡا وَ لِلۡکٰفِرِیۡنَ عَذَابٌ اَلِیۡمٌ﴾(3)(پ ۱ ،بقرۃ)

---

1 ...پ۲۶ ،سورۃ الحجرات،الآیۃ ۳

2 ...پ۲۶ ،سورۃ الحجرات،الآیۃ ۴،۵

3 ...پ۱ ،سورۃ البقرۃ،الآیۃ ۱۰۴

(ऐ ईमान वालो ! तुम नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ رَاعِنَا कह कर ख़िताब न किया करो बल्कि اُنْظُرْنَا कहा करो और ध्यान लगा कर सुनते रहा करो और काफ़िरों के लिये अ़ज़ाबे दर्दनाक है)

इन आयाते त़य्यिबात में बारगाहे रिसालत के आदाब और त़र्ज़े तख़ात़ुब में ता'ज़ीम व तौक़ीर को मल्ह़ूज़ रखने की जो हिदायात अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाई हैं, मोह़ताजे तशरीह़ नहीं। नीज़ इन की रोशनी में शाने नबुव्वत की अदना गुस्ताख़ी का जुर्मे अ़ज़ीम होना आफ़्ताब से ज़ियादा रोशन है। इस के बा'द इस मस्अले को उ़-लमाए उम्मत की तस्रीह़ात में मुलाह़ज़ा फ़रमाइये।

तमाम उ़-लमाए उम्मत के नज़दीक रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने अक़्दस में तौहीन कुफ़्र है

शर्हे शिफ़ा क़ाज़ी इयाज़[1] लिमुल्ला अ़लिल क़ारी[2] जि. 2 स. 393 पर है :

"قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ سَحْنُوْن اَجْمَعَ الْعُلَمَاءُ عَلٰی اَنَّ شَاتِمَ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ سَلَّمَ وَالْمُسْتَنْقِصَ لَهٗ کَافِرٌ وَمَنْ شَکَّ فِیْ کُفْرِهٖ وَ عَذَابِهٖ کَفَرَ۔"[3]

(اِکْفَارُ الْمُلْحِدِیْن، مؤلفہ مولوی انور شاہ صاحب کشمیری دیوبندی، صفحہ ۵۱)

"मुह़म्मद बिन सह़नून फ़रमाते हैं कि तमाम उ़-लमाए उम्मत का इस बात पर इजमाअ़ है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने अक़्दस में तौहीन व तन्क़ीस करने वाला काफ़िर है और जो शख़्स इस के कुफ़्र व अ़ज़ाब में शक करे वोह भी काफ़िर है।"

---

1 मुतवफ़्फ़ा 544 हि. 2 मुतवफ़्फ़ा 1014 हि.

3 ......الشفا للقاضی عیاض، الباب الاول فی سبه، حصه ۲/ ۲۱۵، مرکز اهلسنت برکات رضا

एक शुबे का इज़ाला

इस मक़ाम पर शुबा वारिद किया जाता है कि अगर किसी मुसलमान के कलाम में निनानवे99 वजह कुफ़्र की हों और एक वजह इस्लाम की हो तो फ़ुक़हा का क़ौल है कि कुफ़्र का फ़तवा नहीं दिया जाएगा। **इस का इज़ाला येह है कि क़ौल इस तक़्दीर पर है कि किसी मुसलमान के कलाम में निनानवे99 वुजूहे कुफ़्र का सिर्फ़ एहतिमाल हो कुफ़्रे सरीह़[1] न हो लेकिन जो कलाम मफ़्हूमे तौहीन में सरीह़ हो उस में किसी वजह को मलहूज़ रख कर तावील करना जाइज़ नहीं इस लिये कि लफ़्ज़े सरीह़ में तावील नहीं हो सकती।**

देखिये "**इक्फ़ारुल मुल्ह़िदीन**" के स.72 पर उ़-लमाए देवबन्द के मुक़्तदा मौलवी अन्वर शाह साहि़ब कश्मीरी लिखते हैं :

"قَالَ حَبِيْبُ بْنُ رَبِيْعٍ اِنَّ ادِّعَاءَ التَّاوِيْلِ فِيْ لَفْظٍ صُرَاحٍ لَا يُقْبَلُ"[2]

ह़बीब इब्ने रबीअ़ ने फ़रमाया कि लफ़्ज़े सरीह़ में तावील का दा'वा क़बूल नहीं किया जाता और अगर बा वुजूदे सराह़त[3] तावील की गई तो वोह तावील फ़ासिद होगी और तावीले फ़ासिद खुद ब मन्ज़ला कुफ़्र[4] है।

मुलाह़ज़ा फ़रमाइये येही मौलवी अन्वर शाह साहि़ब देवबन्दी "**इक्फ़ारुल मुल्ह़िदीन**" के सफ़ह़ा 62 पर लिखते हैं।

اَلتَّاوِيْلُ الْفَاسِدُ كَالْكُفْرِ तावीले फ़ासिद कुफ़्र की त़रह़ है।

---

1 वाज़ेह़ कुफ़्र न हो

2 ......الشفا للقاضی عیاض، الباب الاول فی سبه، حصه ۲، ۲۱۷، مرکز اهلسنت برکات رضا

3 वाज़ेह़ कुफ़्रिया कलिमा होने के बा वुजूद

4 सरीह़ कलिमए कुफ़्रिया को सह़ीह़ साबित करने के लिये तावील करना खुद कुफ़्र के दरजे में है।

एक और ए'तिराज़ का जवाब

ह़दीस शरीफ़ में आया है । إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ[1] या'नी अ़मलों का दारो मदार **निय्यतों** पर है । लिहाज़ा उ़-लमाए देवबन्द की इ़बारतों में अगर्चे कलिमाते तौहीन पाए जाते हैं मगर उन की निय्यत तौहीन और तन्क़ीस की नहीं । इस लिये उन पर हुक्मे कुफ़्र आ़इद नहीं हो सकता ।

इस के जवाब में गुज़ारिश है कि ह़दीस का मफ़ाद सिर्फ़ इतना है कि किसी नेक अ़मल का सवाब निय्यते सवाब के बिग़ैर नहीं मिलता । येह मत़लब नहीं कि हर अ़मल में निय्यत मो'तबर है । अगर ऐसा हो तो कुफ़्र व इल्ह़ाद और तौहीन व तन्क़ीसे नबुव्वत का दरवाज़ा खुल जाएगा । **हर दरीदा दहन[2] बे बाक जो चाहेगा कहता फिरेगा, जब गिरिफ़्त होगी तो साफ़ कह देगा कि मेरी निय्यत तौहीन की न थी, वाज़ेह़ रहे कि लफ़्ज़े सरीह़ में जैसे तावील नहीं हो सकती ऐसे ही निय्यत का उ़ज़्र भी इस में क़ाबिले क़बूल नहीं होता ।**

इक्फ़ारुल मुल्ह़िदीन, सफ़ह़ा 73 पर मौलवी अन्वर शाह साह़िब कश्मीरी देवबन्दी लिखते हैं ।

"اَلْمَدَارُ فِي الْحُكْمِ بِالْكُفْرِ عَلَى الظَّوَاهِرِ وَلَا نَظَرَ لِلْمَقْصُوْدِ وَ النِّيَّاتِ وَلَا نَظَرَ لِقَرَائِنِ حَالِهٖ"

(कुफ़्र के हुक्म का दारो मदार ज़ाहिर पर है । क़स्द व निय्यत और क़राइने ह़ाल पर नहीं ।)[3] नीज़ इसी "**इक्फ़ारुल मुल्ह़िदीन**" के सफ़ह़ा 86 पर है ।

"وَقَدْ ذَكَرَ الْعُلَمَاءُ اَنَّ التَّهَوُّرَ فِي عِرْضِ الْاَنْبِيَاءِ وَ اِنْ لَّمْ يَقْصِدِ السَّبَّ كُفْرٌ"

(उ़-लमा ने फ़रमाया है कि अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शान में जुरअत व दिलेरी कुफ़्र है अगर्चे तौहीन मक़्सूद न हो ।)

---

1 ...... صحيح البخاري، كتاب بدء الوحي، باب كيف كان بدء الوحي الى رسول الله، ١/ ٥، الحديث: ١

2 बद ज़बान 3 या'नी कुफ़्र का हुक्म लगाते वक़्त ज़ाहिरी अल्फ़ाज़ व अफ़्आ़ल का ए'तिबार होता है, अगर वोह वाज़ेह़ कुफ़्र पर मबनी हुवे तो अब हुक्मे कुफ़्र लगाएंगे अगर्चे कहने वाला निय्यत व इरादा अच्छा होना बयान करे ।

तौहीन का तअ़ल्लुक़ उ़र्फ़े आ़म और मुह़ावरात अहले ज़बान से होता है

बा'ज़ लोग कलिमाते तौहीन के मा'ना में क़िस्म क़िस्म की तावीलें करते हैं लेकिन येह नहीं समझते कि अगर किसी तावील से मा'ना मुस्तक़ीम[1] भी हो जाएं और इस के बा वुजूद उ़र्फ़ आ़म व मुह़ावरात अहले ज़बान[2] में उस कलिमे से तौहीन के मा'ना मफ़्हूम होते हों तो वोह सब तावीलात बेकार होंगी। मसलन एक शख़्स अपने वालिद या उस्ताद को कहता है आप बड़े **''वलदुल ह़राम''** हैं और तावील येह करता है कि लफ़्ज़े ह़राम के मा'ना फ़े'ले ह़राम नहीं बल्कि मोह़तरम के हैं जैसे **''अल मस्जिदुल ह़राम''** और **''बैतुल्लाहिल ह़राम''** लिहाज़ा वलदुल ह़राम से मुराद वलदे मोह़तरम है और मा'ना येह है कि आप बड़े मोह़तरम हैं तो यक़ीनन कोई अहले इन्साफ़ किसी बुज़ुर्ग के ह़क़ में इस तावील की रू से लफ़्ज़े **वलदुल ह़राम** बोलने को क़त्अ़न जाइज़ नहीं कहेगा और इन कलिमात को बर बिनाए उ़र्फ़ व मुह़ावराते अहले ज़बान कलिमाते तौहीन ही क़रार देगा।

लिहाज़ा हम नाज़िरीने किराम से दरख़्वास्त करेंगे कि वोह उ़-लमाए देवबन्द की तौहीन आमेज़ इ़बारात[3] पढ़ते वक़्त इस उसूल को पेशे नज़र रखते हुवे येह देखें कि उ़र्फ़ व मुह़ावरात के ए'तिबार से इस इ़बारत में तौहीन है या नहीं।

---

1. मा'ना दुरुस्त 2. लोगों के सोचने समझने या बोल चाल में
3. जो इसी किताब में मअ़ ह़वाला अगले सफ़्ह़ात में तह़रीर की जाएंगी

तौहीने रसूलुल्लाह صلى الله تعالى عليه واله وسلم में क़ाइल की निय्यत का ए'तिबार नहीं होता

नाज़िरीने किराम की ख़िदमत में गुज़ारिश है कि वोह तौहीनी इबारात पढ़ते हुवे येह ख़याल भी दिल में न लाएं कि क़ाइल की निय्यत तौहीन की है या नहीं ?

इस लिये कि रसूलुल्लाह صلى الله تعالى عليه واله وسلم की शान में तौहीन आमेज़ अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त निय्यत का ए'तिबार नहीं होता और कलिमए तौहीन बहर सूरत तौहीन ही क़रार पाता है बशर्त़ येह कि क़ाइल को येह इल्म हो जाए कि येह कलिमा कलिमए तौहीन है या येह कलिमए तौहीन का सबब हो सकता है तो ऐसी सूरत में बिग़ैर निय्यते तौहीन के भी इस कलिमे का बोलना यक़ीनन मूजिबे तौहीन होगा ।

"राइना" कहने से मुमानअ़त

देखिये सहाबए किराम عليهم الرضوان रसूलुल्लाह صلى الله تعالى عليه واله وسلم को ब निय्यते ता'ज़ीम "**राइना**" कह कर ख़िताब किया करते थे लेकिन यहूदी चूंकि इस कलिमे को हुज़ूर के हक़ में ब निय्यते तौहीन इस्ति'माल करते थे या अदना तसर्रुफ़ से इस को कलिमए तौहीन बना लेते थे । इस लिये **अल्लाह** तआ़ला ने सहाबए किराम को "**राइना**" कहने से मन्अ़ कर दिया[1] और इस हुक्म के बा'द इस कलिमे का हुज़ूर के हक़ में बोलना तौहीन और मूजिबे अ़ज़ाबे अलीम क़रार दे दिया । मा'लूम हुवा कि अबनाए ज़माना[2] की रकीक[3] तावीलों से साख़ते नबुव्वत बहुत बुलन्दो बाला है और मुअव्विलीन[4] की मन घड़त तावीलात उन को तौहीन के जुर्मे अ़ज़ीम से बचा नहीं सकतीं । जैसा कि हम इस से पहले मौलवी अनवर शाह कश्मीरी देवबन्दी की

---

1 ऐ ईमान वालो ! राइना न कहो और यूं अ़र्ज़ करो कि हुज़ूर हम पर नज़र रखें और पहले ही से बग़ौर सुनो और काफ़िरों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है (البقرة:١٠٤) 2 या'नी उ़-लमाए देवबन्द 3 घटया 4 तावील करने वालों (उ़-लमाए देवबन्द)

तसरीह़ात इसी ए'तिराज़ के जवाब में नक़्ल कर चुके हैं।[1]

तौहीन का दारो मदार वाक़ेइय्यत पर नहीं होता

बा'ज़ लोग तौहीन को वाक़ेइय्यत पर मौक़ूफ़ समझते हैं[2] ह़ालांकि तौहीन व तन्क़ीस का तअ़ल्लुक़ अल्फ़ाज़ व इ़बारात से होता है। बसा अवक़ात किसी वाक़िए को इजमाल के साथ कहना मूजिबे तौहीन नहीं होता लेकिन इसी अम्रे वाक़िआ़ में बा'ज़ तफ़्सीलात का आ जाना तौहीन का सबब हो जाता है अगर्चे इन तफ़्सीलात का बयान वाक़िए के मुत़ाबिक़ भी क्यूं न हो। मुलाह़ज़ा फ़रमाइये शर्हे फ़िक़्हे अक्बर मत़्बूआ़ मुजतबाई, सफ़्ह़ा **64**, बारे सिवुम **1907** ई. में है।

"आ़लम में कोई शै ऐसी नहीं जिस के साथ इरादए इलाहिय्या मुतअ़ल्लिक़ न हो और इस बिना पर अगर येह कह दिया जाए कि तमाम काइनात **अल्लाह** तआ़ला की मुराद (या'नी इरादा की हुई) है तो इस में कोई तौहीन नहीं लेकिन अगर इसी वाक़िए को इस तफ़्सील से कहा जाए कि ज़ुल्म, चोरी, शराब ख़ोरी **अल्लाह** तआ़ला की मुराद है तो अगर्चे येह कलाम वाक़िए के मुत़ाबिक़ है लेकिन ज़ुल्म, फ़िस्क़ वग़ैरा की तफ़्सीलात आ जाने के बाइ़स ख़िलाफ़े अदब और तौहीन आमेज़ होगा इसी त़रह़ ब दलीले आयए क़ुरआनिय्या اَللّٰہُ خَالِقُ کُلِّ شَیْءٍ येह कहना बिल्कुल जाइज़ है कि **अल्लाह** तआ़ला हर शै का ख़ालिक़ है लेकिन اَللّٰہُ خَالِقُ الْقَاذُوْرَاتِ وَغَیْرِھَا (**अल्लाह** गन्दगियों और दूसरी बुरी चीज़ों को पैदा करने वाला है) कहना जाइज़ नहीं कि ज़लील और रज़ील अश्या की तफ़्सील ईहामे कुफ़्र[3] की वजह से यक़ीनन मूजिबे तौहीन है।" (मुलख़्ख़सन)[4]

---

1. मुलाह़ज़ा फ़रमाइये सफ़्ह़ा **15** ता **17**
2. या'नी वोह लोग येह समझते हैं कि बयान कर्दा शै अगर ह़क़ीक़त में मौजूद है तो इस के बयान करने में कोई तौहीन नहीं जैसे "**अल्लाह तआ़ला सुवर का ख़ालिक़ है**"
3. कुफ़्र का शुबा डालने की वजह से
4. ......شرح فقہ الاکبر،ص ۱٤۱،دار البشائر الاسلامیہ،مفھوماً

मुल्ला अ़ली क़ारी رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ के इस बयान की रोशनी में हमारे नाज़िरीने किराम पर मौलवी अशरफ़ अ़ली साहि़ब थानवी की इ़बारते हि़फ़्ज़ुल ईमान[1] का तौहीन आमेज़ होना ब ख़ूबी वाज़ेह़ हो गया होगा और थानवी साहि़ब ने अपनी इ़बारत की ताईद के लिये शर्हे मवाक़िफ़ की इ़बारत से इस्तिदलाल किया है, इस का बे सूद होना भी अहले इ़ल्म ने अच्छी त़रह़ समझ लिया होगा। जिस का ख़ुलासा येह है कि अगर बिलफ़र्ज़ येह तस्लीम भी कर लिया जाए कि बा'ज़ इ़ल्मे ग़ैब हैवानात, बहाइम और पागलों को होता है तब भी मौलवी अशरफ़ अ़ली साहि़ब थानवी की त़रह़ येह कहना कि अगर हु़ज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم के लिये बा'ज़ इ़ल्मे ग़ैब माना जाए तो ऐसा इ़ल्मे ग़ैब तो ज़ैद व अ़म्र बल्कि हर सबी[2] व मजनून[3] बल्कि जमीअ़ हैवानात व बहाइम[4] के लिये भी ह़ासिल है, यक़ीनन हु़ज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم के ह़क़ में मूजिबे तौहीन होगा।

क्यूंकि इस इ़बारत में बच्चों, पागलों, हैवानात और बहाइम के अल्फ़ाज़ ऐसे हैं जिन की तसरीह़ हर अहले फ़हम के नज़दीक इस कलाम में ऐसी सरीह़ तौहीन पैदा कर रही है जिस का इन्कार बजुज़ मुआ़निद मुतअस्सिफ़[5] के कोई शख़्स नहीं कर सकता। ब ख़िलाफ़ इ़बारते शर्हे मुवाक़िफ़ के कि इस में बच्चों, पागलों, जानवरों और हैवानों की क़तअ़न कोई तफ़्सील मज़कूर नहीं और ह़क़ीक़त येह है कि

---

[1] "फिर येह कि आप की ज़ाते मुक़द्दसा पर इ़ल्मे ग़ैब का हु़क्म किया जाना अगर ब क़ौले ज़ैद सह़ीह़ हो तो दरयाफ़्त त़लब येह अम्र है कि इस ग़ैब से मुराद बा'ज़ ग़ैब है या कुल ग़ैब, अगर बा'ज़ उ़लूमे ग़ैबिय्या मुराद हैं तो इस में हु़ज़ूर ही की क्या तख़्सीस है। ऐसा इ़ल्मे ग़ैब तो ज़ैद व अ़म्र बल्कि हर सबी व मजनून बल्कि जमीअ़ हैवानात व बहाइम के लिये भी ह़ासिल है।".....अस्ल किताब की इ़बारत बाब "**अ़क्सी इ़बारात**" में मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

[2] बच्चा [3] पागल [4] चोपाए [5] इ़नाद रखने वाले रन्जीदा शख़्स के

ऊ़-लमाए देवबन्द की अक्सर इ़बारात इसी नौइ़य्यत की हैं कि इन में कहीं चोहड़े चमार(1) की तफ़्सील मज़्कूर है, कहीं शैत़ाने लईन की।(2) इस लिये हमारे मन्क़ूला बाला बयान की रोशनी में ऊ़-लमाए देवबन्द की ऐसी तमाम इ़बारात का तौहीन आमेज़ होना रोज़े रोशन की त़रह़ ज़ाहिर है और इन में जो तावीलात की जाती हैं इन सब का लग़्व व बेकार होना अज़्हर मिनश्शम्स(3) है।

ऊ़-लमाए अहले सुन्नत पर तक्फ़ीर के इल्ज़ाम का जवाब

ऊ़-लमाए अहले सुन्नत पर येह इल्ज़ाम लगाया जाता है कि इन्हों ने ऊ़-लमाए देवबन्द को काफ़िर कहा। राफ़िज़ियों, नेचरियों, वहाबियों, बहायों ह़त्ता कि नदवियों, कोंग्रेसियों, लैगियों बल्कि तमाम मुसलमानों को काफ़िर क़रार दिया। गोया बरेली में कुफ़्र की मशीन लगी हुई है जिस के निशाने से कोई मुसलमान नहीं बच सका। इस के जवाब में बजुज़ इस के क्या कहा जाए कि (4) سُبْحَانَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيمٌ

सो किसी **मुसलमान** को **काफ़िर** कहना **मुसलमान** की शान नहीं।

हमारा अ़क़ीदा है कि मुसलमान को काफ़िर कहने का वबाल काफ़िर कहने वाले पर आ़इद होता है। मैं पूरे वुसूक़ से कह सकता हूं कि ऊ़-लमाए बरेली या इन के हम ख़याल किसी आ़लिम ने आज तक किसी मुसलमान को काफ़िर नहीं कहा।

---

(1) तक़्वियतुल ईमान के स. **8** पर तह़रीर है : "और येह यक़ीन जान लेना चाहिये कि हर मख़्लूक़ बड़ा हो या छोटा **अल्लाह** की शान के आगे चमार से भी ज़लील है।" (2) बराहिने क़ाति़आ सफ़ह़ा **51** पर है : "अल ह़ासिल ग़ौर करना चाहिये कि शैत़ान व मलकुल मौत का ह़ाल देख कर इल्मे मुह़ीत़ ज़मीन का फ़ख़्रे आ़लम को ख़िलाफ़ नुसूसे क़त़इय्या के बिला दलील मह़्ज़ क़ियासे फ़ासिदा से साबित करना शिर्क नहीं तो कौन सा ईमान का ह़िस्सा है शैत़ान व मलकुल मौत को येह वुस्अ़त नस्स से साबित हुई, फ़ख़्रे आ़लम की वुस्अ़ते इ़ल्म की कौन सी नस्से क़त़ई है जिस से तमाम नुसूस को रद्द कर... अस्ल किताब की इबारात बाब "**अक्सी इबारात**" में मुलाह़ज़ा फ़रमाएं। (3) सूरज से ज़ियादा रोशन है। (4) इलाही पाकी है तुझे येह बहुत बड़ा बोहतान है।

आ'ला हज़रत और तक्फ़ीरे मुस्लिमीन

ख़ुसूसन आ'ला हज़रत मौलाना अह़मद रज़ा ख़ां साहिब बरेलवी رحمۃ اللہ تعالی علیہ तो मस्लए तक्फ़ीर[1] में इस क़दर मोह़तात वाक़ेअ़ हुवे थे कि इमामुत्ताइफ़ा मौलवी इस्माईल साहिब देहलवी के ब कसरत अक़्वाले कुफ़्रिया नक़्ल करने के बा वुजूद लुज़ूम व इल्तिज़ामे कुफ़्र[2] के फ़र्क़ को मल्हूज़ रखने या इमामुत्ताइफ़ा

---

(1) कुफ़्र का फ़तवा लगाने में (2) **लुज़ूमे कुफ़्र** के मा'ना हैं : "कुफ़्र का लाज़िम होना" और **इल्तिज़ामे कुफ़्र** के मा'ना हैं : "कुफ़्र को अपने ऊपर लाज़िम करना।" बा'ज़ अवक़ात एक कलाम कुफ़्र को लाज़िम होता है मगर क़ाइल को इस का इ़ल्म नहीं होता। येह लुज़ूमे कुफ़्र है या'नी क़ाइल को काफ़िर न कहेंगे मगर जब उसे बता दिया जाए कि तेरे इस कलाम को कुफ़्र लाज़िम है और वोह इस के बा वुजूद भी इस पर अड़ा रहे और अपने कलाम में **लुज़ूमे कुफ़्र** के पाए जाने पर ख़बरदार होने के बा वुजूद भी इस से रुजूअ़ न करे तो **इल्तिज़ामे कुफ़्र** होगा या'नी अब क़ाइल पर कुफ़्र का हुक्म लगेगा। मिसाल के त़ौर पर तक़्वियतुल ईमान की वोह इ़बारत सामने रख लीजिये जिस में मौलवी इस्माईल साहिब देहलवी ने हर छोटी बड़ी मख़्लूक़ को अल्लाह की शान के आगे चोहडे चमार से ज़ियादा ज़लील कहा है। ज़ाहिर है कि छोटी मख़्लूक़ से आ़म मख़्लूक़ और बड़ी मख़्लूक़ से ख़ास मख़्लूक़ अम्बिया व मलाइकए मुक़र्रबीन, मह़बूबाने बारगाहे ईज़दी के मा'ना बिला तअम्मुल समझ में आते हैं और तमाम बड़ी मख़्लूक़ का चोहडे़ चमार से ज़ियादा ज़लील होना लाज़िम आता है। अम्बियाए किराम علیہم الصلوۃ والسلام को इस त़रह़ कहना कुफ़्रे सरीह़ है लेकिन अगर हम हुस्ने ज़न से काम ले कर येह समझ लें कि इमामुत्ताइफ़ा इस्माईल देहलवी साहिब इस से बे ख़बर थे तो येह लुज़ूमे कुफ़्र होगा और जब इन्हें ख़बरदार कर दिया जाए कि तुम्हारा येह कलाम कुफ़्र पर मुश्तमिल है मगर वोह इस के बा वुजूद भी अपने इस क़ौल से रुजूअ़ न करें तो येह इल्तिज़ामे कुफ़्र होगा। इमामुत्ताइफ़ा के मुतअ़ल्लिक़ तो थोड़ी देर के लिये हम येह तस्लीम भी कर सकते हैं कि वोह इस लुज़ूमे कुफ़्र से ग़ाफ़िल थे और उन्हें किसी ने मुतनब्बेह भी नहीं किया। इस लिये येह लुज़ूमे इल्तिज़ाम की ह़द तक नहीं पहुंचा लेकिन उन के पैरूकार व मो'तक़िदीन बार बार तम्बीह किये जाने के बा वुजूद भी इस इ़बारत को सह़ीह़ क़रार देते हैं। इन के ह़क़ में कैसे कहा जाए कि वोह इल्तिज़ामे कुफ़्र से बरी हैं।

की तौबा मशहूर होने के बाइस अज़ राहे एह़तियात़ मौलवी इस्माईल देहलवी साह़िब की तक्फ़ीर से कफ़्फ़े लिसान[1] **फ़रमाया। अगर्चे वोह शोहरत इस वजह की न थी कि कफ़्फ़े लिसान का मूजिब हो सके लेकिन आ'ला ह़ज़रत ने एह़तियात़ का दामन हाथ से न छोड़ा।** मुलाह़ज़ा फ़रमाइये : (अल कौकबतुश्शिहाबियह, मत़बूआ़ अहले सुन्नत व जमाअ़त बरेली सफ़ह़ा 62)[2]

हैरत है ऐसे मोह़तात़ आ़लिमे दीन पर तक्फ़ीरे मुस्लिमीन का इल्ज़ाम आ़इद किया जाता है। بسوخت عقل ز حیرت کہ ایں چہ بوالعجبی است[3]

तक्फ़ीर का इल्ज़ाम देने की वजह

दर अस्ल इस प्रोपगन्डे का पस मन्ज़र येह है कि जिन लोगों ने बारगाहे नबुव्वत में सरीह़ गुस्ताख़ियां कीं उन्हों ने अपनी सियाह कारियों पर निक़ाब डालने के लिये आ'ला ह़ज़रत और इन के हम ख़याल उ़-लमा को तक्फ़ीरे मुस्लिमीन का मुजरिम क़रार दे कर बदनाम करना शुरूअ़ कर दिया ताकि अ़वाम की तवज्जोह हमारी गुस्ताख़ियों से हट कर **आ'ला ह़ज़रत** की तक्फ़ीर की त़रफ़ मबज़ूल हो जाए और हमारे मक़ासिद की राह में कोई चीज़ ह़ाइल न होने पाए लेकिन बा ख़बर लोग पहले भी ख़बरदार थे और अब भी वोह इस ह़क़ीक़त से बे ख़बर नहीं।

हमारा मस्लक

मस्लए तक्फ़ीर में हमारा मस्लक[4] हमेशा से येही रहा है कि जो शख़्स भी कलिमए कुफ़्र बोल कर अपने क़ौल या फ़े'ल से

---

(1) कुफ़्र का फ़तवा नहीं लगाया (2) मुलाह़ज़ा फ़रमाइये "फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 236, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर" (3) अ़क़्ल ह़ैरत से जल गई कि येह क्या बे वुक़ूफ़ी है (4) त़रीक़ा, नुक़्तए नज़र

इल्तिज़ामे कुफ़्र कर लेगा तो हम इस की तक्फ़ीर में तअम्मुल[1] नहीं करेंगे। ख़्वाह वोह देवबन्दी हो या बरेलवी, लैगी हो या कौंगरेसी, नेचरी हो या नदवी। इस बारे में अपने पराए का इम्तियाज़ करना अहले हक़ का शैवा नहीं। इस का मत़लब येह नहीं कि एक लैगी ने कलिमए कुफ़्र बोला तो सारी लैग काफ़िर हो गई या एक नदवी ने एक **इल्तिज़ामे कुफ़्र** किया तो مَعَاذَالله सारे नदवी **मुर्तद** हो गए। हम तो बा'ज़ देवबन्दियों की इ़बाराते कुफ़्रिय्या की बिना पर हर साकिने देवबन्द[2] को भी काफ़िर नहीं कहते चे जाइका तमाम लैगी और सारे नदवी काफ़िर हों।

हम और हमारे अकाबिर ने बारहा ऐ'लान किया है कि हम किसी देवबन्द या लखनऊ वाले को काफ़िर नहीं कहते। हमारे नज़दीक सिर्फ़ वोही लोग काफ़िर हैं जिन्हों ने مَعَاذَالله **अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल व मह़बूबाने ईज़दी की शान में सरीह़ गुस्ताख़ियां कीं और बा वुजूदे तम्बीहए शदीद के उन्हों ने अपनी गुस्ताख़ियों से तौबा नहीं की नीज़ वोह लोग जो उन की गुस्ताख़ियों को ह़क़ समझते हैं और गुस्ताख़ियां करने वालों को मोमिन, अहले ह़क़ अपना मुक़्तदा और पेशवा मानते हैं और बस...** इन के इ़लावा हम ने किसी मुद्दइये इस्लाम की तक्फ़ीर नहीं की।

ऐसे लोग जिन की हम ने तक्फ़ीर की है अगर उन को टटोला जाए तो वोह बहुत क़लील और मह़दूद अफ़राद हैं[3] इन के इ़लावा न कोई देवबन्द का रहने वाला काफ़िर है न बरेली का, न लैगी न नदवी हम सब **मुसलमान** को **मुसलमान** समझते हैं।

---

1 वक़्फ़ा, शको शुबा 2 देवबन्द के रहने वाले को 3 जैसे आ'ला ह़ज़रत ने अपने रिसाले "ह़ुसामुल ह़रमैन" में कुफ़्रिया इ़बारात की बिना पर मिरज़ा ग़ुलाम अह़मद क़ादयानी समेत फ़क़त़ पांच की तक्फ़ीर की है।

मुफ़्तियाने देवबन्द भी अपने अकाबिर उ़-लमाए देवबन्द की इ़बाराते मुतनाज़ेआ़ को इ़बाराते कुफ़्रिय्या समझते हैं

अ़रबो अ़जम के उ़-लमाए अहले सुन्नत ने जो उ़-लमाए देवबन्द की तौहीन आमेज़ इ़बारात पर तक्फ़ीर फ़रमाई अगर आप सच पूछें तो मुफ़्तियाने देवबन्द के नज़दीक भी वोह तक्फ़ीर ह़क़ है और उ़-लमाए देवबन्द अच्छी त़रह़ जानते हैं कि इन इ़बारात में कुफ़्रे सरीह़ मौजूद है लेकिन मह़ज़ इस लिये कि वोह इन के अपने मुक़्तदाओं और पेशवाओं की इ़बारात हैं, तक्फ़ीर नहीं करते और **अगर मुफ़्तियाने देवबन्द से उन ही के पेशवाओं की किसी ऐसी इ़बारत को लिख कर फ़तवा त़लब किया जाए जिस के मुतअ़ल्लिक़ उन्हें येह इ़ल्म न हो कि येह हमारे बड़ों की इ़बारत है तो वोह इस इ़बारत के लिखने वाले पर बे धड़क कुफ़्र का फ़तवा सादिर फ़रमा देते हैं।** फिर जब उन्हें बता दिया जाए कि जिस इ़बारत पर आप ने कुफ़्र का फ़तवा दिया येह आप के फ़ुलां **देवबन्दी मुक़्तदा** का क़ौल है तो फिर बजुज़ ज़िल्लत आमेज़ **सुकूत**[1] के कोई जवाब नहीं बन पड़ता। इस की बहुत सी मिसालें पेश की जा सकती हैं। सरे दस्त हम एक ताज़ा मिसाल नाज़िरीने किराम की ज़ियाफ़ते त़ब्अ़ के लिये पेश करते हैं। और वोह येह है कि...

अपनों की नज़र में भी कुफ़्र

एक देवबन्दी अ़क़ीदा मौलवी साहि़ब ने जो मौदूदिय्यत[2] का शिकार हो चुके हैं मौदूदी साहि़ब को देवबन्दियों के आ़इद कर्दा इल्ज़ामाते तौहीन से बरिय्युज़्ज़िम्मा साबित करने के लिये, मौलवी मुह़म्मद क़ासिम साहि़ब (बानिये मद्रसए देवबन्द) की एक इ़बारत

---

1 अ़लावा ज़िल्लत आमेज़ **ख़ामोशी** के

2 अबुल आ'ला मौदूदी साहि़ब के पैरूकार हो चुके हैं

इन की किताब **"तस्फ़ियतुल अ़क़ाइद"** से नक़्ल कर के देवबन्द भेजी और इस पर फ़तवा त़लब किया मगर येह न बताया कि येह इ़बारत किस की है तो देवबन्द के मुफ़्ती साहिब ने इस इ़बारत पर बे धड़क कुफ़्र का फ़तवा सादिर फ़रमा दिया । मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

इश्तिहार ब उ़नवान "दारुल उ़लूम देवबन्द के मुफ़्ती का मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानोतवी पर फ़तवए कुफ़्र"

येह फ़तवा देवबन्दियों के गले में मछली के कांटे की त़रह़ फंस कर रह गया । दारुल इफ़्ता देवबन्द की त़रफ़ से जो फ़तवा मौसूल हुवा है । वोह दरजे ज़ैल है ।

मौलाना क़ासिम साह़िब दारुल उ़लूम देवबन्द की इ़बारत : "दरोग़े सरीह़[1] भी कई त़रह़ पर होता है हर क़िस्म का हुक्म यक्सां नहीं । हर क़िस्म से नबी को मा'सूम होना ज़रूरी नहीं । बिल जुम्ला अ़लल उ़मूम किज़्ब[2] को मुनाफ़ी शाने नबुव्वत बईं मा'ना समझना कि येह मा'सिय्यत है और अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मआ़सी से मा'सूम हैं, ख़ाली ग़लत़ी से नहीं"[3]

फ़तवा 41/786 अल जवाब :

"अम्बिया عَلَيْهِ السَّلَام मआ़सी से मा'सूम हैं इन को मुर्तकिबे मआ़सी समझना اَلْعِيَاذُ بِاللّٰه[4] अहले सुन्नत व जमाअ़त का अ़क़ीदा नहीं । इस की वोह तह़रीर ख़त़रनाक भी है और आ़म मुसलमानों को ऐसी तह़रीरात पढ़ना जाइज़ भी नहीं ।" फ़क़त़ : وَاللّٰهُ اَعْلَم

---

1 वाज़ेह़ झूट 2 ख़ुलासए कलाम येह है कि मुत़लक़न झूट को

3 या'नी अम्बिया भी झूट बोल सकते हैं इन्हें झूट से मा'सूम मानना ग़लत़ी है (مَعَاذَ اللّٰه)

4 **अल्लाह** तआ़ला की पनाह

सय्यिद अह़मद सईद (नाइब मुफ़्ती दारुल उ़लूम देवबन्द)

"जवाब सह़ीह़ है। ऐसे अ़क़ीदे वाला काफ़िर है। जब तक वोह तजदीदे ईमान और तजदीदे निकाह[1] न करे उस से क़त़ए तअ़ल्लुक़ करें।"

मसऊ़द अह़मद عفی عنہ (महर दारुल इफ़्ता फ़ी देवबन्द, अल हिन्द)

अल मुश्तहिर :[2] मुह़म्मद ईसा नक़्शबन्दी नाज़िम मक्तबए इस्लामी लूधरां, ज़िल्अ़ मुलतान

नाज़िरीने किराम ! ग़ौर फ़रमाएं कि **देवबन्द** से मौलवी क़ासिम साह़िब पर येह फ़तवए कुफ़्र मंगवा कर इश्तिहार में छापने वाला मौलवी मुह़म्मद क़ासिम साह़िब नानोतवी और अकाबिर उ़-लमाए देवबन्द का मो'तक़िद और इन को अपना मुक़्तदा व पेशवा मानने वाला है मगर मौदूदी होने की वजह से इस ने मौदूदी साह़िब के मुख़ालिफ़ीन उ़-लमाए देवबन्द को नीचा दिखाने के लिये और मौदूदी साह़िब पर उ़-लमाए देवबन्द के सादिर किये हुवे फ़तवों को ग़लत़ साबित करने के लिये येह चाल चली अगर्चे मुश्तहिर **देवबन्दिय्युल अ़क़ीदा** होने की वजह से मौलवी मुह़म्मद क़ासिम साह़िब नानोतवी बानिये मद्रसए देवबन्द पर मुफ़्तिये देवबन्द के इस फ़तवाए कुफ़्र को सह़ीह़ तस्लीम नहीं करता **लेकिन हमारे नाज़िरीने किराम पर इस फ़तवे को पढ़ कर येह ह़क़ीक़त ब ख़ूबी वाज़ेह़ हो गई होगी कि मुफ़्तियाने देवबन्द की नज़र में उ़-लमाए देवबन्द की इ़बाराते कुफ़्रिया यक़ीनन कुफ़्रिया हैं। लेकिन चूंकि वोह अपने मुक़्तदा और पेशवा हैं इस लिये उन की इ़बारात के सामने ख़ुदा व रसूल के अह़काम की कुछ वुक़अ़त नहीं।**

अस्ल पीर परस्त कौन ?

अहले सुन्नत पर **पीर परस्ती** का इल्ज़ाम लगाने वाले ज़रा अपने गिरेबानों में मुंह डाल कर देखें कि इस से बढ़ कर भी कोई पीर

---

1 या'नी जब तक नए सिरे से कलिमा पढ़ कर मुसलमान न हो जाए और नए ह़क़्क़े महर के साथ नया निकाह़ न कर ले 2 इश्तिहार छपाने वाला

परस्ती हो सकती है कि खुदा व रसूल से बढ़ कर भी अपने पीरों और पेशवाओं को बढ़ा दिया जाए। अहले इन्साफ़ के नज़दीक फ़ी ज़माना येही लोग आयते करीमा...﴿اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ﴾[1] के सहीह मिस्दाक़ हैं, या'नी वोह लोग जिन्हों ने अपने अह़बार व रुहबान (आ़लिमों और दुर्वेशों) को **अल्लाह** के सिवा अपना रब बना लिया है और वोह इस त़रह कि एक बात कोई दूसरा कहे तो उसे काफ़िर बना डालें और वोही बात उन के उ़-लमा व पेशवा कहें तो पक्के मोमिन रहें। اَلْعِيَاذُ بِاللّٰهِ وَاِلَى اللّٰهِ الْمُشْتَكٰى[2]

मुसलमानों को काफ़िर कहने वाला कौन है?

वोही लोग मुसलमानों को काफ़िर कहने वाले हैं जो बात बात पर कुफ़्रो शिर्क का फ़तवा लगाते रहते हैं। मुलाह़ज़ा फ़रमाइये : **तक़्वियतुल ईमान** सफ़ह़ा **4**, और **बुलग़तुल हैरान** सफ़ह़ा **4** :

इन दोनों किताबों में ऐसी इबारतें और फ़तवे दर्ज किये गए हैं जिन की रू से अ़हदे सह़ाबा से ले कर क़ियामत तक पैदा होने वाला कोई मुसलमान भी कुफ़्रो शिर्क से नहीं बचा।

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इ़ल्मे ग़ैब का क़ाइल, ह़ाज़िरो नाज़िर होने का मो'तक़िद,[3] उमूरे ख़ारिक़ुन लिलआ़दत[4] में बुज़ुर्गाने दीन के तसर्रुफ़ात के मानने वाला, या रसूलल्लाह कहने वाला, बुज़ुर्गाने दीन की ता'ज़ीम बजा लाने वाला, मजलिसे मीलाद शरीफ़ में क़ियामे ता'ज़ीमी और औलियाए किराम को ईसाले सवाब करने वाला ग़रज़ हर वोह मुसलमान जो इन लोगों के मस्लक के ख़िलाफ़ हो, مَعَاذَ اللّٰه काफ़िर व मुशरिक, बिदअ़ती, गुमराह मुलह़िद और बे दीन है।

---

1 (پ ١٠، سورة التوبة، الآية ٣١)

2 **अल्लाह** की पनाह और उसी की बारगाह में फ़रयाद है। 3 अ़क़ीदा रखने वाला 4 वोह उमूर जो आ़दतन मुह़ाल हों जैसे मुर्दे ज़िन्दा करना वग़ैरा

नाज़िरीने किराम ग़ौर फ़रमाएं कि इस क़िस्म के फ़तवों से कौन सा मुसलमान बच सकता है? तअ़ज्जुब है खुद तमाम मुसलमानों को काफ़िर व मुशरिक कहें और अहले सुन्नत पर इल्ज़ाम लगाएं। [1] فَإِلَى اللهِ الْمُشْتَكٰى

अफ्ज़लिय्यत व असालते मुस्तफ़विय्या صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

इज़्हारे कमालाते मुहम्मदी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में उ़-लमाए उम्मत का हमेशा येह मस्लक रहा है कि जब उन्हों ने किसी फ़र्दे मख़्लूक़ में कोई ऐसा कमाल पाया जो अज़् रूए दलील ब हैअते मख़्सूसा इस के साथ मुख़्तस नहीं[2] तो इस कमाल को हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये इस बिना पर तस्लीम कर लिया कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम आ़लम के वुजूद और इस के हर कमाल की अस्ल हैं। जो कमाल अस्ल में न हो, वोह फ़र्अ़ में भी नहीं हो सकता लिहाज़ा फ़र्अ़ में एक कमाल पाया जाना इस अम्र की रोशन दलील है कि अस्ल में येह कमाल ज़रूर है और इस में शक नहीं कि येह उसूल बिल्कुल सहीह है। मा'मूली समझ रखने वाला इन्सान भी समझ सकता है कि जब फ़र्अ़ का हर कमाल अस्ल से मुस्तफ़ाद[3] है तो येह कैसे हो सकता है कि एक कमाल फ़र्अ़ में हो और अस्ल में न हो ब ख़िलाफ़ ऐब के या'नी येह ज़रूरी नहीं कि फ़र्अ़ का ऐब अस्ल के ऐब की दलील बन जाए! हम अकसर देखते हैं कि हरे भरे दरख़्त की बा'ज़ टहनियां सूख जाती हैं मगर जड़ तरो ताज़ा रहती है इस लिये कि अगर जड़ ही खुश्क हो जाती तो उस की एक शाख़ भी सर सब्ज़ो शादाब न रहती और जब सिवाए चन्द शाख़ों के सब टहनियां सर सब्ज़ो शादाब हों तो मा'लूम हुवा कि जड़ तरो ताज़ा है और येह चन्द शाख़ें जो मुरझा कर खुश्क हो गई हैं इस की वजह येह है कि अन्दरूनी

---

1. और अल्लाह की बारगाह में ही फ़रयाद है
2. जो दलील की रोशनी में सिर्फ़ इसी के साथ मख़्सूस हो जैसे ह़ज़रते ईसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का बिग़ैर बाप के पैदा होना
3. ह़ासिल किया गया है

और बाति़नी तौ़र पर इन का तअ़ल्लुक़ अस्ल से टूट गया है। येह सह़ीह़ है कि बा'ज़ अवक़ात फ़र्अ़ का ऐ़ब अस्ल की त़रफ़ मन्सूब हो जाता है लेकिन येह उसी वक़्त होता है जब अस्ल में ऐ़ब पाया जाए और जब अस्ल का बे ऐ़ब होना दलील से साबित हो तो फिर फ़र्अ़ का कोई ऐ़ब अस्ल की त़रफ़ मन्सूब नहीं हो सकता और इस में शक नहीं कि अस्ले काइनात या'नी ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बे ऐ़ब होना दलील से साबित है। खुद नामे पाक "**मुह़म्मद**" इस की दलील है क्यूंकि लफ़्ज़े **मुह़म्मद** के मा'ना हैं बार बार ता'रीफ़ किया हुवा और ज़ाहिर है कि नक़्स व ऐ़ब मज़म्मत का मूजिब है न ता'रीफ़ का।[1] लिहाज़ा वाज़ेह़ हो गया कि मौजूदाते मुमकिना[2] के उ़यूब व नक़ाइस अस्ले मुमकिनात ह़ज़रते मुह़म्मद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ मन्सूब नहीं हो सकते बल्कि उन का अस्ल ऐ़ब येही है कि वोह बाति़नी और मा'नवी तौ़र पर अपनी अस्ल से मुन्क़त़अ़ हो कर इस के फ़ुयूज़ो बरकात से मह़रूम हो गए।

عَلٰی ھٰذَا الْقِیاس **हम कह सकते हैं कि मौजूदाते आ़लम[3] का हर कमाल कमाले मुह़म्मदी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दलील है मगर किसी फ़र्दे आ़लम का ऐ़ब** مَعَاذَ اللّٰہ **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **के ऐ़ब की दलील नहीं हो सकता क्यूंकि जिस फ़र्द में ऐ़ब पाया जाता है दर ह़क़ीक़त वोह अन्दरूनी और बाति़नी तौ़र पर अस्ले काइनात या'नी रूह़ानिय्यते मुह़म्मदिय्या** عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالتَّحِیَّۃ **से मुन्क़त़अ़ हो चुका है। गोया अस्ल से कट जाना ही ऐ़ब है।**

इसी उसूल के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते मौलाना अ़ब्दुस्समीअ़ साह़िब बैदल[4] رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मुसन्निफ़े "**अन्वारे साति़आ़**" ने तह़रीर फ़रमाया

---

1 नक़्स व ऐ़ब वाली चीज़ की मज़म्मत बयान की जाती है न कि ता'रीफ़ 2 तमाम मख़्लूक़, काइनात 3 कुल काइनात 4 आप मह़बूबे इलाही ह़ज़रते ह़ाजी इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मुरीद व ख़लीफ़ा हैं।

था कि "जब चांद सूरज की चमक दमक तमाम रूए ज़मीन पर पाई जाती है और शैत़ान व मलकुल मौत तमाम मुह़ीत़ ज़मीन पर मौजूद रहते हैं। बनी आदम को देखते और उन के अह़वाल को जानते हैं तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का अपनी रूह़ानिय्यत व नूरानिय्यत के साथ बयक वक़्त बहुत से मक़ामात पर तमाम रूए ज़मीन में रौनक़ अफ़रोज़ होना और इस का इ़ल्म रखना किस त़रह़ कुफ़्रो शिर्क हो सकता है ?"[1]

मौलवी अम्बेठवी की ग़लत़ फ़हमी

ज़ाहिर है कि मौलाना मुह़म्मद अ़ब्दुस्समीअ़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का येह कलाम तो इसी अस्ले मज़्कूर पर मब्नी था लेकिन मौलवी अम्बेठवी साह़िब जब अन्वारे सात़िआ़ के रद्द में बराहीने क़ात़िआ़ लिखने बैठे तो इन्हों ने अपनी ह़लावते त़ब्अ़ के बाइस अन्वारे सात़िआ़ में लिखे हुवे हुज़ूर के इस कमाल को हुज़ूर के वस्फ़े असालत[2] के बजाए इसे अफ़्ज़लिय्यत पर मब्नी समझ लिया या'नी मौलवी अम्बेठवी साह़िब ने येह समझा कि साह़िबे अन्वारे सात़िआ़ ने जो शैत़ान व मलकुल मौत के हर जगह मौजूद होने और रूए ज़मीन की अश्या का आ़लिम होने को बयान कर के हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हर जगह मौजूद होने और रूए ज़मीन के उ़लूम से मुत्तसिफ़ होने की त़रफ़ मुसलमानों को मुतवज्जेह किया है इस का मम्बा हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अफ़्ज़लिय्यते मह़ज़ा है।

अम्बेठवी साह़िब ने अपनी ग़लत़ फ़हमी से बज़ो'मे ख़ुद एक बुन्यादे फ़ासिद क़ाइम कर दी और इस पर मफ़ासिद की ता'मीर करते चले गए, चुनान्चे, इसी بِنَاءُ الْفَاسِدِ عَلَی الْفَاسِد[3] के सिलसिले में वोह तह़रीर फ़रमाते हैं :

---

1 ...... انوارِ ساطعہ در بیانِ مولود و فاتحہ ،ص۳۵۹،ضیاء القرآن پبلیکیشنز ،ملخصا

2 मख़्लूक़ में जिस को जो ख़ूबी भी मिली हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मिली

3 फ़ासिद पर फ़ासिद की ता'मीर किये चले जाना।

"आ'ला इल्लिय्यीन में रूहे मुबारक عَلَيْهِ السَّلَام का तशरीफ़ रखना और मलकुल मौत से अफ़्ज़ल होने की वजह से हरगिज़ साबित नहीं होता कि इल्म आप का इन उमूर में मलकुल मौत के बराबर भी हो चे जाइका ज़ियादा" (बराहीने क़ातिआ़, स. 52)

ع بریں عقل ودانش بباید گریست(1)

अम्बेठवी जी ! आप से किस ने कह दिया कि साहिबे अन्वारे सातिआ़ ने मलकुल मौत से महूज़ अफ़्ज़ल होने की वजह से हुज़ूर का इल्म मलकुल मौत से ज़ियादा तस्लीम किया है। साहिबे अन्वारे सातिआ़ या किसी सुन्नी आ़लिम ने भी अफ़्ज़लिय्यते महूज़ा(2) को ज़ियादतिये इल्म की दलील नहीं बनाया हम तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की असालत(3) को हुज़ूर की आ'लमिय्यत(4) की दलील क़रार देते हैं और अगर बिलफ़र्ज़ किसी ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अफ़्ज़लिय्यत को हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ'लमिय्यत की दलील बनाया भी हो तो इस से अफ़्ज़लिय्यते महूज़ा समझना इन्तिहाई हमाकत है क्यूंकि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अफ़्ज़लिय्यत हुज़ूर के साथ मख़्सूस है जिस का तहक़्क़ुक़ असालत के बिग़ैर नामुमकिन है।(5)

हमारे इस बयान की रोशनी में मुख़ालिफ़ीन का उन तमाम हवाला जात को पेश करना बे सूद हो गया जिन से वोह साबित किया

---

(1) इस अ़क़्ल व दानिश पर रोना चाहिये (2) फ़क़त् अफ़्ज़ल होना (3) हर वस्फ़ व ख़ूबी की अस्ल होने को (4) इल्म में सब से बढ़ कर होने (5) या'नी अगर कोई कहे कि चूंकि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम मख़्लूक़ से अफ़्ज़ल हैं इसी लिये इल्म में भी तमाम मख़्लूक़ से बढ़ कर हैं, तो उस का येह कहना सहीह है इस लिये कि अफ़्ज़लिय्यत में हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वस्फ़े असालत भी मौजूद है या'नी काइनात में जिस को जो इल्म मिला हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मिला।

करते हैं कि अफ़्ज़लिय्यत को आ'लमिय्यत मुस्तलज़म नहीं । मसलन हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام हज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام से अफ़्ज़ल हैं लेकिन बा'ज़ उ़लूम हज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام के लिये ह़ासिल हैं, हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के लिये उन का ह़ुसूल साबित नहीं वग़ैरा वग़ैरा ।

मुख़ालिफ़ीन ने अभी तक इस ह़क़ीक़त को समझा ही नहीं कि ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अफ़्ज़लिय्यत पर दूसरों को अफ़्ज़लिय्यत का क़ियास करना दुरुस्त नहीं इस लिये कि ह़ुज़ूर अस्ले काइनात हैं और येह वस्फ़ "असालते आ़म्मा" ह़ुज़ूर के इ़लावा किसी को नहीं मिला । बिनाबरीं ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अफ़्ज़लिय्यत, आ'लमिय्यत को मुल्तज़िम होगी और ह़ुज़ूर के इ़लावा किसी दूसरे की अफ़्ज़लिय्यत में आ'लमिय्यत का इस्तिलज़ाम न होगा ।

है ख़लीलुल्लाह को ह़ाजत रसूलुल्लाह की

इस बात की ताईद व तस्दीक़ कि हज़रते मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तमाम रसूलों से अफ़्ज़ल और सब अम्बिया के ख़ातिम हैं नीज़ येह कि तमाम अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मदद ह़ासिल करते हैं । शैख़ अक्बर मुह़िय्युद्दीन इब्नुल अ़रबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ[1] के इस क़ौल से होती है जो शैख़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने[2] बाब **491** के उ़लूम में इरशाद फ़रमाया है कि **"मख़्लूक़ का कोई फ़र्द दुन्या व आख़िरत का कोई इ़ल्म हज़रते मुह़म्मद मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **की बातिनिय्यत (रूह़ानिय्यत) के बिग़ैर किसी ज़रीए से ह़ासिल नहीं कर सकता ।** बराबर है कि अम्बिया मुतक़द्दिमीन[3] हों या वोह उ़-लमा हों जो ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बिअ़्सत से मुतअख़्ख़िरीन हैं और ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया है कि मुझे अव्वलीन व आख़िरीन के तमाम उ़लूम

1 मुतवफ़्फ़ा **638** हि. 2 अपनी किताब "अल फ़ुतूह़ातुल मक्किय्या" के
3 अम्बियाए साबिक़ीन

अ़ता किये गए हैं और इस में शक नहीं कि हम आख़िरीन से हैं (फिर हमारा कोई इ़ल्म बिला वासित़ए रूह़ानिय्यते मुह़म्मदिय्या क्यूंकर ह़ासिल हो सकता है) और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन उ़लूम के हुक्म में ता'मीम फ़रमाई लिहाज़ा येह हुक्म हर क़िस्म के उ़लूम को शामिल है। ख़्वाह वोह इ़ल्म मन्कूल व मा'कूल[1] हो या मफ़्हूम व मौहूब।[2] लिहाज़ा हर मुसलमान को कोशिश करनी चाहिये कि वोह बवासित़ए नबिय्ये करीम ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** तआ़ला से इ़ल्म ह़ासिल करे क्यूंकि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** तआ़ला की तमाम मख़्लूक़ में अ़लल इत़लाक़ सब से ज़ियादा इ़ल्म वाले हैं।" (اَلْيَوَاقِيْتُ وَالْجَوَاهِر، جلد۲ص۳۹مطبوعہ مصر)[3]

बा'ज़ उ़लूम को बुरा कह कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुक़द्दसा से इस की नफ़ी करना बद तरीन जहालत और बारगाहे नबुव्वत से खुली अ़दावत है

देवबन्दी ह़ज़रात अहले सुन्नत के मुआख़ज़े से तंग आ कर येह कह दिया करते हैं कि हम हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये वोही उ़लूम मानते हैं जो नबुव्वत व रिसालत से मुतअ़ल्लिक़ और हुज़ूर की शान के लाइक़ हैं। ग़ैर ज़रूरी उ़लूम और नजासतों, ग़लाज़तों, मक्रो फ़रेब, चोरी, दग़ाबाज़ी, ज़लालत व गुमराही के त़रीक़ों और इन तफ़्सीलात का बुरा और मज़मूम इ़ल्म और शैत़ानी उ़लूम को हुज़ूर के लिये साबित करना हुज़ूर के ह़क़ में ऐब है जिस से हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पाक होना ज़रूरी है।

इस का जवाब येह है कि इ़ल्म का मुक़ाबिल जह्ल[4] है और जह्ल फ़ी नफ़्सिही[5] नुक़्स व ऐब है तो ला मुह़ाला इ़ल्मे

---

1 मन्क़ूल जैसे क़ुरआनो ह़दीस, मा'क़ूल जैसे मन्त़िक़ व फ़ल्सफ़ा
2 तजरिबात से ह़ासिल शुदा हो या इ़ल्मे वहबी हो
3 اليواقيت والجواهر،٢/٢٨١،دار الكتب العلميه لبنان 4 जहालत 5 बज़ाते ख़ुद

फ़ी नफ़्सिही[1] हुस्नो कमाल होगा। देखिये शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिसे देहलवी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ[2] तफ़्सीरे "**फ़तहुल अ़ज़ीज़**" में इरक़ाम फ़रमाते हैं :

"دریں جا باید دانست کہ علم فی نفسہٖ مذموم نیست ہر چونکہ باشد"

(تفسیر فتح العزیز، ج ا ص ۳۴۵ مطبوعہ مطبع العلوم متعلقہ مدارس دہلی)

तर्जमा : यहां जानना चाहिये कि इ़ल्म जैसा भी हो, फ़ी नफ़्सिही बुरा नहीं होता।

इस के बा'द शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिसे देहलवी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने उन अस्बाब का तफ़्सीली बयान फ़रमाया है जिन की वजह से किसी इ़ल्म में बुराई आ सकती है जिस का ख़ुलासा ह़स्बे ज़ैल है।

(1) तवक़्क़ोए ज़रर[3]

(2) इस्ति'दादे आ़लिम का क़ुसूर[4]

(3) उ़लूमे शरइय्या में बेजा ग़ौर करना।

हमारे नाज़िरीने किराम अ़क़्ल व इन्साफ़ की रोशनी में इतनी बात ब ख़ूबी समझ सकते हैं कि ह़ज़रते शाह साह़िब के बयान फ़रमूदा तीनों सबबों का रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के ह़क़ में पाया जाना मुमकिन नहीं क्यूंकि इस्मते इलाहिय्या[5] की वजह से हु़ज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के ह़क़ में ज़रर की तवक़्क़ोअ़ नहीं हो सकती। इसी त़रह़ हु़ज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की इस्ति'दादे मुक़द्दसा में क़ुसूर का पाया जाना भी मुह़ाल है। علٰی ھٰذا القیاس[6]

उमूरे शरइय्या में बेजा ग़ौरो फ़िक्र करना भी रसूले करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के लिये क़त़अ़न नामुमकिन है वरना उ़लूमे शरइय्या भी معاذ اللہ हु़ज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के ह़क़ में मज़मूम हो जाएंगे।

---

1 बज़ाते ख़ुद 2 बिन शाह वलिय्युल्लाह मुह़द्दिसे देहलवी मुतवफ़्फ़ा 1239 हि. 3 इस इ़ल्म के सबब नुक़्सान में पड़ने का अन्देशा हो 4 आ़लिम की फ़ह्म व फ़िरासत में कमी है, जिस के सबब वोह उस इ़ल्म के ह़ासिल करने से हलाकत में पड़ेगा 5 ख़ुदाई ह़िफ़ाज़त की बिना पर 6 इसी पर क़ियास करते हुवे

रब तआ़ला से भी इ़ल्म की नफ़ी.....?

मा'लूम हुवा कि जिन अस्बाबे ख़ारिजा की वजह से किसी इ़ल्म में बुराई पैदा हो सकती है हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़क़ में इन का पाया जाना मुमकिन नहीं। लिहाज़ा साबित हो गया कि रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़्वाह कैसा ही इ़ल्म क्यूं न हो वोह हु़ज़ूर के ह़क़ में बुरा नहीं हो सकता और अगर हम आंखें बन्द कर के येह तस्लीम ही कर लें कि बा'ज़ उ़लूम फ़ी नफ़्सिही बुरे होते हैं तो मैं अ़र्ज़ करूंगा जो चीज़ फ़ी नफ़्सिही बुरी और मज़मूम हो वोह ऐ़ब है और ऐ़ब सिर्फ़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़क़ में मुह़ाल नहीं बल्कि हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पहले **अल्लाह** तआ़ला के ह़क़ में मुह़ाल है न सिर्फ़ मुह़ाल बल्कि मुह़ाले अ़क़्ली[1] और मुमतनिअ़ लिज़ातिही[2] है। लिहाज़ा ऐसे इ़ल्म को जो फ़ी नफ़्सिही बुरा हो और हु़ज़ूर के ह़क़ में इस का होना ऐ़ब क़रार पाए इसे **अल्लाह** तआ़ला के लिये भी साबित करना नामुमकिन होगा क्यूंकि सिफ़ते ज़मीमा[3] का इसबाते ह़क़ीक़तन ऐ़ब लगाना है। जब **अल्लाह** तआ़ला हर ऐ़ब से पाक है तो बुरे इ़ल्म से भी पाक होना उस के लिये यक़ीनन वाजिब होगा। जो चीज़ (फ़ी नफ़्सिही) बन्दों के ह़क़ में ऐ़ब हो **अल्लाह** तआ़ला का इस से मुनज़्ज़ा[4] होना ज़रूरी है। देखिये किज़्ब, जह्ल, ज़ुल्म, सफ़ा[5] वग़ैरा उमूर फ़ी नफ़्सिही[6] जिस त़रह़ बन्दों के ह़क़ में ऐ़ब हैं इसी त़रह़ **अल्लाह** तआ़ला के ह़क़ में भी ऐ़ब हैं और **अल्लाह** तआ़ला का इन से पाक होना ज़रूरी है। इसी लिये "**मुसामरह**" जुज़ सानी, स. 60 मत़बूआ़ मिस्र में अ़ल्लामा कमाल इब्ने अबी शरीफ़ एक सुवाल का जवाब

---

1 जिस चीज़ का पाया जाना अ़क़्लन नामुमकिन हो 2 जिस का पाया जाना मुत़लक़न नामुमकिन हो 3 बुरी सिफ़त 4 पाक होना 5 बे वुक़ूफ़ी 6 बज़ाते ख़ुद

देते हुवे इरक़ाम फ़रमाते हैं : "हम कहेंगे कि अशअ़री[1] और इन के इ़लावा तमाम (अहले सुन्नत) इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि हर वोह चीज़ जो (फ़ी नफ़्सिही) बन्दों के ह़क़ में ऐब और नुक़्स की सिफ़त हो, अल्लाह तआ़ला इस से पाक है और वोह सिफ़ते नुक़्स अल्लाह तआ़ला पर मुह़ाल है।"[2]

ऐसी सूरत में ह़ज़राते उ़-लमाए देवबन्द से मुख़्लिसाना इस्तिफ़्सार है कि जब आप अल्लाह तआ़ला को हर ऐब से पाक समझते हैं तो क्या उस की ज़ाते मुक़द्दसा से उन तमाम उ़लूम की नफ़ी करेंगे जिन्हें नजासत व ग़लाज़त, मक्रो फ़रैब का इ़ल्म और शैत़ानी उ़लूम कह कर बुरा और मज़मूम क़रार दिया गया है। अगर नहीं तो क्या अल्लाह तआ़ला को आप उ़यूब व नक़ाइस से मुबर्रा[3] नहीं मानते ?

हैरत है कि जिन लोगों की इ़बाराते तौहीने रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुलव्विस हैं इस मस्अले में उन्हें रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस क़दर ह़द से ज़ाइद मह़ब्बत किस त़रह़ हो गई कि अल्लाह तआ़ला की तन्ज़िया[4] से भी उन के नज़दीक हुज़ूर की तक़्दीस ज़ियादा अहम और ज़रूरी क़रार पा गई। فَيَا لَلْعَجَبْ

मह़ब्बत की आड़ में दुश्मनी

दर ह़क़ीक़त येह भी अ़दावते रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एक बय्यिन सुबूत है क्यूंकि क़ाइदा है कि अगर किसी अच्छी चीज़ से किसी को बर बिनाए अ़दावत मह़रूम रखना हो तो उस चीज़ को बुरा और मज़मूम कह दिया जाता है ताकि दूसरों पर येह ज़ाहिर कर दिया जाए कि हम इस शख़्स की मह़ब्बत और ख़ैर ख़्वाही की बिना पर इस बुरी चीज़ से इसे मह़फ़ूज़ रखना चाहते हैं, लेकिन

---

1 अशाअ़रा के इमाम ह़ज़रत शैख़ अबुल ह़सन अशअ़री عَلَيْهِ الرَّحْمَة मुतवफ़्फ़ा 324 हि.

2 المسامرة بشرح المسايرة،ص ٢٠٦،مطبعة السعادة بمصر

3 पाक, बे ऐब 4 पाकी

ह़क़ीक़तन अ़दावत की वजह से इस को एक अच्छी और मुफ़ीद चीज़ से मह़रूम रखना मक़्सूद है। **बिल्कुल येही सूरते ह़ाल यहां है कि बुरी चीज़ों के फ़ी नफ़्सिही इल्म को (जो ऐन कमाल है) नुक़्स व ऐब क़रार दे दिया गया ताकि वोह हु़ज़ूर** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **के लिये साबित न हो सके।** اَلْعِيَاذُ بِاللهِ وَاِلَيْهِ الْمُشْتَكٰى

एक कसीरुल वुक़ूअ़ शुबे का इज़ाला

बा'ज़ लोगों को येह कहते हुवे सुना गया है कि उ़-लमाए देवबन्द ने दीन की बहुत ख़िदमत की। सेंकड़ों उ़-लमा इन से पैदा हुवे। इन्हों ने बे शुमार किताबें लिखीं। इन में बहुत से लोग पीरी मुरीदी करते हैं और इन में आ़बिदो ज़ाहिद भी पाए जाते हैं। इन्हों ने अपनी तक़रीरों और तह़रीरों से दीन की बहुत कुछ तब्लीग़ व इशाअ़त की। ऐसी सूरत में ज़ेह्न इस बात को क़बूल नहीं करता कि इन्हों ने रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और दीगर अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शान में तौहीन आमेज़ इ़बारात लिखी हों।

इस का जवाब येह है कि इस क़िस्म के लोगों से तौहीने रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **का सरज़द हो जाना अ़क़्लन या शरअ़न किसी त़रह़ भी मुह़ाल नहीं। बलअ़म बिन बाऊ़रा** कितना बड़ा आ़बिदो ज़ाहिद और मुस्तजाबुद्दा'वात था लेकिन ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की मुख़ालफ़त और इन की इहानत का मुर्तकिब हो कर ﴿ولكنه اخلد الى الارض﴾[1] का मिस्दाक़ बन गया और हमेशा के लिये क़अ़रे मज़ल्लत में गिर गया।[2] शैत़ान का आ़बिदो ज़ाहिद और आ़लिम व आ़रिफ़ होना सब को मा'लूम है जब वोह ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तौहीन कर के रान्दए दरगाह हो गया तो दूसरों के लिये तौहीने रसूल का इर्तिकाब क्यूंकर नामुमकिन क़रार पा सकता है।

---

1 ....**तर्जमा :** मगर वोह तो ज़मीन पकड़ गया (پ۹،الاعراف،۱۷۶)

2 ......التفسير الكبير، تحت الآية ۱۷۵،۵/۴۰۳،بيروت

ख़वारिज व मो'तज़िला[1] और दीगर फ़िर्क़ए बातिला के इल्मी और अ़मली कारनामे अगर तारीख़ की रोशनी में देखे जाएं तो इस ज़माने के ह़ज़राते मज़्कूरीन[2] से उन के इल्मो अ़मल का पल्ला कहीं भारी था इन की मज़्ऊमा दीनी ख़िदमात, तदरीस व तब्लीग़, तस्नीफ़ व तालीफ़ के मुक़ाबले में अबनाए ज़माना[3] की ख़िदमात और कारगुज़ारियां ज़र्रए बे मिक़्दार की ह़ैसिय्यत भी नहीं रखतीं लेकिन उन के येह तमाम इल्मी और अ़मली कारनामे इन को क़अ़्रे ज़लालत से बचा न सके।

रही ख़िदमत व ह़िमायते दीन तो इस के लिये ज़रूरी नहीं कि अहले ह़क़ ही के ज़रीए हो बल्कि अल्लाह तआ़ला अपने दीन की ताईद नाफ़रमानों और फ़ाजिरों से भी करा लेता है। चुनान्चे, ह़दीस शरीफ़ में वारिद है إِنَّ اللّٰهَ يُؤَيِّدُ هٰذَا الدِّيْنَ بِالرَّجُلِ الْفَاجِرِ [4] लिहाज़ा इआ़नत व ह़िमायते दीन और ज़ाहिरी इल्मो अ़मल के पाए जाने से हरगिज़ येह लाज़िम नहीं आता कि ऐसे लोग फ़िल वाक़ेअ़[5] अल्लाह तआ़ला के नज़दीक पसन्दीदा और मह़बूब हों।

कुफ़्रो शिर्क व बिदअ़त

अगर ग़ौर से देखा जाए तो इन ह़ज़रात का सब से बड़ा कारनामा येह है कि इन्हों ने तमाम उम्मते मुस्लिमा को काफ़िर व मुशरिक और बिदअ़ती बना डाला मसलन या रसूलल्लाह कहना

---

1 **ख़वारिज :** एक फ़िर्क़ा जिन्हों ने ह़ज़रते अ़ली رضی اللہ تعالٰی عنہ के ख़िलाफ़ बग़ावत कर के इन्हें शहीद किया। (تاریخ الخلفاء)

मो'तज़िला : एक फ़िर्क़ा जो अ़म्र बिन उ़बैद का पैरूकार है (غنیۃ الطالبین)

2 या'नी वहाबियों देवबन्दियों 3 वहाबियों देवबन्दियों

4 **तर्जमा :** बेशक अल्लाह तआ़ला इस दीन का काम फ़ाजिर शख़्स से भी करवा लेता है (بخاری،کتاب المغازی،باب غزوۂ خیبر...... ۳/ ۸۲،الحدیث ۴۲۰۳)

5 ह़क़ीक़त में भी

शिर्क, औलियाए किराम की नज़्र (लुग़वी) शिर्क, मज़ाराते औलिया पर जाना कुफ़्र, मीलाद बिदअ़त, उ़र्स ह़राम, ग्यारहवीं शिर्क, अज़ान में हुज़ूरे पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नाम सुन कर अंगूठे चूमना बिदअ़त। अल ग़रज़ कुफ़्रो शिर्क की ऐसी भरमार की जिस से दूसरे तो क्या बचते खुद भी मह़फ़ूज़ न रह सके।

अहले सुन्नत का अ़क़ीदा

इस मुख़्तसर रिसाले में तफ़्सील की तो गुन्जाइश नहीं अलबत्ता इजमालन इतना अ़र्ज़ कर देना काफ़ी है कि **मन्सूसे क़त़ई**[1] का इन्कार **कुफ़्र** है। ग़ैरे खुदा को खुदा मानना या खुदा की कोई सिफ़त किसी ग़ैर के लिये साबित करना **शिर्क** है[2] और दीन में ऐसी चीज़ पैदा करना जिस की अस्ल दीने मतीन में न पाई जाए **बिदअ़त** है। या'नी हर वोह चीज़ जो किसी दलीले शरई के मुआ़रिज़ हो बिदअ़ते शरइय्या है।[3]

बिदअ़त की ह़क़ीक़त

येह उ़र्स व मीलाद व दीगर आ'माले मुस्तह़सना जिन्हें कुफ़्रो शिर्क और बिदअ़त क़रार दिया जाता है ह़क़ीक़तन उमूरे मुस्तह़ब्बा[4] हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه आज तक कोई मुन्किर इन उमूर में से किसी अम्र को न किसी नस्से क़त़ई[5] के ख़िलाफ़ साबित कर के इन के कुफ़्र होने पर दलील

---

(1) ऐसी दलील जिस का सुबूत कुरआने पाक या ह़दीसे मुतवातिर से हो।
(फ़तावा फ़क़ीहे मिल्लत)

(2) ......شرح العقائد النسفية، مبحث: الأفعال كلها بخلق الله تعالٰى،ص ٢٠١،مكتبة المدينة

(3) ......مسلم،كتاب الاقضية،باب نقض الاحكام الباطله،الحديث:١٧١٨،ص٩٤٦،دار ابن حزم،مفهوماً

(4) **मुस्तह़ब :** वोह कि नज़रे शरअ़ में पसन्द हो मगर तर्क पर कुछ ना पसन्दी न हो, ख़्वाह खुद हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसे किया या इस की तरग़ीब दी या उ़-लमाए किराम ने पसन्द फ़रमाया अगर्चे अह़ादीस में इस का ज़िक्र न आया। इस का करना सवाब और न करने पर मुत़लक़न कुछ नहीं। (बहारे शरीअ़त) (5) ऐसी दलील जिस का सुबूत कुरआने पाक या ह़दीसे मुतवातिर से हो। (फ़तावा फ़क़ीहे मिल्लत)

ला सका और न इन को किसी दलीले शरई के ख़िलाफ़ साबित कर के इन के बिदअ़त होने पर इस्तिदलाल कर सका। अलबत्ता इतनी बात ज़रूर कही जाती है कि जिस त़रीक़े से तुम येह काम करते हो इसी त़रह़ ख़ैरुल क़ुरून[1] में येह काम किसी ने नहीं किये लिहाज़ा येह सब उमूर बिदअ़त हैं।

इस के जवाब में तह़क़ीक़ व तफ़्सील तो إِنْ شَاءَ اللّٰه عزوجل दूसरे रिसाले में हदिय्यए नाज़िरीन होगी। सरे दस्त इतना अ़र्ज़ कर देना काफ़ी है कि अगर इन उमूर की हैअते कज़ाइय्या[2] की तफ़्सीलात क़ुरूने औला[3] में नहीं पाई गई तो सिर्फ़ इस वजह से इन को **बिदअ़त** कहना हरगिज़ दुरुस्त नहीं हो सकता।

देखिये क़ुरआने मजीद की तीस पारों में तक़्सीम, ए'राबे क़ुरआन, जमए् अह़ादीस, बिनाए् मदारिस, ता'लीमे दीन पर उज्रत लेना, अवराद व आ'माले मशाइख़ वग़ैरा बे शुमार काम ऐसे हैं कि ख़ैरुल क़ुरून में इन का वुजूद नहीं पाया गया लेकिन उ़-लमाए देवबन्द भी इन्हें बिदअ़त नहीं कहते। मा'लूम हुवा कि येह बात क़तअ़न ग़लत़ और नाक़ाबिले क़बूल है।

शिर्क की ह़क़ीक़त

इसी त़रह़ कोई मुन्किर किसी हुज्जते शरइय्या से इन उमूर के ए'तिक़ाद या अ़मल का शिर्क होना भी साबित न कर सका। शिर्क के मुतअ़ल्लिक़ हमारे नाज़िरीने किराम येह बात ज़रूर याद रखें कि शिर्क तौह़ीद का मुक़ाबिल है और मस्अलए

---

1 वोह ज़माना जिस को ह़दीसे पाक में सब से बेहतर दौर कहा गया है (مسند البزار) और येह सह़ाबए किराम, ताबेईन व तब्ए् ताबेईन का ज़माना है (تفسیرِ خازن)

2 जिस शक्लो सूरत में मौजूदा दौर में येह काम किये जाते हैं जैसे मीलाद वग़ैरा 3 सह़ाबए किराम, ताबेईन व तब्ए् ताबेईन के ज़माने में

तौहीद वाजिबे अक़्ली[1] है लिहाज़ा शिर्क ला मुहाला ए'तिक़ादे अम्र मुमतनिअ़ लिज़ातिही[2] का नाम होगा।

ज़ाहिर है कि तसर्रुफ़ाते अम्बिया व औलिया عليهم السلام और इन के बाक़ी कमालाते इल्मिय्या व अ़मलिय्या सब मुक़य्यद बिल अ़ता व बिइज़्निल्लाह[3] है और येह अम्र भी रोज़े रोशन की त़रह़ वाज़ेह़ है कि अ़त़ाए इलाही और इज़्ने ख़ुदावन्दी के साथ अल्लाह के किसी मह़बूब के लिये इल्मी या अ़मली कमालात व तसर्रुफ़ात का होना हरगिज़ मुमतनिअ़ लिज़ातिही नहीं। इस लिये इज़्न व अ़ता की क़ैद के साथ इन का ए'तिक़ाद किसी त़रह़ शिर्क नहीं हो सकता।

अलबत्ता उलूहिय्यत और वुजूबे वुजूद और ग़नाए ज़ाती[4] ऐसे उमूर हैं जिन की अ़ता मुमतनिअ़ लिज़ातिही है। इस लिये जो शख़्स किसी के ह़क़ में इन उमूर में से किसी अम्र की अ़ता का ए'तिक़ाद रखेगा वोह यक़ीनन मुशरिक होगा। जैसा कि मुशरिकीने अ़रब अपने आलिहए बात़िला[5] के ह़क़ में इसी क़िस्म का ए'तिक़ाद रखते थे और किसी मुसलमान का किसी ग़ैरुल्लाह के ह़क़ में हरगिज़ येह ए'तिक़ाद नहीं। الحمد لله इस मुख़्तसर बयान से अहले इ़ल्म पर मुख़ालिफ़ीन के वोह तमाम मक्रो फ़रैब आशकार हो गए जिन में बा'ज़ ह़ज़रात मुब्तला हो जाते हैं। وَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ[6]

इन्साफ़ कीजिये

जो देवबन्दी ह़ज़रात उ़-लमाए देवबन्द की सरीह़ तौहीनी इ़बारतों में तौहीन नहीं मानते उन की ख़िदमत में मुख़्लिसाना गुज़ारिश

1 अ़क़्ल तक़ाज़ा करती हो कि इस का पाया जाना ज़रूरी है 2 जिस का पाया जाना मुत़लक़न नामुमकिन हो 3 उन के इख़्तियारात अल्लाह तआ़ला के दिये हुवे हैं और वोह तमाम तसर्रुफ़ात अल्लाह तआ़ला के इज़्न से करते हैं 4 मा'बूद होना, फ़ना न होना और किसी का मोह़ताज न होना 5 झूटे मा'बूदों 6 और अल्लाह ही की हुज्जत पूरी है

है कि आप के उ़-लमा की इ़बारात के मुक़ाबले में मौदूदी साहि़ब की वोह इ़बारतें तौहीन के मफ़्हूम से बहुत दूर हैं जिन से ख़ुद आप के उ़-लमाए देवबन्द ने तौहीन का मफ़्हूम निकाल कर मौदूदी साहि़ब पर इल्ज़ामाते तौहीन आ़इद किये हैं। अगर्चे हमारे नज़्दीक दोनों में कोई फ़र्क़ नहीं लेकिन इ़बारात में सराह़त व वज़ाह़ते तौहीन के बय्यिन तफ़ावुत[1] का इन्कार नहीं किया जा सकता।

हम मौदूदी साहि़ब की इन इ़बारात में से सिर्फ़ एक इ़बारत बिला तशरीह़ तह़रीर करते हैं जिस की बिना पर उ़-लमाए देवबन्द ने मौदूदी साहि़ब को तौहीने ख़ुदा व रसूल का मुजरिम गरदाना है। इसी त़रह़ इस इ़बारत के मुक़ाबले में तीन इ़बारतें अकाबिरे उ़-लमाए देवबन्द की भी बिला तशरीह़ पेश करते हैं जिन से उ़-लमाए अहले सुन्नत ने अल्लाह तआ़ला और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तौहीन समझी है और येह फ़ैसला आप पर छोड़ते हैं कि मफ़्हूमे तौहीन में किस की इ़बारत ज़ियादा वाज़ेह़ और सरीह़ है।

मौदूदी साहि़ब की वोह इ़बारत जिस से उ़-लमाए देवबन्द ने अल्लाह तआ़ला और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तौहीन अख़्ज़ कर के मौदूदी साहि़ब पर ख़ुदा और रसूल की तौहीन का इल्ज़ाम आ़इद किया है।

"हु़ज़ूर को अपने ज़माने में येह अन्देशा था कि शायद दज्जाल अपने अ़हद में ज़ाहिर हो जाए या आप के बा'द किसी क़रीबी ज़माने में ज़ाहिर हो लेकिन क्या साढ़े तेरह सो (1350) बरस की तारीख़ ने येह साबित नहीं कर दिया कि हु़ज़ूर का येह अन्देशा सह़ीह़ न था। अब इन चीज़ों को इस त़रह़ नक़्ल व रिवायत किये जाना कि गोया येह भी इस्लामी अ़क़ाइद हैं न तो इस्लाम की सह़ीह़ नुमाइन्दगी है और न इसे ह़दीस ही का सह़ीह़ मफ़्हूम कहा जा सकता

1 वाज़ेह़ फ़र्क़

है। जैसा कि मैं अ़र्ज़ कर चुका हूं इस क़िस्म के मुआ़मलात में नबी के क़ियास व गुमान का दुरूस्त न निकलना हरगिज़ मन्सबे नबुव्वत पर त़ा'न का मूजिब नहीं है।" (माख़ूज़ अज़ तर्जमानुल कुरआन)

("हक़ परस्त उ़-लमा की मौदूदिय्यत से नाराज़ी के अस्बाब" मुअल्लिफ़ मौलवी अह़मद अ़ली साह़िब अमीरे अन्जुमन ख़ुद्दामुद्दीन, दरवाज़ा शेरान वाला, लाहोर स. 18)

अब मुलाह़ज़ा हों अकाबिरे उ़-लमाए देवबन्द की वोह इबारात जिन से उ़-लमाए अहले सुन्नत ने अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तौहीन समझ कर इन पर तौहीने ख़ुदा और रसूल का हुक्म लगाया है।

(1)...."और इन्सान ख़ुद मुख़्तार है, अच्छे काम करें या न करें और अल्लाह तआ़ला को पहले से कोई इ़ल्म भी नहीं होता कि क्या करेंगे बल्कि अल्लाह को इन के करने के बा'द मा'लूम होगा और आयाते कुरआनी जैसा कि (1)﴿وليعلم الذين﴾ वग़ैरा भी और अह़ादीस के अल्फ़ाज़ इस मज़हब पर मुन्त़बिक़ हैं।"

(बुल ग़तुल हैरान, मुसन्निफ़ मौलवी हुसैन अ़ली, स. 157,158)

(2)....."फिर दरोग़े सरीह़(2) भी कई त़रह़ पर होता है जिन में से हर एक का हुक्म यक्सां नहीं। हर क़िस्म से नबी को मा'सूम होना ज़रूरी नहीं।" (तस्फ़िय्यतुल अ़क़ाइद, स. 25 मौलवी मुह़म्मद क़ासिम साह़िब नानोतवी)

(3).... "**बिल जुम्ला अ़लल उ़मूम**(3) किज़्ब को मनाफ़िये शाने नबुव्वत बईं मा'ना समझना कि येह मा'सिय्यत है और अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام मआ़सी से मा'सूम हैं। ख़ाली ग़लती से नहीं।"

(तस्फ़िय्यतुल अ़क़ाइद, स. 28 मौलवी मुह़म्मद क़ासिम नानोतवी बानिये मद्रसए देवबन्द)

मौदूदी साह़िब और उ़-लमाए देवबन्द दोनों की अस्ल इबारात बिला कमो कास्त(4) आप के सामने मौजूद हैं। अगर आप ने ख़ौफ़े

---

1 پ ٤،سورة ال عمران،الآية ١٦٧, 2 वाज़ेह़ झूट 3 अल ह़ासिल मुत़लक़न किज़्ब को 4 बिला कमी बेशी

खुदा को दिल में जगह दे कर पूरी दियानतदारी से ब नज़रे इन्साफ़ ग़ौर फ़रमाया तो आप येह तस्लीम करने पर मजबूर हो जाएंगे कि मौदूदी साहिब की इबारत के मुक़ाबले में उ़-लमाए देवबन्द की इबारात मफ़्हूमे तौहीन में ज़ियादा **सरीह़** हैं।

देवबन्दी हज़रात का उ़-लमाए अहले सुन्नत पर एक ए'तिराज़ और देवबन्दी आ़लिम की तहरीर से इस का जवाब

देवबन्दी ह़ज़रात उ़-लमाए अहले सुन्नत पर ए'तिराज़ करते हैं कि उ़-लमाए देवबन्द पर ए'तिराज़ करने वाले उन की इबारतों के सियाक़ व सबाक़ को नहीं देखते जो फ़िक़रा क़ाबिले ए'तिराज़ होता है फ़क़त़ उस को पकड़ लेते हैं और सिर्फ़ उसी फ़िक़रे के बाइ़स उ़-लमाए देवबन्द पर **ता'न व तशनीअ़**[1] शुरूअ़ कर देते हैं।

बरादराने इस्लाम ! सियाक़ व सबाक़ से देवबन्दी ह़ज़रात की मुराद येह होती है कि अगली पिछली इबारतों को देख कर फिर ए'तिराज़ हो तो करना चाहिये।

जवाबन अ़र्ज़ है कि मौदूदी साहिब पर ए'तिराज़ करने वाले देवबन्दियों पर बिऐ़निहि[2] येही ए'तिराज़ इन्ही अल्फ़ाज़ में मौदूदियों की त़रफ़ से आप के मौलवी अह़मद अ़ली साहिब देवबन्दी ने अपने रिसाले "ह़क़ परस्त उ़-लमा की मौदूदिय्यत से नाराज़ी के अस्बाब" के सफ़ह़ा नम्बर 80 पर नक़्ल किया है और इस का जवाब भी इसी सफ़ह़े पर दिया है हम बिऐ़निहि वोही जवाब नक़्ल किये देते हैं।

मुलाह़ज़ा फ़रमाइये : "अगर दस10 सेर दूध किसी खुले मुंह वाले देगचे में डाल दिया जाए और उस देगचे के मुंह पर एक लकड़ी रख कर एक तागा[3] में ख़िन्ज़ीर की एक बोटी एक तोले की उस

1 बुरा भला कहना 2 बिल्कुल येही 3 धागे में

लकड़ी में बांध कर दूध में लटका दी जाए। फिर किसी मुसलमान को उस दूध में से पिलाया जाए। वोह कहेगा कि मैं इस दूध से हरगिज़ न पियूंगा क्यूंकि सब ह़राम हो गया है। पिलाने वाला कहेगा कि भाई दस[10] सेर दूध के आठ सो तोले होते हैं आप फ़क़त़ इस बोटी को क्यूं देखते हैं? देखिये! इस बोटी के आगे पीछे, दाएं बाएं और इस के नीचे चार[4] इंच की गहराई में दूध ही दूध है। वोह मुसलमान येही कहेगा कि येह सारा दूध ख़िन्ज़ीर की एक बोटी के बाइ़स ह़राम हो गया।

येही क़िस्सा मौदूदी साह़िब की इ़बारतों का है जब मुसलमान मौदूदी साह़िब का येह लफ़्ज़ पढ़ेगा कि ख़ानए का'बा के हर त़रफ़ जहालत और गन्दगी है इस के बा'द मौदूदी साह़िब इस फ़िक़रे से तौबा कर के ए'लान नहीं करेंगे, मुसलमान कभी राज़ी नहीं होंगे। जब तक ख़िन्ज़ीर की येह बोटी उस दूध से नहीं निकालेंगे।" (स. 80, 81)

पस देवबन्दी ह़ज़रात येही जवाब हमारी त़रफ़ से समझ लें और ख़ूब याद रखें कि उ़-लमाए देवबन्द की इ़बारात में मह़बूबाने ह़क़ तबारक व तआ़ला की हज़ार ता'रीफ़ें हों मगर जब तक वोह तौहीन आमेज़ फ़िक़रों से तौबा न करेंगे अहले सुन्नत उन से कभी राज़ी नहीं होंगे।

तौबा नामा दिखाना होगा

एक बात क़ाबिले ज़िक्र येह है कि बा'ज़ ह़ज़रात तौहीन आमेज़ इ़बारात के सरीह़ मफ़्हूम को छुपाने के लिये उ़-लमाए देवबन्द की वोह इ़बारात पेश कर देते हैं जिन में उन्हों ने तौहीन व तन्क़ीस से अपनी बराअत ज़ाहिर की है या ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'रीफ़ व तौसीफ़ के साथ अ़ज़मते शाने नबुव्वत का इक़रार किया है।

इस का मुख़्तसर जवाब येह है कि वोह इ़बारात उन्हें क़त़अ़न मुफ़ीद नहीं। जब तक उन की कोई ऐसी इ़बारत न दिखाई जाए कि हम ने फ़ुलां मक़ाम पर जो तौहीन की थी अब उस से हम रुजूअ़ करते हैं।

मसलन मौलवी मुहम्मद क़ासिम साहिब नानोतवी ने तहज़ीरुन्नास में "ख़ातमुन्नबिय्यीन" के मा'नए मन्क़ूल मुतवातिर(1) "आख़िरुन्नबिय्यीन" को अवाम का ख़याल बताया है।(2) अब अगर उन की दस बीस इबारतें भी इस मज़मून की पेश कर दी जाएं कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आख़िरी नबी हैं या हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द मुद्दइए नबुव्वत काफ़िर है तो इस से कुछ फ़ाइदा न होगा ता वक़्त येह कि मौलवी मुहम्मद क़ासिम नानोतवी साहिब का येह क़ौल न दिखाया जाए कि मैं ने जो "ख़ातमुन्नबिय्यीन" के मा'नए मन्क़ूल मुतवातिर "आख़िरुन्नबिय्यीन" का इन्कार किया था। अब मैं उस से तौबा कर के रुजूअ करता हूं।

देखिये। मिरज़ाई लोग मिरज़ा गुलाम अहमद की बराअत में जो इबारतें मिरज़ा साहिब की किताबों से पेश किया करते हैं इन के जवाब में मौलवी मुर्तज़ा हसन साहिब दरभंगी (नाज़िम ता'लीमाते मद्रसए देवबन्द) ने भी येही लिखा है। मुलाहज़ा फ़रमाइये ! (اشد العذاب، مطبوعہ مطبع مجتبائی جدید دہلی، صفحہ ۱۵، سطر ۱۶، ۱۷) : "जो इबारात मिरज़ा साहिब और मिरज़ाइयों(3) की लिखी जाती हैं जब तक उन मज़ामीन से साफ़ तौबा न दिखाएं या तौबा न करें तो उन का कुछ ए'तिबार नहीं।"

---

(1) या'नी वोह मा'ना जिसे इस क़दर कसीर जमाअत ने रिवायत किया कि इन सब का झूट पर जम्अ होना मुहाल है (2) तहज़ीरुन्नास स. 3 "सो अवाम के ख़याल में तो रसूलुल्लाह का ख़ातिम होना बईं मा'ना है कि आप का ज़माना अम्बियाए साबिक़ के ज़माने के बा'द है और आप सब में आख़िरी नबी हैं मगर अहले फ़हम पर रोशन होगा कि तक़द्दुम या तअख़्ख़ुरे ज़मानी में बिज़्ज़ात कुछ फ़ज़ीलत नहीं फिर..." अस्ल किताब की इबारत बाब "**अक्सी इबारात**" में मुलाहज़ा फ़रमाएं। (3) मिरज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी और उस के पैरूकारों

देवबन्दियों की तौहीन आमेज़ इ़बारात के इज़्हार की ज़रूरत

बा'ज़ देवबन्दी ह़ज़रात कहा करते हैं कि उ़-लमाए देवबन्द की इन इ़बारात के इज़्हार व इशाअ़त की क्या ज़रूरत है जिन से आप लोग तौहीन समझते हैं। इस ज़माने में इन इ़बारात की इशाअ़त बिला वजह शोर व शर, फ़ितना व फ़साद का मूजिब है और येह बड़ी ना इन्साफ़ी है कि उ़-लमाए देवबन्द के साथ लड़ाई मोल ली जाए।

इस का जवाब येह है कि उ़-लमाए देवबन्द की तौहीनी इ़बारतों के इज़्हार की वोही ज़रूरत है जो "मौलवी अह़मद अ़ली साहिब" को "मौदूदियों" का पोल खोलने के लिये पेश आई कि उ़-लमाए देवबन्द ने तमाम मुसलमानों के अ़क़ीदे के ख़िलाफ़ अल्लाह तआ़ला और अम्बिया व औलिया की मुक़द्दस शान में वोह शदीद और नाक़ाबिले बरदाश्त ह़म्ले किये हैं जिन्हें कोई मुसलमान बरदाश्त नहीं कर सकता। मौलवी अह़मद अ़ली साहिब इस ज़रूरत को ह़स्बे ज़ैल इ़बारत में बयान फ़रमाते हैं।

"क्या जब डाकू किसी के घर में घुस आए तो घर वाला डाकू से मुक़ाबला कर के अपना माल और अपनी जान न बचाए? और अगर माल और जान बचाने के लिये डाकू से मुक़ाबला करे तो फिर येह कहना सह़ीह़ है कि घर वाला बड़ा ही बे इन्साफ़ है कि डाकू से लड़ रहा है?"

(रिसालए मज़्कूरा[1], मौलवी अह़मद अ़ली साहिब, स. **84**)

उ़-लमाए देवबन्द की तहज़ीब का एक मुख़्तसर नमूना

देवबन्दी ह़ज़रात आ़म तौ़र पर येह कहते हैं कि बरेलवी मौलवी उ़-लमाए देवबन्द को गालियां दिया करते हैं।

1 रिसाला "ह़क़ परस्त उ़-लमा की मौदूदिय्यत से नाराज़ी के अस्बाब"

इस इल्ज़ाम की ह़क़ीक़त तो हमारे इसी रिसाले से मुन्कशिफ़ हो जाएगी और हमारे नाज़िरीने किराम पर रोशन हो जाएगा कि जिस शाइस्तगी और तहज़ीब से हम ने उ़-लमाए देवबन्द के ख़िलाफ़ येह रिसाला लिखा है इस की मिसाल हमारे मुख़ालिफ़ीन की एक किताब से भी पेश नहीं की जा सकती **लेकिन मज़ीद वज़ाह़त के लिये बतौरे नुमूना हम मौलवी हुसैन अह़मद साह़िब (मुदर्रिस मद्रसए देवबन्द) की किताब "अश्शहाबुस्साक़िबु" से चन्द वोह इबारतें पेश करते हैं जिन में आ'ला ह़ज़रत फ़ाज़िले बरेलवी** عَلَيْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز **को शदीद तरीन क़िस्म की दिल आज़ार गालियां दी गई हैं। इन इबारात को पढ़ कर हमारे नाज़िरीने किराम उ़-लमाए अहले सुन्नत और फु-ज़लाए देवबन्द की तहज़ीब का मुक़ाबला कर लें। मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :**

(1)...."फिर तअ़ज्जुब है कि मुजद्दिदे बरेलवी आंखों में धूल डाल रहा है और **किज़्बे ख़ालिस** मश्हूर कर रहा है। لَعْنَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی فِی الدَّارَیْنِ، या'नी ला'नत करे अल्लाह तआ़ला इस (मुजद्दिदे बरेलवी) पर दोनों जहानों में।" आमीन (अश्शहाबुस्साक़िब, स. 81)

(2).....आप ह़ज़रात ज़रा इन्साफ़ फ़रमाएं और इस **बरेलवी दज्जाल** से दरयाफ़्त करें। (अश्शहाबुस्साक़िब, स. 86)

(3)...मुजद्दिदे الضالین[1] फ़रमाते हैं।

(4) हम आगे चल कर साफ़ तौर से ज़ाहिर कर देंगे कि **दज्जाले बरेलवी** ने यहां पर मह़्ज़ बे समझी और बे अ़क़्ली से काम लिया है। (स. 95)

(5)....इस के बा'द मुजद्दिदे الضالین[2] عَلَیْہِ مَا عَلَیْہِ...الخ (स. 103)

---

1 गुमराहों के मुजद्दिद 2 उस पर वोह ला'नतें हों जिन का वोह मुस्तह़िक़ है

(6).... سَلَبَ اللّٰهُ اِیْمَانَکَ وَ سَوَّدَ وَجْهَکَ فِی الدَّارَیْنِ وَ عَاقَبَکَ بِمَا عَاقَبَ بِهٖ اَبَا جَهْلٍ وَعَبْدَاللّٰهِ بْنَ اُبَیٍّ یَا رَئِیْسَ الْمُبْتَدِعِیْنَ۔ (آمین)

ऐ बिदअ़तियों के सरदार (मुजद्दिदे बरेलवी) सल्ब करे **अल्लाह** तआ़ला तेरा ईमान और दोनों जहान में तेरा मुंह काला करे और तुझे वोही अ़ज़ाब दे जो अबू जह्ल और अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य को दिया था। (आमीन)। (स. **104,105**)

(**7**) मगर तहज़ीबे इल्म कोई लफ़्ज़ मुजद्दिदे बरेलवी के शायाने शान क़लम से नहीं निकलने देती। (स. **105**)

(**8**)... فَسَوَّدَ اللّٰهُ وَجْهَهٗ فِی الدَّارَیْنِ وَاَسْكَنَهٗ بِحُبُوْحَةِ الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ مَعَ اَعْدَاءِ سَیِّدِ الْكَوْنَیْنِ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ اٰمِیْنَ یَا رَبَّ الْعَالَمِیْنَ۔ (ص۱۱۹)

अल्लाह तआ़ला इस (मुजद्दिदे बरेलवी) का दोनों जहां में मुंह काला करे और इसे हुज़ूर के दुश्मनों के साथ जहन्नम के सब से नीचे गढ़े में रखे।

(**9**)... येह सब तक्फ़ीरें और ला'नतें बरेलवी और उस के इत्तिबाअ़ की त़रफ़ लौट कर क़ब्र में उन के वासिते़ अ़ज़ाब और ब वक़्ते ख़ातिमा उन के लिये मूजिबे ख़ुरूजे ईमान व इज़ालए **तस्दीक़ व ईक़ान**[1] होंगी और क़ियामत में उन के जुम्ला मुत्तबेईन के वासिते़ उस की मूजिब होंगी कि मलाइका हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام से कहेंगे : [2] اِنَّکَ لَا تَدْرِیْ مَا اَحْدَثُوْا بَعْدَکَ और रसूले मक़्बूल عَلَيْهِ السَّلَام दज्जाले बरेलवी और उन के इत्तिबाअ़ को سُحْقًا سُحْقًا[3] फ़रमा कर अपने हौज़े मौरूद व शफ़ाअ़ते मह़मूद से कुत्तों से बदतर कर के धुतकार देंगे और उम्मते मर्हूमा के अज्रो सवाब व मनाज़िल व नईम से मह़रूम किये जाएंगे।

---

1 ईमान की बरबादी का सबब 2 आप नहीं जानते कि इन्हों ने आप के बा'द दीन में क्या क्या ईजाद किया। 3 दूर हो जाओ, दूर हो जाओ

سَوَّدَ اللّٰهُ وُجُوْهَهُمْ فِي الدَّارَيْنِ وَجَعَلَ قُلُوْبَهُمْ قَاسِيَةً فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ۔ (10)

अल्लाह तआला उन बरेलवियों का मुंह दोनों जहां में काला करे और उन के दिलों को सख़्त कर दे तो वोह ईमान न लाएं यहां तक कि अज़ाबे अलीम को देख लें। (अश्शहाबस्साक़िब, स. 120)

इन तमाम बद दुआओं और गालियों के जवाब में सिर्फ़ इतना अर्ज़ है कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه आ'ला हज़रत बरेलवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه तो हरगिज़ इस बदगोई के मिस्दाक़ नहीं हो सकते[1] अलबत्ता ब मुक़्तज़ाए हदीस[2] आ'ला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जैसी मुक़द्दस हस्ती के हक़ में ऐसे नापाक कलिमे बोलने वाला اِنْ شَآءَ الله दुन्या व आख़िरत में अपने कलिमात का खुद मिस्दाक़ बनेगा। [3] وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ

---

1 इस लिये कि आ'ला हज़रत इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ज़ाती अना या किसी दुन्यावी ग़रज़ की बिना पर उ़-लमाए देवबन्द पर कुफ़्र का फ़तवा नहीं लगाया बल्कि शरीअ़ते इस्लाम की पासदारी और मन्सबे इफ़्ता की ज़िम्मेदारी के सबब आप हुक्मे कुफ़्र लगाने पर मजबूर हो गए और खुद उ़-लमाए देवबन्द भी इस बात को तस्लीम करते हैं कि इन मुतनाज़ेआ़ इबारात पर अगर इमाम अहमद रज़ा ख़ान साहिब कुफ़्र का फ़तवा न लगाते तो खुद काफ़िर हो जाते। चुनान्चे, मुर्तज़ा हसन दरभंगी साहिब (नाज़िम ता'लीमाते मद्रसए देवबन्द) अपनी किताब "**अशद्दुल अज़ाब**" के सफ़्हा 13 पर फ़रमाते हैं "अगर (मौलाना अहमद रज़ा) ख़ान साहिब के नज़दीक बा'ज़ उ़-लमाए देवबन्द वाक़ेई ऐसे ही थे जैसा कि उन्हों ने समझा तो (मौलाना अहमद रज़ा) ख़ां साहिब पर उन (उ़-लमाए देवबन्द) की तक्फ़ीर फ़र्ज़ थी, अगर वोह उन (उ़-लमाए देवबन्द) **को काफ़िर न कहते तो खुद काफ़िर हो जाते...क्यूंकि जो काफ़िर को काफ़िर न कहे वोह खुद काफ़िर है**। (सफ़ेद व सियाह स. 106)

2 بخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع،٤/ ٢٤٨، الحدیث:٦٥٠٢...... जिस ने मेरे वली से दुश्मनी की उसे मेरा ए'लाने जंग है। 3 और येह **अल्लाह** पर कुछ दुश्वार नहीं।

बा'ज़ लोग कहते हैं

कि मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान साहि़ब बरेलवी ने जो उ़-लमाए देवबन्द की इ़बारात पर उ़-लमाए ह़रमैने त़य्यिबैन से कुफ़्र के फ़तवे ह़ासिल कर के **हु़सामुल ह़रमैन** में शाएअ़ किये, इस के जवाब में उ़-लमाए देवबन्द ने "हु़सामुल ह़रमैन" के ख़िलाफ़ ताईद में उ़-लमाए ह़रमैने त़य्यिबैन के फ़तवे **"अल मुहन्नद"** में छापे और तमाम मुल्क में इस की इशाअ़त की। इस से साबित होता है कि मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान साहि़ब ने उ़-लमाए देवबन्द की इ़बारात को तरोड़ मरोड़ कर ग़लत़ अ़क़ाइद उन की त़रफ़ मन्सूब किये थे। जब उ़-लमाए देवबन्द की अस्ल इ़बारात और उन के अस्ली अ़क़ाइद सामने आए तो उ़-लमाए ह़रमैने त़य्यिबैन ने उन की तस्दीक़ व ताईद फ़रमा दी।

इस का जवाब येह है कि आ'ला ह़ज़रत फ़ाज़िले बरेलवी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ पर येह इल्ज़ाम क़त़अ़न बे बुन्याद है कि इन्हों ने देवबन्दियों की इ़बारतों में रद्दो बदल किया है या ग़लत़ अ़क़ाइद उन की त़रफ़ मनसूब किये हैं बल्कि वाक़िआ़ येह है कि हु़सामुल ह़रमैन के शाएअ़ होने के बा'द देवबन्दी ह़ज़रात ने अपनी जान बचाने के लिये अपनी इ़बारतों में ख़ुद क़त़्अ़ व बुरेद की[1] और अपने अस्ल अ़क़ाइद छुपा कर उ़-लमाए अ़रबो अ़जम के सामने अहले सुन्नत के अ़क़ीदे ज़ाहिर किये जिस पर उ़-लमाए दीन ने तस्दीक़ फ़रमाई। चूंकि इस मुख़्तसर रिसाले में तफ़्सील की गुन्जाइश नहीं, इस लिये सिर्फ़ एक दलील अपने दा'वे के सुबूत में पेश करता हूं। मुलाह़ज़ा कीजिये...

---

1 तराश ख़राश की, कमी बेशी की

मुहम्मद अ़ब्दुल वह्हाब नजदी के बारे में देवबन्दियों का ए'तिक़ाद येह है कि वोह बहुत अच्छा आदमी था उस के अ़क़ाइद भी उ़म्दा थे । देखिये "फ़तावा रशीदिय्या" जिल्द **1**, स. **111** पर मौलवी रशीद अह़मद साह़िब गंगोही ने लिखा कि....

"मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल वह्हाब के मुक़्तदियों को नजदी कहते हैं । उन के अ़क़ाइद उ़म्दा थे । मज़हब उन का ह़म्बली[1] था अलबत्ता उन के मिज़ाज में शिद्दत थी मगर वोह और उन के मुक़्तदी अच्छे हैं मगर हां जो ह़द से बढ़ गए उन में फ़साद आ गया और अ़क़ाइद सब के मुत्तह़िद हैं । आ'माल में फ़र्क़ ह़नफ़ी, शाफ़ेई, मालिकी, ह़म्बली का है ।" (रशीद अह़मद गंगोही)

नाज़िरीने किराम ने "फ़तावा रशीदिय्या" की इस इ़बारत से मा'लूम कर लिया होगा कि देवबन्दियों के मज़हब में मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल वह्हाब नजदी के अ़क़ाइद उ़म्दा थे और वोह अच्छा आदमी था लेकिन जब उ़-लमाए ह़रमैने त़य्यिबैन ने देवबन्दियों से सुवाल किया कि बताओ ! मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल वह्हाब के मुतअ़ल्लिक़ तुम्हारा क्या ए'तिक़ाद है ? वोह कैसा आदमी था ? तो ह़ीला साज़ी से काम ले कर अपना मज़हब छुपा लिया और लिख दिया । "हम उसे ख़ारिजी और बाग़ी समझते हैं ।" मुलाह़ज़ा हो : अल मुहन्नद, स. **19,20**....

"हमारे नज़दीक उन का हुक्म वोही है जो साह़िबे दुर्रे मुख़्तार ने फ़रमाया है । इस के चन्द सत़र बा'द मरक़ूम है कि अ़ल्लामा शामी ने इस के ह़ाशिये में फ़रमाया है : "जैसा कि हमारे ज़माने में अ़ब्दुल वह्हाब के ताबेईन से सरज़द हुवा के नज्द से निकल कर ह़रमैने त़य्यिबैन पर मुतग़ल्लिब हुवे ।[2] अपने को ह़म्बली मज़हब बताते थे मगर उन का अ़क़ीदा येह था कि बस वोही मुसलमान हैं और जो उन के अ़क़ीदे के ख़िलाफ़ हो वोह मुशरिक़ है और इसी बिना पर उन्हों ने अहले सुन्नत और उ़-लमाए अहले सुन्नत का क़त्ल मुबाह़

---

1 इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رحمة الله تعالى عليه के पैरूकार थे 2 क़ब्ज़ा कर लिया

समझ रखा था। यहां तक कि अल्लाह तआ़ला ने उन की शौकत तोड़ दी।" इन्तहा[1]

देखिये यहां अपने मज़हब को कैसे छुपाया और फ़तावा रशीदिय्या" की इबारत को साफ़ हज़्म कर गए। येह तो एक नुमूना था। तमाम किताब का येही हाल है कि जान बचाने के लिये अपने मज़हब पर पर्दा डाल दिया। अपनी इबारात को भी छुपा दिया। अब नाज़िरीने किराम खुद फ़ैसला फ़रमाएं कि ख़यानत करने वाला कौन है?

आख़िरी सहारा

इस बह़स में हमारे मुख़ालिफ़ीन (ह़ज़राते उ़-लमाए देवबन्द) का एक आख़िरी सहारा येह है कि बहुत से अकाबिर उ़-लमाए किराम व मशाइख़े इ़ज़ाम ने उ़-लमाए देवबन्द की तक्फ़ीर नहीं की जैसे सनदुल मुह़द्दिसीन ह़ज़रते मौलाना इरशाद हुसैन साह़िब मुजद्दिदी रामपूरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه और क़िब्लए आ़लम ह़ज़रत सय्यिद पीर महर अ़ली शाह साह़िब गोलड़वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इसी त़रह़ बा'ज़ दीगर अकाबिरे उम्मत की कोई तह़रीर सुबूते तक्फ़ीर में पेश नहीं की जा सकती।

इस के मुतअ़ल्लिक़ गुज़ारिश है कि तक्फ़ीर न करने वाले ह़ज़रात में बा'ज़ ह़ज़रात तो वोह हैं जिन के ज़माने में उ़-लमाए देवबन्द की इबाराते कुफ़्रिय्या (जिन में इल्तिज़ामे कुफ़्र मुतयक़्क़िन हो)[2] मौजूद ही न थीं जैसे मौलाना इरशाद हुसैन साह़िब रामपूरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه[3] ऐसी सूरत में तक्फ़ीर का सुवाल ही पैदा नहीं होता और बा'ज़ वोह ह़ज़रात हैं जिन के ज़माने में अगर्चे वोह इबारात

---

1 رد المحتار، کتاب الجهاد، مطلب فی اتباع عبد الوهاب الخوارج فی زماننا، ٦/٤٠٠

2 या'नी ऐसी इबारत जिस में कुफ़्र पाया जाए और इस के क़ाइल को उस कुफ़्र पर इत्तिलाअ़ भी हो। लुज़ूम व इल्तिज़ाम का फ़र्क़ मा'लूम करने के लिये देखिये सफ़ह़ा नम्बर 23

3 जिन का इन्तिक़ाल 1312 हि. में हो चुका था जब कि कुफ़्रिया इबारात पर मब्नी किताबों में से बा'ज़ तो बा'द में लिखीं गई या बा'ज़ पहले लिखी जा चुकी थीं मगर आ़म न होने की बिना पर इन उ़-लमा की नज़र से नहीं गुज़री।

शाएअ़ हो चुकी थीं मगर उन की नज़र से नहीं गुज़रीं, इस लिये उन्हों ने तक्फ़ीर नहीं फ़रमाई ।

हमारे मुख़ालिफ़ीन में से आज तक कोई शख़्स इस अम्र का सुबूत पेश नहीं कर सका कि फ़ुलां मुसल्लम बैनल फ़रीक़ैन बुज़ुर्ग[1] के सामने उ़-लमाए देवबन्द की इ़बारात मुतनाज़अ़ति फ़ीहा[2] पेश की गई और उन्हों ने उन को सह़ीह़ क़रार दिया या तक्फ़ीर से सुकूत फ़रमाया : इ़लावा अज़ीं येह कि जिन अकाबिरे उम्मत मुसल्लम बैनल फ़रीक़ैन की अ़दमे तक्फ़ीर[3] को अपनी बराअत की दलील क़रार दिया जा सकता है, मुमकिन है कि उन्हों ने तक्फ़ीर फ़रमाई हो और वोह मन्क़ूल[4] न हुई हो क्यूंकि येह ज़रूरी नहीं कि किसी की कही हुई हर बात मन्क़ूल हो जाए लिहाज़ा तक्फ़ीर के बा वुजूद अ़दमे नक़्ल के एह़तिमाल ने इस आख़िरी सहारे को भी ख़त्म कर दिया । وَلِلّٰهِ الْحَمْد

एक ताज़ा शुबे का जवाब

एक मेहरबान ने ताज़ा शुबा येह पेश किया है कि किसी को काफ़िर कहने से हमें कितनी रक्अ़तों का सवाब मिलेगा । हम ख़्वाह मख़्वाह किसी को काफ़िर क्यूं कहें? तौहीन आमेज़ इ़बारत लिखने वाले मर गए । इस दुन्या से रुख़्सत हो गए । ह़दीस शरीफ़ में वारिद है اُذْكُرُوْا مَوْتَاكُمْ بِالْخَيْرِ[5] (तुम अपने मुर्दों को ख़ैर के साथ याद करो) फिर येह भी मुमकिन है कि मरते वक़्त उन्हों ने तौबा कर ली हो । ह़दीस शरीफ़ में है । اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالْخَوَاتِيْم[6] (अ़मल का दारो मदार ख़ातिमे पर है) हमें क्या मा'लूम कि उन का ख़ातिमा कैसा हुवा? शायद ईमान पर उन की मौत वाक़ेअ़ हुई हो ।

(1) वोह बुज़ुर्ग जिन्हें दोनों फ़रीक़ तस्लीम करते हों (2) जिन इ़बारात की बिना पर झगड़ा है (3) कुफ़्र का फ़तवा न लगाने को (4) ज़बानी या किताबी सूरत में

(5)......(مرقاة المفاتيح شرح مشكاة المصابيح،٦/٤٠١:تحت الحديث:٣٢٥٢)

(6)......(بخاری،کتاب القدر،باب العمل بالخواتیم،٤/ ٢٧٤،الحديث:٦٦٠٧)

इस का जवाब येह है कि कुफ़्र व इस्लाम में इमतियाज़ करना ज़रूरिय्याते दीन से है। आप किसी काफ़िर को उम्र भर काफ़िर न कहें मगर जब उस का कुफ़्र सामने आ जाए तो बर बिनाए कुफ़्र उसे काफ़िर न मानना खुद कुफ़्र में मुब्तला होना है। बेशक अपने मुर्दों को ख़ैर से याद करना चाहिये मगर तौहीन करने वालों को मोमिन अपना नहीं समझता। न वोह वाक़ेअ़ में अपने हो सकते हैं। इस लिये मज़्मूने ह़दीस को इन से दूर का तअ़ल्लुक़ भी नहीं। हम मानते हैं कि ख़ातिमे पर आ'माल का दारो मदार है मगर याद रखिये ! दमे आख़िर का ह़ाल अल्लाह तआ़ला जानता है और उस का मआल भी उस की त़रफ़ मुफ़व्वज़ है।(1) अह़कामे शरअ़ हमेशा ज़ाहिर पर मुरत्तब होते हैं। इस लिये जब किसी शख़्स ने مَعَاذَاللّٰه अ़लानिय्या त़ौर पर इल्तिज़ामे कुफ़्र कर लिया तो वोह हुक्मे शरई की रू से क़त़अ़न काफ़िर है ता वक़्त येह कि तौबा न करे। अगर कोई मुसलमान ऐसे शख़्स को काफ़िर नहीं समझता तो कुफ़्र व इस्लाम को مَعَاذَاللّٰه यक्सां समझना कुफ़्रे क़त़ई है लिहाज़ा काफ़िर को काफ़िर न मानने वाला यक़ीनन काफ़िर है।(2) और अगर ब फ़र्ज़े मुह़ाल हम येह तस्लीम कर लें कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने अक़्दस में गुस्ताख़ियां करने वालों को काफ़िर न कहना चाहिये इस लिये कि शायद उन्हों ने तौबा कर ली हो और उन का ख़ातिमा बिल ख़ैर हो गया हो तो इसी दलील से मिरज़ाइयों को काफ़िर कहने से भी हमें ज़बान रोकनी पड़ेगी क्यूंकि मिरज़ा ग़ुलाम अह़मद क़ादियानी और उन के मुत्तबिईन सब के लिये येह एह़तिमाल पाया जाता है कि शायद उन का ख़ातिमा भी अल्लाह तआ़ला ने ईमान पर मुक़द्दर फ़रमा दिया हो। तो हम उन्हें किस त़रह़ काफ़िर कहें लेकिन ज़ाहिर येह है कि मिरज़ाइयों के बारे में येह एह़तिमाल कार आमद नहीं तो गुस्ताख़ाने नबुव्वत के ह़क़ में क्यूंकर मुफ़ीद हो सकता है।(3)

---

(1) क़ब्र में उन के साथ क्या मुआ़मला होगा, वोह भी रब तआ़ला जानता है।

(2) الفتاوی الرضویۃ، ۱۴/۲۶۵.... (3) लिहाज़ा शरअ़ के उसूल पर अ़मल करते हुवे गुस्ताख़ी करने वालों पर हुक्मे कुफ़्र जारी होगा।

एक ज़रूरी तम्बीह

बा'ज़ लोगों को देखा गया है कि वोह तौहीन आमेज़ इ़बारात पर तो सख़्त नफ़रत का इज़्हार करते हैं और बसा अवक़ात मजबूर हो कर इक़रार कर लेते हैं कि वाक़ेई इन इ़बारात में हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तौहीन है लेकिन जब इन इ़बारात के क़ाइलीन का सुवाल सामने आता है तो साकित और मुतअम्मिल[1] हो जाते हैं और अपनी उस्तादी शागिर्दी, पीरी मुरीदी या रिश्तेदारी व दीगर तअ़ल्लुक़ाते दुन्यवी ख़ुसूसन कारोबारी, तिजारती, नफ़्अ़ व नुक़्सान के पेशे नज़र उन को छोड़ना, उन के कुफ़्र का इन्कार करना[2] हरगिज़ गवारा नहीं करते। उन की ख़िदमत में मुख़्लिसाना गुज़ारिश है कि वोह क़ुरआने मजीद की ह़स्बे ज़ैल आयतों को ठन्डे दिल से मुलाह़ज़ा फ़रमाएं। **अल्लाह** फ़रमाता है....

(1)... ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا آبَاءَكُمْ وَإِخْوَانَكُمْ أَوْلِيَاءَ إِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْإِيمَانِ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ مِنْكُمْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ﴾[3]

तर्जमा : (ऐ ईमान वालो ! अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे भाई ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र को अ़ज़ीज़ रखें तो उन को अपना रफ़ीक़ न बनाओ और जो तुम में से ऐसे बाप भाइयों के साथ दोस्ती का बरताव रखेगा तो येही लोग हैं जो ख़ुदा के नज़दीक ज़ालिम हैं)

(2)... ﴿قُلْ إِنْ كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ اقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسَاكِنُ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ إِلَيْكُمْ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُوا حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ﴾[4]

---

1. और उन्हें काफ़िर कहने में शशो पन्ज का शिकार हो जाते हैं।
2. या'नी उन के कुफ़्र को मुन्किर व बुरा जानना

3. ……پ ١٠، سورة التوبة، الآية ٢٣
4. ……پ ١٠، سورة التوبة، الآية ٢٤

ऐ नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) आप मुसलमानों से फ़रमा दीजिये कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियां और तुम्हारे कुम्बेदार और माल जो तुम ने कमाए हैं और सौदागरी जिस के मन्दा[1] पड़ जाने का तुम को अन्देशा हो और मकानात जिन में रहने को तुम पसन्द करते हो। अगर येह चीज़ें अल्लाह और उस के रसूल और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने से तुम को ज़ियादा अ़ज़ीज़ हों तो ज़रा सब्र करो। यहां तक कि अल्लाह अपने हुक्म को ले आए और अल्लाह तआ़ला नाफ़रमानों को हिदायत नहीं फ़रमाता)

इन दोनों आयतों का मत़लब वाज़ेह़ है कि अ़क़ीदे और ईमान के मुआ़मले में और नेकी के कामों में बसा अवक़ात ख़्वेश व अक़ारिब,[2] कुम्बा और बरादरी, मह़ब्बत और दोस्ती के तअ़ल्लुक़ात ह़ाइल हो जाया करते हैं। इस लिये इरशाद फ़रमाया कि जिन लोगों को ईमान से ज़ियादा कुफ़्र अ़ज़ीज़ है, एक मोमिन उन्हें किस त़रह़ अ़ज़ीज़ रख सकता है। मुसलमान की शान नहीं कि ऐसे लोगों से रफ़ाक़त और दोस्ती का दम भरे। ख़ुदा और रसूल के दुश्मनों से तअ़ल्लुक़ात उसतुवार करना यक़ीनन गुनहगार बनना और अपनी जानों पर ज़ुल्म करना है। जिहादे फ़ी सबीलिल्लाह और ए'लाए कलिमतुल ह़क़[3] से अगर येह ख़याल मानेअ़ हो कि कुम्बा और बरादरी छूट जाएगी, उस्तादी शागिर्दी या दुन्यावी तअ़ल्लुक़ात में ख़लल वाक़ेअ़ होगा, अम्वाल तलफ़ होंगे या तिजारत में नुक़्सान होगा, राह़त और आराम के मकानात से निकल कर बे आराम होना पड़ेगा तो फिर ऐसे लोगों को ख़ुदा तआ़ला की त़रफ़ से उस के अ़ज़ाब के हुक्म का मुन्तज़िर रहना चाहिये। जो इस नफ़्स परस्ती, दुन्या त़लबी और तन आसानी की वजह से उन पर आने वाला है।

---

1 सुस्त पड़ जाने 2 रिश्तेदार 3 कलिमए ह़क़ को बुलन्द करने से

अल्लाह तआ़ला के इस वाज़ेह़ और रोशन इरशाद को सुनने के बा'द कोई मोमिन किसी दुश्मने रसूल से एक आन के लिये भी अपना तअ़ल्लुक़ बर क़रार नहीं रख सकता न उस के दिल में हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तौहीन करने वालों के काफ़िर होने के मुतअ़ल्लिक़ कोई शक बाक़ी रह सकता है।

ह़र्फ़े आख़िर

देवबन्दी मुबल्लिग़ीन व मुनाज़िरीन आ'ला ह़ज़रत मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान साहिब बरेलवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه और इन के हम ख़याल उ़-लमा की बा'ज़ इबारात बज़ो'मे ख़ुद[1] क़ाबिले ए'तिराज़ क़रार दे कर पेश किया करते हैं।

इस के मुतअ़ल्लिक़ सरे दस्त[2] इतना अ़र्ज़ कर देना काफ़ी है कि अगर फ़िल वाक़ेअ़[3] उ़-लमाए अहले सुन्नत की किताबों में कोई तौहीन आमेज़ इबारत होती तो उ़-लमाए देवबन्द पर फ़र्ज़ था कि वोह उन उ़-लमा की तक्फ़ीर करते जैसा कि उ़-लमाए अहले सुन्नत ने उ़-लमाए देवबन्द की इबाराते कुफ़्रिया की वजह से तक्फ़ीर फ़रमाई। **लेकिन अम्रे वाक़ेअ़[4] येह है कि देवबन्दियों का कोई आ़लिम आज तक आ'ला ह़ज़रत या इन के हम ख़याल उ़-लमा की किसी इबारत की वजह से तक्फ़ीर न कर सका, न किसी शरई क़बाह़त की वजह से इन के पीछे नमाज़ पढ़ने को ना जाइज़ क़रार दे सका।**

देखिये देवबन्दियों की किताब "**क़िसासुल अकाबिर**, मल्फ़ूज़ाते मौलवी अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी, शाएअ़ कर्दा कुतुब ख़ाना अशरफ़िय्या देहली, सफ़ह़ा 99 ता 100" पर है :

"एक शख़्स ने पूछा कि हम बरेली वालों के पीछे नमाज़ पढ़े तो नमाज़ हो जाएगी या नहीं? फ़रमाया (ह़ज़रत ह़कीमुल उम्मत مدظلہ العالی ने) : हां। हम उन को काफ़िर नहीं कहते।" इस के चन्द सत़र बा'द मरक़ूम है :

---

1 या'नी इन इबारात में गुस्ताख़ी का शाइबा तक नहीं लेकिन मुख़ालिफ़ीन बुग़्ज़ो इनाद या कम अ़क़्ली की बिना पर इन्हें गुस्ताख़ाना इबारात क़रार देते हैं 2 फ़िल ह़ाल 3 ह़क़ीक़त में 4 ह़क़ीक़त येह है

"हम बरेली वालों को अहले हवा[1] कहते हैं। अहले हवा काफ़िर नहीं।"

इस सिलसिले में मौलवी अशरफ़ अ़ली साहि़ब थानवी का एक और मज़ेदार मल्फ़ूज़ मुलाह़ज़ा फ़रमाएं :

(الافاضات الیومیہ، جلد پنجم، مطبوعہ اشرف المطابع تھانہ بھون، صفحہ ۲۲۰ پر ملفوظ نمبر ۳۳۵) में मरक़ूम है :

"एक सिलसिलए गुफ़्त्गू में फ़रमाया कि देवबन्द का बड़ा जल्सा हुवा था तो उस में एक रईस साहि़ब ने कोशिश की थी कि देवबन्दियों में और बरेलवियों में सुल्ह़ हो जाए। मैं ने कहा : हमारी त़रफ़ से कोई जंग नहीं। वोह नमाज़ पढ़ाते हैं, हम पढ़ लेते हैं। हम पढ़ाते हैं वोह नहीं पढ़ते तो उन को आमादा करो। (मुज़ाह़न फ़रमाया कि उन से कहो कि आ, मादा! नर आ गया) हम से क्या कहते हो।

इस इ़बारत से येह ह़क़ीक़त रोज़े रोशन की त़रह़ वाज़ेह़ हो गई कि उ़-लमाए अहले सुन्नत (जिन्हें बरेलवी कहा जाता है) देवबन्दियों के नज़दीक मुसलमान हैं और उन का दामन हर क़िस्म के कुफ़्रो शिर्क से पाक है। ह़त्ता कि देवबन्दियों की नमाज़ उन के पीछे जाइज़ है। इ़बारते मन्क़ूलए बाला[2] से जहां अस्ल मस्अला साबित हुवा वहां उ़-लमाए देवबन्द के मुजद्दिदे आ'ज़म ह़कीमुल उम्मत मौलवी अशरफ़ अ़ली साहि़ब[3] की तहज़ीब और मख़्सूस ज़ेहनिय्यत का नक़्शा भी सामने आ गया, जिस का आईनए दार मौलवी अशरफ़ अ़ली साहि़ब के **मल्फ़ूज़ शरीफ़ का येह जुम्ला है कि :**

इन (बरेलियों) से कहो, आ, मादा, नर आ गया।

---

1 अहले बिदअ़त 2 या'नी थानवी साहि़ब की वोह इ़बारत जो अभी नक़्ल की गई 3 मुतवफ़्फ़ा 1362 हि.

देवबन्दी ह़ज़रात को चाहिये कि इस जुम्ले को बार बार पढ़ें और अपने आ़रिफ़े मिल्लत व ह़कीम के ज़ौ'क़े हिक्मत व मा'रिफ़त से कैफ़ अन्दोज़ हो कर इस की दाद दें।

मौलवी अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी के मल्फ़ूज़ मन्क़ूलुस्सदर[1] से येह अम्र भी वाज़ेह हो गया कि बा'ज़ आ'माल व अ़क़ाइद मुख़्तलफ़ फ़ीहा[2] की बिना पर मुफ़्तियाने देवबन्द का अहले सुन्नत (बरेलवियों) को काफ़िर व मुशरिक क़रार देना और उन के पीछे नमाज़ पढ़ने को नाजाइज़ या मकरूह कहना क़त़्अ़न ग़लत़, बात़िल मह़्ज़ और बिला दलील है। सिर्फ़ बुग़्ज़ो इ़नाद और तअ़स्सुब की वजह से उन्हें काफ़िर व मुशरिक कहा जाता है वरना दर ह़क़ीक़त अहले सुन्नत (बरेलवी) ह़ज़रात के अ़क़ाइद व आ'माल में कोई ऐसी चीज़ नहीं पाई जाती जिस की बिना पर उन्हें काफ़िर व मुशरिक क़रार दिया जा सके या उन के पीछे नमाज़ पढ़ने को मक़रूह कहा जा सके।

हमें उम्मीद है कि येह चन्द उमूर जो हम ने पहले बयान किये हैं إن شاء الله العزيز आइन्दा चल कर हमारे नाज़िरीन के लिये मश्अ़ले राह साबित होंगे।

हक़ व बातिल में इम्तियाज़

अब आइन्दा सफ़्ह़ात में देवबन्दी ह़ज़रात और अहले सुन्नत का मस्लक मुलाह़ज़ा फ़रमा कर ह़क़ व बात़िल में इम्तियाज़ कीजिये।

(1) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दी ह़ज़रात के मुक़्तदा मौलवी रशीद अह़मद साह़िब गंगोही के शागिर्दे रशीद मौलवी हु़सैन अ़ली साह़िब साकिन वांभचरां ज़िल्अ़ मियानवाली और उन के शागिर्द व बा'ज़ दीगर उ़-लमाए

---

1 थानवी साह़िब का वोह मल्फ़ूज़ जो पहले ज़िक्र किया गया या'नी "हम बरेली वालों को अहले हवा कहते हैं। अहले हवा काफ़िर नहीं।"

2 ऐसे अ़क़ाइद जिन में सुन्नियों और देवबन्दियों का इख़्तिलाफ़ है।

देवबन्द के नज़्दीक **अल्लाह** तआ़ला को अपने बन्दों के कामों का इ़ल्म पहले से नहीं होता बल्कि बन्दों के करने के बा'द **अल्लाह** तआ़ला को उन के कामों का इ़ल्म होता है। देखिये : मौलवी हुसैन अ़ली अपनी तफ़्सीर "बुल ग़तुल ह़ैरान"(1) मत़बूआ़ ह़िमायते इस्लाम प्रेस लाहोर, बारे अव्वल सफ़ह़ा **157** ता **158** पर इरक़ाम फ़रमाते हैं :

"और इन्सान खुद मुख़्तार है, अच्छे काम करें या न करें और **अल्लाह** को पहले से कोई इ़ल्म भी नहीं होता कि क्या करेंगे बल्कि **अल्लाह** को उन के करने के बा'द मा'लूम होगा और आयाते कुरआनी जैसा कि (2)﴿وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ﴾ वग़ैरा भी और अह़ादीस के अल्फ़ाज़ भी इस मज़्हब पर मुन्त़बिक़ हैं।(3)

अहले सुन्नत का मज़्हब

अहले सुन्नत के नज़्दीक इ़ल्मे इलाही का मुन्किर ख़ारिज अज़् इस्लाम है। देखिये : शर्ह़े फ़िक़्हे अक्बर सफ़ह़ा **201**

"مَنِ اعْتَقَدَ اَنَّ اللّٰهَ لَا يَعْلَمُ الْاَشْيَاءَ قَبْلَ وُقُوْعِهَا فَهُوَ كَافِرٌ وَاِنْ عُدَّ قَائِلُهُ مِنْ اَهْلِ الْبِدْعَةِ." (4)

तर्जमा : "जिस शख़्स का येह ए'तिक़ाद हो कि **अल्लाह** तआ़ला किसी चीज़ को उस के वाक़ेअ़ होने से पहले नहीं जानता, वोह काफ़िर है अगर्चे उस का क़ाइल अहले बिदअ़त से शुमार किया गया हो।"

आयए करीमा (5)﴿فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ﴾ और इस क़िस्म की दीगर आयात व अह़ादीस में मुजाहिदीन व ग़ैरे मुजाहिदीन और मोअमिनीन

---

(1) इसी तफ़्सीर के सफ़ह़ा **4** पर आख़िरी सत़र येह है। मुलाह़ज़ा फ़रमाएं : "येह तक़रीरें जो आगे आती हैं ह़ज़रत साह़िब (मौलवी हुसैन अ़ली) ने गुलाम ख़ां से क़लमबन्द करवाई हैं और बज़ाते खुद उन पर नज़र फ़रमाई है।"

(बुल ग़तुल ह़ैरान, स.**4**, मत़बूआ़ ह़िमायते इस्लाम, प्रेस लाहोर, बार अव्वल)

(2) پ٤ سورۃ آل عمران، الآیۃ ١٦٧

(3) अस्ल किताब की इ़बारत बाब "**अ़क्सी इ़बारात**" में मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

(4) شرح فقه اکبر ص ١٦٣، مطبوعة کراچی

(5) तो ज़रूर **अल्लाह** सच्चों को देखेगा। (پ٢٠ سورۃ العنکبوت، الآیۃ ٣)

व मुनाफ़िक़ीन का इम्तियाज़ बाहमी मुराद है और मा'ना येह हैं कि अल्लाह तआ़ला ने मुनाफ़िक़ीन को मोअमिनीन से और ग़ैर मुजाहिदीन को मुजाहिदीन से अभी तक जुदा नहीं किया। आइन्दा (इ़ल्मे इलाही के मुत़ाबिक़) उन्हें अलग कर दिया जाएगा। यहां "**इ़ल्म**" से "**तमीज़**" मुराद है : ﴿فَلَیَعۡلَمَنَّ اللّٰہُ الَّذِیۡنَ﴾ ब मन्ज़िला فَلَیَمِیۡزَ اللّٰہُ (1) के है। जैसे अल्लाह तआ़ला के क़ौल ﴿لِیَمِیۡزَ اللّٰہُ الۡخَبِیۡثَ مِنَ الطَّیِّبِ﴾(2) में ख़बीस का त़य्यिब से जुदा होना मन्सूस है, ऐसे ही इन आयात में (जिन्हें मौलवी हुसैन अ़ली ने नफ़िये इ़ल्मे इलाही की दलील समझा है) मोमिनीन व मुनाफ़िक़ीन और मुजाहिदीन व ग़ैरे मुजाहिदीन का एक दूसरे से अलग होना मज़कूर है। **देखिये :** बुख़ारी शरीफ़, जिल्द सानी, स. **703** पर मरक़ूम है।

"﴿فَلَیَعۡلَمَنَّ اللّٰہُ﴾ عَلِمَ اللّٰہُ ذٰلِکَ اِنَّمَا ھِیَ بِمَنۡزِلَةِ فَلَیَمِیۡزَ اللّٰہُ کَقَوۡلِہٖ ﴿لِیَمِیۡزَ اللّٰہُ الۡخَبِیۡثَ﴾"......اِنۡتَھٰی (3)

येह मत़लब हरगिज़ नहीं कि مَعَاذَاللہ ख़ुदाए अ़लीमो ख़बीर को इन का इ़ल्म नहीं। अल्लाह तआ़ला तो हर चीज़ को जानता है।(4)

---

1. अल्लाह तआ़ला जुदा कर देगा।
2. इस लिये कि अल्लाह गन्दे को सुथरे से जुदा फ़रमा दे (پ ۹سورۃ الانفال،الآیۃ۳۷)
3. ......بخاری ،کتاب التفسیر،باب ﴿ان الذی فرض﴾،۳/۲۹۶،الحدیث:۴۷۷۳
4. इस मक़ाम पर येह कहना कि इस इ़बारत में मौलवी हुसैन अ़ली साहि़ब ने अपना मज़हब बयान नहीं किया है बल्कि मो'तज़िला का मज़हब नक़्ल किया है इन्तिहाई मुज़्ह़िका ख़ैज़ है इस लिये कि जब मौलवी साहि़बे मज़कूर ने क़ुरआनो ह़दीस को इस मज़हब पर मुन्त़बिक़ माना तो इस की ह़क़्क़ानिय्यत को तस्लीम कर लिया ख़्वाह वोह मो'तज़िला का मज़हब हो। अगर दूसरे का मज़हब, क़ुरआनो ह़दीस जिस पर मुन्त़बिक़ है इस का इन्कार क्यूं हो सकता है।

(2) देवबन्दियों का मज़हब

उ़-लमाए देवबन्द **अल्लाह** तआ़ला के ह़क़ में किज़्ब के क़ाइल हैं। देखिये : **"ज़मीमा बराहीने क़ाति़आ़"** मत़बूआ़ सादूरा स. **272** अल ह़ासिल इमकाने किज़्ब[1] से मुराद खुले किज़्ब तह़्ते कुदरते बारी तआ़ला है" और मौलवी रशीद अह़मद गंगोही "फ़तावा रशीदिय्या" जिल्द **1**, स. **19** पर तह़रीर फ़रमाते हैं :

"पस मज़हबे जमीअ़ मुह़क़्क़िक़ीने अहले इस्लाम व सूफ़ियाए किराम व उ़-लमाए इज़ाम का इस मस्अले में येह है कि किज़्ब दाख़िले तह़्ते कुदरते बारी तआ़ला है।" **1** हि.[2]

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत कहते हैं कि किज़्ब के तह़्ते कुदरते बारी तआ़ला होने से बन्दों के झूट की तख़्लीक़ और इस के बाक़ी रखने या न रखने पर कुदरते खुदावन्दी का होना मुराद है या येह मक़्सद है कि **अल्लाह** तआ़ला ब ज़ाते खुद सिफ़ते किज़्ब से मुत्तसिफ़ हो सकता है। अगर पहली शिक़ मुराद है तो इस में आज तक किसी सुन्नी ने इख़्तिलाफ़ नहीं किया। फिर येह कहना कि इमकाने किज़्ब के मस्अले में शुरूअ़ से इख़्तिलाफ़ रहा है। बाति़ल मह़्ज़ और जहालत व ज़लालत है और **अगर दूसरी शिक़ मुराद हो तो इस से बढ़ कर शाने उलूहिय्यत में क्या गुस्ताख़ी हो सकती है कि مَعَاذَاللہ अल्लाह तआ़ला के मुत्तसिफ़ बिल किज़्ब होने को मुमकिन क़रार दिया जाए।[3] अहले सुन्नत के नज़दीक ऐसा अक़ीदा कुफ़्रे ख़ालिस है।** اَعَاذَنَا اللّٰہُ مِنْهَا

(3) देवबन्दियों का मज़हब

कुबरा उ़-लमाए देवबन्द का मस्लक येह है कि कुरआने करीम ने कुफ़्फ़ार को अपनी फ़साह़त व बलाग़त से आ़जिज़ नहीं

---

1. झूट बोलना मुमकिन होने से मुराद 2. या'नी खुदा चाहे तो झूट बोल सकता है.....अस्ल किताब की इ़बारत बाब "**अ़क्सी इ़बारात**" में मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।
3. या'नी **अल्लाह** तआ़ला के झूटा होने को मुमकिन क़रार दिया जाए।

किया था और फ़साहत व बलाग़त से आजिज़ करना उ-लमाए देवबन्द के नज़्दीक कोई कमाल भी नहीं। चुनान्चे, मौलवी हुसैन अली साहिब तल्मीज़े रशीद मौलवी रशीद अहमद गंगोही साहिब अपनी किताब "**बुल ग़तुल हैरान**" मत़्बूआ हिमायते इस्लाम, प्रेस लाहोर (त़ब्अ़ अव्वल) में सफ़्हा **12** पर लिखते हैं : "येह ख़याल करना चाहिये कि कुफ़्फ़ार को आजिज़ करना कोई फ़साहत व बलाग़त से न था। क्यूंकि कुरआन ख़ास वासिते कुफ़्फ़ारे फुसहा बुलग़ा के नहीं आया था और येह कमाल भी नहीं।"[1]

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत का अक़ीदा है कि कुरआने करीम ने यक़ीनन अपनी फ़साहत व बलाग़त से कुफ़्फ़ारे फुसहाए अरब को आजिज़ किया था और कुरआन की येह शाने ए'जाज़ क़ियामत तक बाक़ी रहेगी। **जो शख़्स इस ए'जाज़े कुरआनी का मुन्किर है और कुरआने करीम की फ़साहत व बलाग़त को कमाल नहीं समझता वोह दुश्मने कुरआन मुल्हिद व बे दीन ख़ारिज अज़ इस्लाम है।**

(4) देवबन्दियों का मज़हब

उ-लमाए देवबन्द के नज़्दीक शैतान और मलकुल मौत का इल्म रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इल्म से ज़ियादा है और शैतान और मलकुल मौत के लिये मुहीत़ ज़मीन की वुस्अ़ते इल्म दलीले शरई से साबित है[2] और फ़ख़्रे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये इस इल्म का साबित करना शिर्क है। (देखिये "**बराहिने क़ातिआ**" मुसन्निफ़ मौलवी ख़लील अहमद अम्बेठवी मुसद्दक़ा मौलवी रशीद अहमद गंगोही, मत़्बूआ साढ़ूरा, सफ़्हा **51**)

"**अल हासिल** ग़ौर करना चाहिये कि शैतान व मलकुल मौत का हाल देख कर इल्मे मुहीते ज़मीन का फ़ख़्रे आलम को

---

1. अस्ल किताब की इबारत बाब "**अक्सी इबारात**" में मुलाहज़ा फ़रमाएं।
2. या'नी शैतान व मलकुल मौत के लिये तमाम रूए ज़मीन के चप्पे चप्पे का इल्म कुरआनो हदीस से साबित है।

ख़िलाफ़े नुसूसे क़त़इय्या के बिला दलील मह़्ज़ क़ियासे फ़ासिदा से साबित करना शिर्क नहीं तो कौन सा ईमान का ह़िस्सा है ? शैत़ान व मलकुल मौत को येह वुस्अ़ते नस्स[1] से साबित हुई, फ़ख़्रे आ़लम की वुस्अ़ते इ़ल्म की कौन सी नस्स क़त़ई है जिस से तमाम नुसूस को रद्द कर के एक शिर्क साबित करता है ।[2]

इसी "**बराहिने क़ात़िआ़**" के सफ़्ह़ा **52** पर है : "आ'ला इ़ल्लिय्यीन[3] में रूह़े मुबारक عَلَيْهِ السَّلَام की तशरीफ़ रखना और मलकुल मौत से अफ़्ज़ल होने की वजह से हरगिज़ साबित नहीं होता कि इ़ल्म आप का इन उमूर में मलकुल मौत के बराबर भी हो चे जाइका ज़ियादा ।

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत का मज़हब येह है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुक़ाबले में शैत़ान के लिये मुह़ीते ज़मीन[4] का इ़ल्म साबित करना और हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते अक़्दस से इस की नफ़ी करना बारगाहे रिसालत की सख़्त तौहीन है।

अहले सुन्नत के नज़दीक शैत़ान व मलकुल मौत के मुह़ीते ज़मीन के इ़ल्म पर क़ुरआनो ह़दीस में कोई नस्स[5] वारिद नहीं हुई । जो शख़्स नस्स का दा'वा करता है वोह क़ुरआनो ह़दीस पर निहायत ही नापाक बोहतान बांधता है । इसी त़रह़ हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़ल्म को नुसूसे क़त़इय्या[6] के ख़िलाफ़ कहना भी क़ुरआनो ह़दीस पर इफ़्तराए अ़ज़ीम है । क़ुरआनो ह़दीस में कोई ऐसी नस्स वारिद नहीं हुई जिस से रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़क़ में मुह़ीते ज़मीन के इ़ल्म की नफ़ी होती हो बल्कि क़ुरआनो ह़दीस के बेशुमार नुसूस से रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये हर चीज़ का इ़ल्म साबित है । अहले

(1) क़ुरआनो ह़दीस से (2) अस्ल किताब की इ़बारत बाब "**अ़क्सी इबारात**" में मुलाह़ज़ा फ़रमाएं । (3) वोह मक़ाम जहां मोअमिनीन की रूहें क़ियामत तक रहती हैं (4) पूरी ज़मीन (5) कोई आयत या ह़दीस (6) आयात या अह़ादीसे मुतवातिरा

सुन्नत का मस्लक है कि किसी मख़्लूक़ के मुक़ाबले में हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये इ़ल्म की कमी साबित करना हुज़ूर की शाने अक़्दस में बदतरीन गुस्ताख़ी है।

(5) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दी ह़ज़रात का मज़हब है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को न अपनी आ़क़िबत[1] का इ़ल्म है, न दीवार के पीछे हुज़ूर जानते हैं। इसी **"बराहीने क़ाति़आ़"** के स. **51** पर है :

खुद फ़ख़्रे आ़लम عَلَيْهِ السَّلَام फ़रमाते हैं : "وَاللهِ لَا اَدْرِىْ مَا يُفْعَلُ بِىْ وَلَا بِكُمْ" और शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ रिवायत करते हैं कि "मुझ को दीवार के पीछे का भी इ़ल्म नहीं।"[2]

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत का मस्लक येह है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सिर्फ़ अपनी ही नहीं बल्कि तमाम मोअमिनीन व कुफ़्फ़ार की भी आ़क़िबत का ह़ाल जानते हैं। ज़मीनो आस्मान का कोई गोशा निगाहे रिसालत से मख़्फ़ी नहीं।

"وَاللهِ لَا اَدْرِىْ" वाली ह़दीस से रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अपने और दूसरों के अन्जामे कार से ला इ़ल्म होने पर इस्तिदलाल करना इन्तिहाई मुज़ह़िका ख़ेज़ है। क्या कुरआने करीम में हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये عَسٰۤى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا[3] और وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى[4] वारिद नहीं हुवा और क्या मोअमिनीन

---

1 आख़िरत में अन्जाम का 2 मुकम्मल इ़बारते अस्ल किताब के आख़िरी बाब ब उ़न्वान "अ़क्सी इ़बारात" में मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

3 क़रीब है कि तुम्हें तुम्हारा रब ऐसी जगह खड़ा करे जहां सब तुम्हारी ह़म्द करें (پ۱۵، سورۃ بنی سرائیل، الآیۃ ۷۹)

4 और बेशक पिछली तुम्हारे लिये पहली से बेहतर है (پ۳۰، سورۃ الضحی، الآیۃ ٤)

के हक़ में (1)لِّيُدۡخِلَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ وَالۡمُؤۡمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا कुरआने मजीद में मौजूद नहीं ? फिर समझ में नहीं आता कि हुज़ूर के इ़ल्म की नफ़ी किस बिना पर की जाती हैं ?

हदीस "لَا اَدْرِیْ" के मा'ना सिर्फ़ येह हैं कि मैं बिग़ैर ता'लीमे खुदावन्दी के महज़ अटकल से नहीं जानता कि मेरे और तुम्हारे साथ क्या होगा ।

वोह ह़दीस जो ब ह़वालए रिवायते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ साहि़ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه पेश की गई है। इस के मुतअ़ल्लिक़ पहले तो येह अ़र्ज़ है कि शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ साहि़ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अगर इस ह़दीस को लिखा है तो वोह बतौ़रे नक़्ल व ह़िकायत के तह़रीर फ़रमाया है। इस को रिवायत कहना अपनी जहालत का सुबूत देना है। फिर लुत्फ़ येह कि येही शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपनी किताब "**मदारिजुन्नुबुव्वत**" में इस रिवायत का जवाब देते हुवे फ़रमाते हैं।

"جَوَابَش آنَسْتْ کہٖ اِیں سُخَنْ اَصْلِی نَدَارَدْ وَرِوَایَتِی بَدَاں صَحِیْح نَشُدَہ" (2)

ऐसी बे अस्ल रिवायतों से हुज़ूर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कमालाते इ़ल्मी का इन्कार करना अहले सुन्नत के नज़दीक बद तरीन जहालत व ज़लालत है ।

(6) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दी मौलवी साहि़बान अशरफ़ अ़ली साहि़ब थानवी का रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़ल्मे ग़ैब को ज़ैद व अ़म्र, बच्चों, पागलों, बल्कि तमाम हैवानों और जानवरों के इ़ल्म से तशबीह देना मुलाह़ज़ा फ़रमाइये "**ह़िफ़्ज़ुल ईमान**" मुसन्निफ़ह़ू मौलवी अशरफ़ अ़ली साहि़ब थानवी स. 8"

(1) ताकि ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औ़रतों को बाग़ों में ले जाए जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहें। (پ۲۶،سورۃ الفتح،الآیۃ۵)

(2) इस का जवाब येह है कि येह बात सही़ह़ नहीं है और न येह रिवायत सही़ह़ है

فیض القدیر،حرف الهمزة،۱/۱۸۹.....مدارج النبوة،باب در بیان حسن خلقت وجمال،۱/۷،مرکز اهلسنت برکات رضا

"फिर येह कि आप की ज़ाते मुक़द्दसा पर इ़ल्मे ग़ैब किया जाना अगर बक़ौले ज़ैद सह़ीह़ हो तो दरयाफ़्त त़लब येह अम्र है कि इस ग़ैब से मुराद बा'ज़ ग़ैब है या कुल ग़ैब ? अगर बा'ज़ उ़लूमे ग़ैबिय्या मुराद हैं तो इस में हुज़ूर ही की क्या तख़्सीस है ? ऐसा इ़ल्मे ग़ैब तो ज़ैद व अ़म्र बल्कि हर सबी[1] व मजनून बल्कि जमीअ़ हैवानात व बहाइम[2] के लिये भी ह़ासिल है ।[3]

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत का अ़क़ीदा है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہٖ وسلم का इ़ल्म तमाम काइनात के इ़ल्म से मुमताज़ है और इस क़िस्म की तशबीह शाने नबुव्वत की शदीद तरीन तौहीन व तन्क़ीस है ।

(7) देवबन्दियों का मज़हब

ह़ज़राते उ़-लमाए देवबन्द के नज़दीक नमाज़ में रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہٖ وسلم का ख़याल मुबारक दिल में लाना बैल और गधे के तसव्वुर में ग़र्क़ हो जाने से बदरजहा बदतर है ।

देखिये उ़-लमाए देवबन्द की मुसल्लम व मुसद्दक़ा किताब[4] **"सिराते मुस्तक़ीम"** स. 86 मत़बूआ़ मुजतबाई देहली

"از وسوسۂ زنا خیالِ مجامعتِ زوجۂ خود بہتر است وصرفِ ہمت بسوئے شیخ و امثالِ آں از معظمین گو جنابِ رسالت مآب باشند بچندیں مرتبہ از استغراق در صورتِ گاؤ خر خود است" (5)

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के मस्लक में रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہٖ وسلم का ख़याले मुबारक तक्मीले नमाज़ का मौक़ूफ़े अ़लैह है[6] और

---

1 बच्चे 2 जानवरों और चोपायों 3 अस्ल किताब की इ़बारत बाब **"अ़क्सी इ़बारात"** में मुलाह़ज़ा फ़रमाएं । 4 उ़-लमाए देवबन्द की तस्दीक़ शुदा किताब 5 अस्ल किताब की इ़बारत बाब "अ़क्सी इ़बारात" में मुलाह़ज़ा फ़रमाएं । 6 या'नी हुज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہٖ وسلم का ख़याले मुबारक आए बिग़ैर नमाज़ ज़ाहिरी व बात़िनी लिह़ाज़ से मुकम्मल नहीं होगी

हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सूरते करीमा को दिल में हाज़िर करना मक़्सदे इबादत के हुसूल का ज़रीआ और वसीलए उ़ज़्मा है[1] और **हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का खयाल मुबारक दिल में लाने को गाए बैल के तसव्वुर में ग़र्क़ हो जाने से बदतर कहना हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वोह तौहीने शदीद है जिस के तसव्वुर से मोमिन के बदन पर रोंगटे खड़े हो जाते हैं और अहले सुन्नत ऐसा कहने वाले को जहन्नमी और मलऊ़न तसव्वुर करते हैं।**

(8) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दियों के मुक़तदर उ़-लमा[2] के नज़दीक लफ़्ज़ "रह़मतुल्लिल आ़लमीन" रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सिफ़ते ख़ास्सा नहीं। "**फ़तावा रशीदिय्या**" हिस्सा दुवुम, स. 9 पर तह़रीर फ़रमाते हैं :

इस्तिफ़ता : क्या फ़रमाते हैं उ़-लमाए दीन कि लफ़्ज़ "**रह़मतुल्लिल आ़लमीन**" मख़्सूस आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से है या हर शख़्स को कह सकते हैं ?

अल जवाब : लफ़्ज़ "**रह़मतुल्लिल आ़लमीन**" सिफ़ते ख़ास्सा रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की नहीं है।

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के नज़दीक "रह़मतुल्लिल आ़लमीन" ख़ास रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वस्फ़े जमील है इस में दूसरे को शरीक करना हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान को घटाना है।

---

1. या'नी हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का खयाले मुबारक कुर्बे इलाही का ज़रीआ बनेगा न कि शिर्क का सबब
2. मुअ़ज़्ज़ज़ उ़-लमा

(9) देवबन्दियों का मज़हब

उ़-लमाए देवबन्द के नज़दीक क़ुरआने करीम में "**ख़ातमुन्नबिय्यीन**" के मा'ना आख़िरी नबी मुराद लेना अ़वाम का ख़याल है।

मुलाह़ज़ा फ़रमाइये : तह़ज़ीरुन्नास, स. 3 मुसन्निफ़ह़ू मौलवी मुह़म्मद क़ासिम साह़िब नानोतवी बानिये मद्रसए देवबन्द

"बा'द ह़म्दो सलात के क़ब्ल अ़र्ज़े जवाब येह गुज़ारिश है कि अव्वल मा'ना "**ख़ातमुन्नबिय्यीन**" मा'लूम करने चाहीयें ताकि फ़ह्‌मे जवाब में कुछ दिक़्क़त न हो। सो अ़वाम के ख़याल में तो रसूलुल्लाह ﷺ का ख़ातिम होना बईं मा'ना है[1] कि आप का ज़माना अम्बियाए साबिक़ के ज़माने के बा'द है और आप सब में आख़िरी नबी हैं मगर अहले फ़ह्‌म पर रोशन होगा कि तक़द्दुम या तअख़्ख़ुरे ज़मानी[2] में बिज़्ज़ात कुछ फ़ज़ीलत नहीं फिर मक़ामे मदह़ में ﴿وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ﴾ फ़रमाना[3] इस सूरत में क्यूंकर सह़ीह़ हो सकता है ?"[4]

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत का अ़क़ीदा येह है कि क़ुरआने करीम में जो लफ़्ज़ "ख़ातमुन्नबिय्यीन" वारिद हुवा है। इस के मा'ना मन्क़ूले मुतवातिर "आख़िरुन्नबिय्यीन" ही हैं।[5] जो शख़्स इस को अ़वाम का ख़याल क़रार देता है वोह क़ुरआने करीम के मा'नए मन्क़ूले मुतवातिर का मुन्किर है।[6]

---

1 अ़वाम ह़ुज़ूर को आख़िरी नबी इन मा'नों में समझते हैं 2 किसी का ज़माना पहले होना या बा'द में होना 3 जैसा कि "پ ۲۲سورۃ الاحزاب،الآیۃ ٤٠" में फ़रमाया गया। 4 अस्ल किताब की मुकम्मल इबारत इसी किताब के आख़िरी बाब ब उ़न्वान "**अक्सी इबारात**" में मुलाह़ज़ा फ़रमाएं। 5 अह़ादीसे मुतवातिरा में येही मा'ना वारिद हुवे हैं 6 जैसा कि अश्शिफ़ा, ह़िस्सा दुवुम, स. 285, मत़बूआ़ मर्कज़े अहले सुन्नत बरकाते रज़ा में है।

(10) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दी हज़रात का मज़हब येह है कि अगर बिलफ़र्ज़ ज़मानए नबवी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द भी कोई नबी पैदा हो तो फिर भी हुज़ूर की ख़ातमिय्यत में कुछ फ़र्क़ न आएगा। देखिये इसी "**तहज़ीरुन्नास**" के सफ़हा **28** पर मरक़ूम है।

"अगर बिलफ़र्ज़ बा'दे ज़मानए नबवी صلعم भी कोई नबी पैदा हो तो फिर भी **ख़ातमिय्यते मुहम्मदी** में कुछ फ़र्क़ न आएगा चे जाएका आप के मुआ़सिर[1] किसी और ज़मीन में या फ़र्ज़ कीजिये इसी ज़मीन में कोई और नबी तजवीज़ किया जाए।"[2]

अहले सुन्नत का मज़हब

येह है कि अगर ब फ़र्ज़े मुहाल बा'द ज़मानए नबवी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कोई नबी पैदा हो तो ख़ातमिय्यते मुहम्मदी में ज़रूर फ़र्क़ आएगा। जैसा कि ब फ़र्ज़े मुहाल दूसरा इलाह[3] पाया जाए तो अल्लाह तआ़ला की तौहीद में ज़रूर फ़र्क़ आएगा जो शख़्स इस फ़र्क़ का मुन्किर है वोह न तौहीदे बारी को समझा न ख़त्मे नबुव्वत पर ईमान लाया।

(11) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दी उ़-लमा के नज़दीक रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उर्दू ज़बान का इ़ल्म उस वक़्त ह़ासिल हुवा जब हुज़ूर का मुआ़मला उ़-लमाए देवबन्द से हो गया। इस से पहले हुज़ूर उर्दू ज़बान न जानते थे। देखिये "**बराहीने क़ातिआ़**" में मौलवी ख़लील अह़मद अम्बेठवी सफ़हा **26** पर लिखते हैं :

"मद्रसए देवबन्द की अ़ज़मत ह़क़ तआ़ला की बारगाह में बहुत है कि सदहा आ़लिम यहां से पढ़ कर गए और ख़ल्क़े कसीर को

---

1. आप की ह़याते त़य्यिबा में 2. अस्ल किताब की इ़बारत बाब "अ़क्सी इ़बारात" में मुलाह़ज़ा फ़रमाइयें। 3. दूसरा मा'बूद, ख़ुदा

ज़ुल्मात व ज़लालत से निकाला। येही सबब है कि एक सालेह़[1] फ़ख्ऱे आ़लम عَلَيْهِ السَّلَام की ज़ियारत से ख़्वाब में मुशर्रफ़ हुवे तो आप को उर्दू में कलाम करते देख कर पूछा कि आप को येह कलाम कहां से आ गई ? आप तो अ़रबी हैं ! फ़रमाया कि जब से उ़-लमाए मद्रसए देवबन्द से हमारा मुआ़मला हुवा हम को येह ज़बान आ गई। سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ इस से रुत्बा इस मद्रसे का मा'लूम हुवा।"[2]

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के नज़दीक रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अव्वल अम्र से हर ज़बान के आ़लिम हैं जो शख़्स हुज़ूर के लिये किसी ज़बान के इ़ल्म को इस अहले ज़बान से मुआ़मला होने के बा'द साबित करे और उस का मस्लक येह हो कि हुज़ूर को येह ज़बान उस वक़्त आ गई जब इस ज़बान वालों से हुज़ूर का मुआ़मला हुवा। या'नी इस से पहले हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام इस ज़बान के आ़लिम न थे, वोह शख़्स कमालाते रिसालत को मजरूह़ कर रहा है।

(12) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दी ह़ज़रात को ऐसी ख़्वाबें नज़र आती हैं जिन में वोह (مَعَاذَ الله) रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को गिरता हुवा देखते हैं और फिर हुज़ूर को गिरने से रोकते और बचाते हैं। दलील के त़ौर पर मौलवी हुसैन अ़ली साह़िब शागिर्दे रशीद मौलवी रशीद अह़मद साह़िब गंगोही का इरशाद "**बुल ग़तुल हैरान, स. 8**" पर देखिये :

وَرَاَيْتُ اَنَّهٗ يَسْقُطُ فَاَمْسَكْتُهٗ وَاَعْصَمْتُهٗ مِنَ السُّقُوْط तर्जमा : (और मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा कि हुज़ूर गिर रहे हैं तो मैं ने हुज़ूर को रोका और गिरने से बचा लिया)[3]

---

1 नेक शख़्स 2-3 अस्ल किताब की इ़बारत बाब "**अ़क्सी इ़बारात**" में मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत का मस्लक है कि ज़ाते जनाबे रिसालते मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़्वाब में देख कर हुज़ूर के इलावा कोई दूसरी चीज़ मुराद नहीं ली जा सकती जिस ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा उस ने ला रैब हुज़ूर ही को देखा।(1) **ऐसी सूरत में जो शख़्स येह कहे कि (مَعَاذَاللّٰہ) मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को गिरता हुवा देख कर हुज़ूर को गिरने से बचा लिया, वोह बारगाहे रिसालत में दरीदा दहन निहायत गुस्ताख़ है।**

(13) देवबन्दियों का मज़हब

उ़-लमाए देवबन्द के मुक़्तदा मौलवी अशरफ़ अ़ली साहि़ब थानवी ने न सिर्फ़ ख़्वाब बल्कि बेदारी की ह़ालत में भी لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ اَشْرَفُ عَلِیٌّ رَسُوْلُ اللّٰہِ और اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَنَبِیِّنَا وَمَوْلَانَا اَشْرَفُ عَلِیٌّ पढ़ने को अपने मुत्तबए सुन्नत होने का इशारए ग़ैबी क़रार दे कर पढ़ने वाले की हौसला अफ़्ज़ाई फ़रमाई। देखे : रुइदादे मुनाज़रा "**गया**" अल फ़ुरक़ान जिल्द **3**, नम्बर **12** के सफ़ह़ा **75** पर देवबन्दी ह़ज़रात के माया नाज़ मुनाज़िर मौलवी मन्ज़ूर अह़मद साहि़ब संभली नो'मानी तह़रीर फ़रमाते हैं :

"येह पंजाब के रहने वाले हैं। इन्हों ने मौलाना थानवी को एक त़वील ख़त़ लिखा है अख़ीर में अपने ख़्वाब का वाक़िआ़ इन अल्फ़ाज़ में लिखते हैं :

"कुछ अ़र्से के बा'द ख़्वाब देखता हूं कि कलिमा शरीफ़ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ पढ़ता हूं लेकिन مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ की जगह हुज़ूर(2) لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ اَشْرَفُ عَلِیٌّ رَسُوْلُ اللّٰہِ का नाम लेता हूं। इतने में दिल के अन्दर ख़याल पैदा हुवा कि तुझ

---

1. जिस ने मुझे ख़्वाब में देखा तह़क़ीक़ उस ने मुझे ही देखा इस लिये कि शैत़ान मेरी सूरत नहीं अपना सकता بخاری،کتاب العلم،باب اثم من کذب علی النبی ﷺ،۱/۵۷،الحدیث:۱۱۰
2. अशरफ़ अ़ली थानवी साहि़ब

से ग़लती हुई कलिमा शरीफ़ के पढ़ने में। इस को सहीह़ पढ़ना चाहिये। इस ख़याल से दोबारा कलिमा शरीफ़ पढ़ता हूं। दिल पर तो येह है कि सहीह़ पढ़ा जाए लेकिन ज़बान से बे साख़्ता बजाए रसूलुल्लाह صلى الله تعالى عليه واله وسلم के नाम के **"अशरफ़ अ़ली"** निकल जाता है ह़ालांकि मुझ को इस बात का इ़ल्म है कि इस त़रह़ दुरुस्त नहीं लेकिन बे इख़्तियार ज़बान से येही कलिमा निकलता है। दो तीन बार जब येही सूरत हुई तो हुज़ूर को अपने सामने देखता हूं और भी चन्द शख़्स हुज़ूर के पास थे लेकिन इतने में मेरी येह ह़ालत हो गई कि मैं खड़ा खड़ा ब वजहे इस के कि रिक़्क़त त़ारी हो गई ज़मीन पर गिर पड़ा और निहायत ज़ोर के साथ एक चीख़ मारी और मुझ को मा'लूम होता था कि मेरे अन्दर कोई त़ाक़त बाक़ी नहीं रही इतने में बन्दा ख़्वाब से बेदार हो गया लेकिन बदन में बदस्तूर बे ह़िसी थी और वोह असरे ना त़ाक़ती बदस्तूर था लेकिन जब ह़ालते बेदारी में कलिमा शरीफ़ की ग़लती पर ख़याल आया तो इस बात का इरादा हुवा कि इस ख़याल को दिल से दूर किया जाए। इस वासित़े कि फिर कोई ऐसी ग़लती न हो जाए। बईं ख़याल बन्दा बैठ गया और फिर दूसरी करवट लेट कर कलिमा शरीफ़ की ग़लती के तदारुक में रसूलुल्लाह صلى الله تعالى عليه واله وسلم पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता हूं लेकिन फिर भी येह कहता हूं اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا وَمَوْلَانَا اَشْرَفَ عَلِيّ ह़ालांकि अब बेदार हूं ख़्वाब में नहीं लेकिन बे इख़्तियार हूं, मजबूर हूं। ज़बान अपने क़ाबू में नहीं।"

इस ख़त़ में येह जो لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَشْرَفَ عَلِيّ رَسُوْلُ اللّٰه और اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا وَمَوْلَانَا اَشْرَفَ عَلِيّ पढ़ने का वाक़िआ़ लिखा हुवा है। इस के जवाब में मौलवी अशरफ़ अ़ली साहि़ब थानवी ने जो इ़बारत लिखी वोह हम इसी रूइदाद मुनाज़रा **"गया"** से नक़्ल करते हैं। मुलाह़ज़ा फ़रमाइये : रूइदाद मुनाज़रा **"गया"** स. 87

"इस वाक़िए़ में तसल्ली थी कि जिस की त़रफ़ तुम रुजूअ़ करते हो वोह بِعَوْنِهٖ تَعَالٰى मुत्तबए सुन्नत है।"

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के नज़दीक "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَشْرَفْ عَلِیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ" और "اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَنَبِیِّنَا وَمَوْلَانَا اَشْرَفْ عَلِیْ" के ख़बीस और नापाक अल्फ़ाज़ कलिमाते कुफ़्र हैं।

ख़्वाब या बेदारी में येह अल्फ़ाज़ पढ़ना, पढ़ने वाले के मग़ज़ूबे इलाही[1] होने की दलील है। जो शख़्स बे इख़्तियार इन को अदा करता है वोह ग़लबए शैतानी से मग़लूब हो कर बे इख़्तियार हुवा है। अल्लाह तआला की तरफ़ इस सल्बे इख़्तियार की निस्बत करना और येह समझना कि अल्लाह तआला ने "अशरफ़ अ़ली थानवी" के मुत्तबए सुन्नत होने की तरफ़ इशारा करने के लिये इस के इख़्तियार को सल्ब कर लिया था और अल्लाह तआला की तरफ़ से येह कलिमाते कुफ़्रिया उस की ज़बान पर जारी कराए गए थे, मज़ीद ग़ज़बे इलाही और अ़ज़ाबे ख़ुदावन्दी का मूजिब है। سُبْحَانَکَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِیْمٌ[2] अहले सुन्नत के नज़दीक हालते मज़कूरा अग़वा और इज़लाले शैतान[3] से है। जिस से तौबा करना फ़र्ज़ है। अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता क़ाइल ऐसी हालत में तौबा से पहले मर जाए तो नारी और जहन्नमी क़रार पाएगा।

(14) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दी उ़-लमा के पेशवा मौलवी हुसैन अ़ली साहिब (साकिनवां भचरां ज़िल्अ़ मियानवाली) के नज़दीक रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते ज़ैद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की मुतल्लक़ा[4] हज़रते ज़ैनब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से बिग़ैर इद्दत गुज़ारे निकाह कर लिया। "बुल ग़तुल हैरान" स. 267 पर है :

---

1. जिस पर अल्लाह तआला का ग़ज़ब हुवा हो। 2. "इलाही पाकी है तुझे, येह बहुत बड़ा बोहतान है।" 3. शैतान के बहकाने और गुमराह करने 4. जिन्हें हज़रते ज़ैद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने तलाक़ दी थी।

"और क़ब्लुद्दुख़ूल त़लाक़ दो तो उस औ़रत पर इ़द्दत लाज़िम न होगी जैसा कि ज़ैनब को त़लाक़ क़ब्लुद्दुख़ूल दी गई और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से बिला इ़द्दत निकाह़ कर लिया।[1]

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के मज़हब में येह कहना हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर इफ़्तरा है कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इ़द्दत गुज़ारने से पहले ह़ज़रते ज़ैनब से निकाह़ कर लिया बल्कि ह़क़ीक़त येह है कि हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام ने उन की इ़द्दत गुज़रने से पहले पैग़ामे निकाह़ तक नहीं भेजा जैसा कि "मुस्लिम शरीफ़" जिल्द 1, स. 460 पर ह़दीस वारिद है :

"لَمَّا انْقَضَتْ عِدَّةُ زَيْنَبَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِزَيْدٍ فَاذْكُرْهَا عَلَيَّ...... اَلْحَدِيْث"[2]

या'नी जब ह़ज़रते ज़ैनब رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا की इ़द्दत पूरी हो गई तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ज़ैद से फ़रमाया कि तुम ज़ैनब को मेरी त़रफ़ से निकाह़ का पैग़ाम दो लिहाज़ा जो शख़्स हुज़ूर पर येह इफ़्तरा करता है, वोह बारगाहे रिसालत का सख़्त तरीन दुश्मन और बद तरीन गुस्ताख़ है।

(15) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दी उ़-लमा के मज़हब में हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम बड़े भाई की सी करनी चाहिये। "**तक़्वियतुल ईमान**" के सफ़ह़ा नम्बर 22 पर है :

---

1 **मुत़ल्लक़ा** औ़रत की इ़द्दत येह है कि अगर वोह ह़ामिला हो तो वज़्ए ह़म्ल (या'नी बच्चे की विलादत हो जाना) और अगर ना बालिग़ा या आइसा (या'नी पचपन साला या इस से ज़ाइद उ़म्र) की है तो उस की इ़द्दत हिजरी सिन के हिसाब से तीन महीने होगी वरना ह़ैज़ वाली हो तो तीन ह़ैज़ होगी।

2 ......مسلم، كتاب النكاح، باب زواج زينب بنت جحش، ص٧٤٥، الحديث:١٤٢٨

"सब इन्सान आपस में भाई हैं। जो बड़ा बुज़ुर्ग हो, वोह बड़ा भाई है। सो उस की बड़े भाई की सी ता'ज़ीम कीजिये।"

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के मज़हब में जिस त़रह़ तमाम ह़ज़राते अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपनी उम्मतों के रूह़ानी बाप हैं, इसी त़रह़ हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी अपनी उम्मत के रूह़ानी बाप हैं और इसी लिये **अल्लाह** तआ़ला ने हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात को "**उम्महातुल मोअमिनीन**" फ़रमाया।[1] लिहाज़ा ह़ज़राते अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बिल खु़सूस ह़ज़रते मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व तकरीम उन की नबुव्वत व रिसालत और **उबुव्वते रूह़ानिय्या**[2] के मुआफ़िक़ की जावेगी। **बड़े भाई की त़रह़ उन की ता'ज़ीम करना, उन की शान को घटाना और उन के ह़क़ में बदतरीन क़िस्म की तौहीन व तन्क़ीस का मुर्तकिब होना है।**

(16) देवबन्दियों का मज़हब

ह़यातुन्नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ मौलवी इस्माईल साहि़ब देहलवी मुसन्निफ़े "**तक़्वियतुल ईमान**" का अ़क़ीदा येह है कि مَعَاذَ اللہ हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मर कर मिट्टी में मिल गए। मुलाह़ज़ा फ़रमाइये : "**तक़्वियतुल ईमान**" स. **34** पर मरक़ूम है : "या'नी मैं भी[3] एक दिन मर कर मिट्टी में मिलने वाला हूं।"[4]

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के नज़्दीक अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बा वुजूदे मौते आ़दी त़ारी होने के ह़याते ह़क़ीक़ी[5] के साथ ज़िन्दा होते हैं और उन के अजसामे करीमा सह़ीह़ व सालिम होते हैं।

---

1. پ۲۱،سورۃ الاحزاب،الآیۃ۶
2. रूह़ानी बाप
3. या'नी नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم
4. अस्ल किताब की इ़बारत बाब "**अ़क्सी इबारात**" में मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।
5. बिल्कुल दुन्यावी ज़िन्दगी की त़रह़

हदीस शरीफ़ में वारिद है :

"اِنَّ اللّٰہَ حَرَّمَ عَلَی الْاَرْضِ اَنْ تَاْکُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِیَاءِ فَنَبِیُّ اللّٰہِ حَیٌّ یُرْزَقُ۔" (مشکوۃ، جلد۱، صفحہ۱۲۱) (1)

लिहाज़ा हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हक़ में येह ए'तिक़ाद रखना कि مَعَاذَ اللّٰہ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मर कर मिट्टी में मिल गए, सरीह गुमराही है और हुज़ूर की तरफ़ मन्सूब कर के येह कहना कि مَعَاذَ اللّٰہ मैं भी मर कर मिट्टी में मिलने वाला हूं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर इफ़्तराए महज़[2] और शाने अक़्दस में तौहीने सरीह है । اَلْعِیَاذُ بِاللّٰہِ

(17) देवबन्दियों का मज़हब

मौलवी मुहम्मद क़ासिम साहिब नानोतवी बानिये मद्रसए देवबन्द के नज़दीक जिस तरह हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुत्तसिफ़ ब हयात बिज़्ज़ात हैं बिल्कुल इसी तरह مَعَاذَ اللّٰہ दज्जाल भी मुत्तसिफ़ ब हयात बिज़्ज़ात है और जिस तरह हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आंख सोती थी, दिल नहीं सोता था इसी तरह दज्जाल की भी आंख सोती है दिल नहीं सोता ।

मुलाहज़ा फ़रमाइये मौलवी साहिबे मज़कूर अपनी किताब **"आबे हयात"** मतबअ़ क़दीमी वाक़ेअ़ देहली, स. **169** पर लिखते हैं :

चुनान्चे, आं हज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का कलाम इस हैचमदान[3] की तस्दीक़ करता है । फ़रमाते हैं :

---

(1) बेशक **अल्लाह** ने ज़मीन पर हराम कर दिया है कि वोह अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बदनों को खाए, इस लिये **अल्लाह** का नबी ज़िन्दा है और उसे रिज़्क़ भी दिया जाता है । مشکاۃ المصابیح، کتاب الصلاۃ، باب الجمعۃ، ۱/۲۶۵، الحدیث:۱۳۶٦

(2) फ़क़त झूटा इल्ज़ाम (3) बे इल्म या'नी क़ासिम नानोतवी

"تَنَامُ عَيْنَایَ وَلَا يَنَامُ قَلْبِیْ"[1] اَوْ كَمَا قَالَ" लेकिन इस क़ियास पर दज्जाल का ह़ाल भी येही होना चाहिये । इस लिये कि जैसे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ब वजहे मन्शाइय्यते अरवाह़े मोअमिनीन[2] जिस की तह़क़ीक़ से हम फ़ारिग़ हो चुके हैं, मुत्तसिफ़ ब ह़यात बिज़्ज़ात हुवे ऐसे ही दज्जाल भी ब वजहे मन्शाइय्यते अरवाह़े कुफ़्फ़ार[3] जिस की त़रफ़ हम इशारा कर चुके हैं, मुत्तसिफ़ ब ह़यात बिज़्ज़ात होगा और इस वजह से उस की ह़यात क़ाबिले इनफ़िकाक न होगी और मौत व नौम में इस्तितार होगा । इन्क़िता़अ़ न होगा और शायद येही वजह मा'लूम होती है कि इब्ने सियाद जिस के दज्जाल होने का सह़ाबा को ऐसा यक़ीन था कि क़सम खा बैठे थे । अपनी नौम का वोही ह़ाल बयान करता है जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी निस्बत इरशाद फ़रमाया या'नी ब शहादते अह़ादीस वोह भी येही कहता था कि "تَنَامُ عَيْنِیْ وَلَا يَنَامُ قَلْبِیْ"

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के अ़क़ीदे में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुत्तसिफ़ ब ह़यात बिज़्ज़ात होना हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ऐसा कमाल है जो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सिवा किसी दूसरे को ह़ासिल नही है, चे जाएका दज्जाले लईन[4] के लिये साबित हो ।

अहले सुन्नत तमाम अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام की ह़यात के क़ाइल हैं मगर बिज़्ज़ाते ह़यात से मुत्तसिफ़ होना हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही की शान है। इसी त़रह़ आंख का सोना और दिल का न सोना भी ऐसी

---

1. ابوداود،كتاب الطهارة،باب الوضوء من النوم،١/ ١٠٠،الحديث:٢٠٢
2. मोअमिनीन की रूह़ों का सबब या वजह
3. कुफ़्फ़ार की रूह़ों का सबब या वजह
4. ला'नती दज्जाल

सिफ़त है जो अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के सिवा किसी दूसरे के लिये किसी दलीले शरई से साबित नहीं। चे जाएका क़ौले दज्जाल को दलीले शरई तस्लीम करते हुवे उस के लिये भी येह वस्फ़े नबुव्वत साबित कर दिया जाए। अहले सुन्नत के मस्लक में इस्लाम ह़यात और मौत कुफ़्र है इस लिये दज्जाल को अगर मन्शाए अरवाह़े कुफ़्फ़ार माना जाए तो वोह मम्बए कुफ़्र होने की वजह से मुत्तसिफ़ ममात बिज़्ज़ात होगा न कि मुत्तसिफ़ ब ह़यात बिज़्ज़ात होगा। **अल ह़ासिल हुज़ूर** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **के ख़ुसूसी अवसाफ़ दज्जाल के लिये साबित करना** مَعَاذَ الله **तन्क़ीसे शाने नबुव्वत**[1] **है।**

(18) देवबन्दियों का मज़हब

(1) "**तक़्वियतुल ईमान**" में मौलवी इस्माईल साह़िब देहलवी ने स. 9 पर लिखा है : "**अल्लाह** के सिवा किसी को न मान और उस से न डर।"

(2) "**तक़्वियतुल ईमान**" के स. 10 पर तह़रीर किया :

"हमारा जब ख़ालिक़ **अल्लाह** है और उस ने हम को पैदा किया तो हम को भी चाहिये कि अपने हर कामों पर उसी को पुकारें और किसी से हम को क्या काम ? जैसे जो कोई एक बादशाह का गुलाम हो चुका तो वोह अपने हर काम का अ़लाक़ा उसी से रखता है दूसरे बादशाह से भी नहीं रखता और किसी चोहड़े चमार का तो क्या ज़िक्र ?"[2]

(3) "**तक़्वियतुल ईमान**" स. 14 पर तह़रीर है :

"उस के दरबार में उन का[3] तो येह ह़ाल है कि जब वोह कुछ हुक्म फ़रमाता है तो वोह सब रो'ब में आ कर बे ह़वास हो जाते हैं।"

(4) "**तक़्वियतुल ईमान**" स. 16 पर लिखते हैं :

---

1 मन्सबे नबुव्वत की शान व अ़ज़मत को घटाना है 2 अस्ल किताब की इ़बारत बाब "**अ़क्सी इ़बारात**" में मुलाह़ज़ा फ़रमाएं। 3 अम्बियाए किराम का

"उस शहनशाह की तो येह शान है कि एक आन में चाहे तो करोड़ों नबी और वली, जिन्न और फ़िरिश्ते, जिब्राईल और मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बराबर पैदा कर डाले।"

(5) "**तक़्वियतुल ईमान**" के स. 22 पर है :

"जिस का नाम **मुहम्मद** या अ़ली है वोह किसी चीज़ का मालिको मुख़्तार नहीं।"(1)

(6) "**तक़्वियतुल ईमान**" के स. 22 पर है :

"रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता।"

अहले सुन्नत का मज़हब

(1)...अहले सुन्नत के नज़्दीक **अल्लाह** के सिवा किसी को न मानना या'नी येह अ़क़ीदा रखना कि सिर्फ़ **अल्लाह** पर ईमान लाना चाहिये और किसी पर ईमान लाना जाइज़ नहीं कुफ़्रे ख़ालिस है। देखिये तमाम उम्मते मुस्लिमा का मुत्तफ़िक़ा अ़क़ीदा है कि जब तक **अल्लाह**, मलाइका(2) आस्मानी किताबों, **अल्लाह** के तमाम रसूलों, यौमे आख़िरत और ख़ैरो शर के मिन्जानिबिल्लाह मुक़द्दर होने(3) और मरने के बा'द उठने पर ईमान न लाए, उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता।

(2)...हर सुन्नी मुसलमान का अ़क़ीदा है कि हमारे तमाम कामों में मुतसर्रिफ़े हक़ीक़ी(4) सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला है लेकिन इस का येह मत़लब नहीं कि **अल्लाह** तआ़ला के नबियों, रसूलों और उस के मुक़र्रब बन्दों से हमारा कोई काम ही न हो, किताब व सुन्नत में बे शुमार नुसूस वारिद हैं, जिन का मफ़ाद येह है कि हमें अपने कामों में महबूबाने ख़ुदावन्दी की त़रफ़ रुजूअ़ करना चाहिये।

---

1 अस्ल किताब की इबारत बाब "**अ़क्सी इबारात**" में मुलाहज़ा फ़रमाएं।
2 फ़िरिश्तों 3 अच्छी या बुरी तक़दीर **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से है
4 हक़ीक़ी तसर्रुफ़ करने वाला

देखिये : अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ (1)
"काश वोह लोग जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया, आप के पास आ जाते।"

दूसरी जगह अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया :

﴿فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ۝﴾ (2)

"अगर तुम नहीं जानते तो अहले ज़िक्र से दरयाफ़्त कर लो।"

देखिये इन दोनों आयतों में अल्लाह तआ़ला ने अपने मुक़र्रब बन्दों से हमारा काम वाबस्ता फ़रमाया है या नहीं ? इस इ़बारत में जो तमाम मा सिवा अल्लाह(3) को चोहड़े चमार से ता'बीर किया गया है, अहले सुन्नत के नज़दीक येह मुक़र्रबीने बारगाहे ईज़दी की शान में बदतरीन गुस्ताख़ी है। نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ ذَالِک

(3) अहले सुन्नत के नज़दीक अम्बियाए किराम या मलाइकए मुक़र्रबीन पर ख़ौफ़ व ख़शिय्यते इलाही का त़ारी होना तो ह़क़ है मगर उन्हें बे ह़वास कहना उन की शान में बे बाकी और गुस्ताख़ी है। اَلْعِيَاذُ بِاللّٰهِ

(4) अहले सुन्नत के नज़दीक ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मिस्ल व नज़ीर के पैदा करने से क़ुदरत व मशिय्यते ईज़दी(4) का मुतअ़ल्लिक़ होना मुह़ाले अ़क़्ली है क्यूंकि ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पैदाइश में तमाम अम्बिया से ह़क़ीक़तन अव्वल हैं और बिअ़्सत में तमाम अम्बिया से आख़िर और ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं। ज़ाहिर है कि जिस त़रह़ अव्वले ह़क़ीक़ी में तअ़द्दुद मुह़ाल बिज़्ज़ात है इसी त़रह़

---

(1) پ ٥، سورۃ النساء، الآیۃ ٦٤ (2) پ ١٧، سورۃ الانبیاء، الآیۃ ٧ (3) अल्लाह के सिवा हर चीज़ (जिस में अम्बियाए किराम, औलियाए उ़ज़्ज़ाम व मलाइकए मुक़र्रबीन भी दाख़िल हैं) (4) अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत

ख़ातमुन्नबिय्यीन में भी तअ़द्दुदे मुमतनिअ़ लिज़्ज़ातिही है और इस बिना पर कुदरत व मशिय्यते खुदावन्दी का नाक़िस होना लाज़िम नहीं आता बल्कि इसी अम्रे मुहाल[1] का क़बीह़ व मज़मूम होना साबित होता है कि वोह इस बात की सलाहिय्यत ही नहीं रखता कि अल्लाह तआ़ला की कुदरत व मशिय्यत इस से मुतअ़ल्लिक़ हो सके।

(5) अहले सुन्नत का मज़हब है कि मिल्क व इख़्तियार बिल इस्तिक़लाल[2] तो ख़ास्सए खुदावन्दी है और मिल्क व इख़्तियारे ज़ाती किसी फ़र्दे मख़्लूक के लिये साबित नहीं लेकिन अल्लाह तआ़ला का दिया हुवा इख़्तियार और उस की अ़ता की हुई मिल्क आ़म इन्सानों के लिये दलाइले शरइय्या से साबित है और येह ऐसी रोशन और बदीही बात है कि जिस के तस्लीम करने में कोई मख़्बूतुल हवास भी तअम्मुल नहीं कर सकता चे जाएका समझदार आदमी इस का इन्कार कर सके।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हक़ में अ़लल इत़्लाक़ येह कह देना कि वोह किसी चीज़ के मालिको मुख़्तार नहीं, शाने अक़्दस में सरीह तौहीन है और उन तमाम नुसूसे शरइय्या और अदल्लाए क़त़इय्या के क़त़अ़न ख़िलाफ़ है जिन से हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये अल्लाह तआ़ला की दी हुई मिल्क और इख़्तियार साबित होता है।

(6) अहले सुन्नत का मस्लक येह है कि मुक़र्रबीने बारगाहे ईज़दी उ़बूदिय्यत के उस बुलन्द मक़ाम पर होते हैं कि उन की ज़वाते कुदसिय्या मज़हरे सिफ़ाते रब्बानी हो जाती हैं और ब मुक़तज़ाए ह़दीसे कुदसी[3] [4] "بِیْ یَسْمَعُ وَبِیْ یُبْصِرُ" उन का देखना, सुनना, चलना,

---

[1] वो चीज़ जो पाई न जा सके [2] हमेशा हमेशा से मालिको मुख़्तार होना
[3] "**ह़दीसे कुदसी**" वोह ह़दीस है जिस के रावी हुज़ूर عَلَیْهِ السَّلَام हों और निस्बत अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ हो। (تیسیر مصطلح الحدیث، الباب الأول، الفصل الرابع، ص۱۲٦)
[4] वोह मेरे ज़रीए सुनता और देखता है। فتح الباری،کتاب الرقاق، باب التواضع،۱۲/۲۹۳،تحت الحدیث:۶۵۰۲

फिरना, इरादा व मशिय्यत सब कुछ **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ मन्सूब होता है। वोह मैदाने तस्लीमो रिज़ा के मर्द होते हैं। उन का चाहना **अल्लाह** का चाहना और उन का इरादा **अल्लाह** का इरादा होता है।

ऐसी सूरत में हुज़ूर सय्यिदुल मुक़र्रबीन नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **के ह़क़ में येह कहना कि "रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता।" अ़ज़मते शाने रिसालत के मनाफ़ी है बल्कि मक़ामे नबुव्वत की तौहीन व तन्क़ीस है। जब रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **सिफ़ाते इलाहिय्या का मज़हरे अतम हैं और उन की मशिय्यत, मशिय्यते ईज़दी का ज़ुहूर है तो इस का पूरा न होना** مَعَاذَ اللّٰه **मशिय्यते ख़ुदावन्दी की नाकामी होगी। येही तौहीने नबुव्वत और कुफ़्रे ख़ालिस है और कमालाते अम्बिया** عَلَيْهِمُ السَّلَام **की तन्क़ीस इसी लिये कुफ़्र है कि कमालाते नबुव्वत क़त़अ़न सिफ़ाते इलाही का ज़ुहूर होते हैं।**

(19) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दी मज़हब में है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'रीफ़ बशर[1] की सी की जाए बल्कि इस में भी इख़्तिसार किया जाए। "**तक़्वियतुल ईमान**" के सफ़ह़ा **35** पर लिख दिया है :

"या'नी किसी बुज़ुर्ग की ता'रीफ़ में ज़बान संभाल कर बोलो और जो बशर की सी ता'रीफ़ हो वोही करो सिवा इस में भी इख़्तिसार ही करो।"

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के नज़दीक हर बुज़ुर्ग की तारीफ़ उस की शान और मर्तबे के लाइक़ की जाएगी ह़त्ताकि ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'रीफ़ बशर की सी होना तो दर कनार मलाइकए मुक़र्रबीन[2] से भी ज़ियादा होगी क्यूंकि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मर्तबा उन से बुलन्दो बाला है।

---

1 आ़म आदमी 2 मुक़र्रब फ़िरिश्तों

(20) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दी उ़-लमा के मज़हब में अम्बिया, रुसुल, मलाइका مَعَاذَاللہ सब नाकारे हैं :"तक्वियतुल ईमान" सफ़्हा 15-16 पर लिख दिया है।

"अल्लाह जैसे ज़बरदस्त के होते हुवे ऐसे आ़जिज़ लोगों को पुकारना कि कुछ फ़ाइदा और नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते मह्ज़ बे इन्साफ़ी है कि ऐसे बड़े शख़्स का मर्तबा ऐसे नाकारा लोगों को साबित कीजिये।"

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के नज़्दीक मह्बूबाने ख़ुदावन्दी अम्बियाए किराम, रुसूल, मलाइकए उ़ज़्ज़ाम के ह़क़ में लफ़्ज़ "नाकारा"बोलना उन की शान में बेहूदा गोई और दरीदा दहनी है। نَعُوْذُ بِاللہِ مِنْ ذٰلِکَ

(21) देवबन्दियों का मज़हब

उ़-लमाए देवबन्द के नज़्दीक अल्लाह तआ़ला की बड़ी मख़्लूक़ अम्बिया व रुसुले किराम عَلَیْھِمُ السَّلَام की शान अल्लाह तआ़ला की बारगाह में مَعَاذَاللہ चोहड़े चमार से भी गिरी हुई है। "**तक्वियतुल ईमान**" के स. **8** पर तह़रीर है : "और येह यक़ीन जान लेना चाहिये कि हर मख़्लूक़ बड़ा हो या छोटा अल्लाह की शान के आगे चमार से भी ज़लील है।"

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के मज़हब में येह इ़बारत ह़ज़राते अम्बियाए किराम व औलियाए इ़ज़ाम की सख़्त तरीन तौहीन का नुमूना है। हर छोटी और बड़ी मख़्लूक़ के मा'ना रुसुले किराम और औलियाए

इज़्ज़ाम का होना मुतअ़य्यिन हो गया क्यूंकि छोटी मख़्लूक़ के लफ़्ज़ से छोटे मर्तबे की कुल मख़्लूक़ाते आ़म्मा और हर "बड़ी मख़्लूक़" के लफ़्ज़ से बड़े मर्तबे की कुल ख़ास मख़्लूक़ के मा'ना बिग़ैर तावील व तअम्मुल के हर शख़्स की समझ में आते हैं। **ज़ाहिर है कि बड़े मर्तबे की ख़ास मख़्लूक़ अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام मलाइकए किराम और औलियाए किराम ही हैं। अब इन्हें बारगाहे ख़ुदावन्दी में مَعَاذَالله चोहड़े चमार से ज़ियादा ज़लील कहना जिस क़िस्म की शदीद तौहीन है, मोहताजे तशरीह नहीं।**

अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआने मजीद में अपने मुक़र्रब बन्दों को (1)﴿عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ﴾ और (2)﴿كان عند الله وجيها﴾ फ़रमा कर इन्हें अपनी बारगाह में बड़ी इ़ज़्ज़त व बुज़ुर्गी वाला और ज़ी वजाहत फ़रमाया है, नीज़ अपने पाक बन्दों को (3)مُنْعَمٌ عَلَيْهِمْ क़रार दे कर और (4)﴿اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ﴾ फ़रमा कर उन की शान बढ़ाई है। लेकिन इस के बिल मुक़ाबिल देवबन्दी उ़-लमा ख़ुसूसन साहिबे तक़्वियतुल ईमान ने इन्हें चोहड़े चमार से ज़ियादा ज़लील क़रार दे कर उन की तौहीन व तन्क़ीस की है। अहले सुन्नत इस इ़बारत को गन्दगी और नजासत तसव्वुर करते हैं और ऐसे अ़क़ीदे को कुफ़्रे ख़ालिस समझते हैं। اَعَاذَنَا اللّٰهُ مِنْهُ

(22) देवबन्दियों का मज़हब

हज़राते उ़-लमाए देवबन्द के नज़दीक مَعَاذَالله हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक गंवार की बात सुन कर बेहवास हो गए। इसी **"तक़्वियतुल ईमान"** के स. 31 पर लिखा है :

---

(1) बन्दे हैं इ़ज़्ज़त वाले (پ١٧،سورة الانبياء،الآية٢٦) (2) मूसा अल्लाह के यहां आबरू वाला है। (پ٢٢،سورة الاحزاب،) (3) जैसा कि پ٥،سورة النساء،الآية٦٩ में है.... जिन पर अल्लाह ने फ़ज़्ल किया या'नी अम्बिया और सिद्दीक़ और शहीद और नेक लोग। (4) बेशक अल्लाह के यहां तुम में ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोह जो तुम में ज़ियादा परहेज़गार है (پ٢٦،سورة الحجرات،الآية١٣)

سُبْحٰنَ اللّٰہ अशरफ़ुल मख़्लूक़ात मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तो उस के दरबार में येह हालत है कि एक गंवार के मुंह से इतनी बात सुनते ही मारे दहशत के बेहवास हो गए।

अहले सुन्नत का मज़हब

एहले सुन्नत का मज़हब येह है कि अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام के हवास तमाम इन्सानों के हवास से अक़्वा और आ'ला हैं। **सय्यिदुल अम्बिया صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हक़ में येह कहना कि हुज़ूर एक गंवार की बात सुन कर बेहवास हो गए बारगाहे नबुव्वत में सख़्त तरीन तौहीन व तन्क़ीस है।**

(23) देवबन्दियों का मज़हब

उ-लमाए देवबन्द के मज़हब में फ़िरिश्तों और रसूलों को ताग़ूत कहना जाइज़ है। मौलवी हुसैन अ़ली शाकिन वां भचरां अपनी तफ़्सीर "**बुल ग़तुल हैरान**" के सफ़हा 43 पर फ़रमाते हैं :

और ताग़ूत का मा'ना [1] "کُلُّمَا عُبِدَ مِنْ دُوْنِ اللّٰہِ فَھُوَ الطَّاغُوْت" इस मा'ना ब मूजिब जिन्न और मलाइका और रसूलों को ताग़ूत बोलना जाइज़ होगा।"[2]

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के नज़दीक फ़िरिश्तों और रसूलों को "**ताग़ूत**"[3] कहना उन की सख़्त तौहीन है और मलाइका व रुसुले किराम की तौहीन करने वाला ख़ारिज अज़ इस्लाम है।

(24) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दी हज़रात का मज़हब येह है कि सरीह झूट की हर क़िस्म से नबी का मा'सूम होना ज़रूरी नहीं है। मौलवी मुहम्मद क़ासिम साहिब नानोतवी, बानिये मद्रसए देवबन्द अपनी किताब

---

1 तर्जमा : अल्लाह के सिवा जो भी पूजा जाए, वोह ताग़ूत है। 2 .....अस्ल किताब की इबारत बाब "अक्सी इबारात" में मुलाहज़ा फ़रमाएं। 3 ताग़ूत का मा'ना : शैतान, गुमराहों का सरदार (फ़ीरोज़ुल लुग़ात, स. 872, फ़ीरोज़सन्ज़)

"**तस्फ़ियतुल अ़क़ाइद**" मत़बूआ़ मुजतबाई के स. 25 पर फ़रमाते हैं :

1 : फिर दरोग़े सरीह़[1] भी कई त़रह़ पर होता है, जिन में से हर एक का हुक्म यक्सां नहीं, हर क़िस्म से नबी को मा'सूम होना ज़रूरी नहीं।

2 : बिल जुम्ला अ़लल उ़लूमे किज़्ब को[2] मनाफ़िये शाने नबुव्वत, बईं मा'ना समझना कि येह मा'सिय्यत है और अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام मआ़सी से मा'सूम हैं, ख़ाली ग़लती से नहीं।

(तस्फ़ियतुल अ़क़ाइद, स.28)[3]

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के नज़दीक ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام हर क़िस्म के किज़्ब व मआ़सी से अ़लल उ़मूम मा'सूम हैं और इन के ह़क़ में किसी मा'सिय्यत का तसव्वुर या किसी क़िस्म के दरोग़े सरीह़ को इन के लिये साबित करना इ़ज़्ज़त व नामूसे रिसालत पर बद तरीन ह़म्ला है।

(25) देवबन्दियों का मज़हब

ह़ज़राते अकाबिरे देवबन्द के नज़दीक अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام अपनी उम्मत से सिर्फ़ इ़ल्म ही में मुमताज़ होते हैं। अ़मली इम्तियाज़ उन्हें ह़ासिल नहीं होता। मौलवी मुह़म्मद क़ासिम साहिब नानोतवी, बानिये मद्रसए देवबन्द अपनी किताब "**तहज़ीरुन्नास**" में स. 5 पर तह़रीर फ़रमाते हैं :

"अम्बिया अपनी उम्मत से अगर मुमताज़ होते हैं तो उ़लूम ही में मुमताज़ होते हैं। बाक़ी रहा अ़मल इस में बसा अवक़ात ब ज़ाहिर उम्मती मसावी हो जाते हैं बल्कि बढ़ जाते हैं।"[4]

---

1 वाज़ेह़ झूट 2 मुत़लक़न झूट को

3-4 अस्ल किताब की इ़बारत बाब "**अ़क्सी इ़बारात**" में मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के मज़हब में अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपनी उम्मत से जिस त़रह़ इल्म में मुमताज़ होते हैं इसी त़रह़ अ़मल में भी पूरी इम्तियाज़ी शान रखते हैं। जो शख़्स अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इस इम्तियाज़ का मुन्किर है, वोह शाने नबुव्वत में तख़्फ़ीफ़ का मुर्तकिब है।

(26) देवबन्दियों का मज़हब

उ़-लमाए देवबन्द **अल्लाह** तआ़ला के छोटे बड़े सब बन्दों को बे ख़बर और नादान कहते हैं। देखिये **"तक़्वियतुल ईमान"** स. **13** पर लिखा है :

"इन बातों में सब बन्दे बड़े हों या छोटे सब यक्सां बे ख़बर और नादान हैं।"

अहले सुन्नत का मज़हब

अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को बे ख़बर और नादान कहना बारगाहे नबुव्वत में सख़्त दरीदा दहनी है और ऐसा कहना बदतरीन जहालत व गुमराही है।

(27) देवबन्दियों का मज़हब

ह़ज़राते उ़-लमाए देवबन्द, अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अपनी उम्मतों का सरदार किन मा'नों में मानते हैं। **"तक़्वियतुल ईमान"** स. **35** पर लिखा है।

"जैसा हर क़ौम का चौधरी और गाऊं का ज़मीनदार, सो इन मा'नों को हर पैग़म्बर अपनी उम्मत का सरदार है।"

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत का मस्लक येह है कि अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अपनी उम्मत पर वोह सरदारी ह़ासिल है जो किसी मख़्लूक़ के लिये साबित करना तौहीने रिसालत है।

(28) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दी ह़ज़रात के नज़्दीक मुफ़स्सिरीन झूटे हैं। मौलवी हुसैन साहिब शागिर्दे रशीद मौलवी रशीद अह़मद साहिब गंगोही "**बुल ग़तुल ह़ैरान**" स. **15** पर लिखते हैं :

"﴿اُدْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا﴾(1) बाब से मुराद मस्जिद का दरवाज़ा है जो कि नज़्दीक थी और बाक़ी तफ़्सीरों का किज़्ब है।"

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के अ़क़ीदे में तफ़्सीरों को किज़्ब कहने वाला खुद कज़्ज़ाब(2) है।

(29) देवबन्दियों का मज़हब

उ़-लमाए देवबन्द के नज़्दीक मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल वह्हाब और उस के मुक़्तदी वहाबियों के अ़क़ाइद उ़म्दा थे।

"**फ़तावा रशीदिय्या**" ह़िस्सा अव्वल, स. **111** पर है :

सुवाल : वहाबी कौन लोग हैं और **अ़ब्दुल वह्हाब नजदी** का क्या अ़क़ीदा था और कौन मज़हब था और वोह कैसा शख़्स था और **अहले नज्द** के अ़क़ाइद में और **सुन्नी ह़नफ़ियों** के अ़क़ाइद में क्या फ़र्क़ है ?

अल जवाब : मुह़म्मद बिन **अ़ब्दुल वह्हाब** के मुक़्तदियों को **वहाबी** कहते हैं। उन के अ़क़ाइद उ़म्दा थे और मज़हब उन का ह़म्बली था अलबत्ता उन के मिज़ाज में शिद्दत थी मगर वोह और उन के मुक़्तदी अच्छे हैं मगर हां जो ह़द से बढ़ गए उन में फ़साद आ गया और अ़क़ाइद सब के मुत्तह़िद हैं। आ'माल में फ़र्क़ ह़नफ़ी, शाफ़ेई, मालिकी, ह़म्बली का है। **रशीद अह़मद गंगोही**

(1) پ۱،سورۃ البقرۃ،الآیۃ۵۸ (2) बहुत बड़ा झूटा

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के नज़दीक मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब बाग़ी ख़ारिजी बे दीन व गुमराह था उस के अक़ाइद को उ़म्दा कहने वाले उसी जैसे दुश्मनाने दीन, ज़ाल व मुज़िल[1] हैं।

(30) देवबन्दियों का मज़हब

मौलवी रशीद अह़मद साहिब गंगोही पेश्वा उ़-लमाए देवबन्द के नज़दीक किताब "**तक़्वियतुल ईमान**" निहायत उ़म्दा किताब है। इस के सब मसाइल सह़ीह़ हैं। इस का रखना, पढ़ना और अ़मल करना ऐन इस्लाम है। मुलाह़ज़ा फ़रमाइये : "**फ़तावा रशीदिय्या**" ह़िस्सा अव्वल, स. **113** ता **114** :

सुवाल : "**तक़्वियतुल ईमान**" में कोई मस्अला ऐसा भी है जो क़ाबिले अ़मल नहीं या कुल इस के मसाइल सह़ीह़ हैं ?

अल जवाब : बन्दे के नज़दीक सब मसाइल इस के सह़ीह़ हैं। तमाम "**तक़्वियतुल ईमान**" पर अ़मल करे।

इसी त़रह़ "**फ़तावा रशीदिय्या**" ह़िस्सा अव्वल, स. **60** पर है : "और किताब "**तक़्वियतुल ईमान**" निहायत उ़म्दा किताब है और रद्दे शिर्क व बिदअ़त में ला जवाब है। इस्तिद्लाल इस के बिल्कुल किताबुल्लाह और अह़ादीस से हैं। इस का रखना और पढ़ना और अ़मल करना ऐन इस्लाम है।"

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत, इस्माईल साहिब देहलवी की किताब "**तक़्वियतुल ईमान**" को तमाम अम्बियाए किराम और औलियाए इ़ज़्ज़ाम की तौहीन व तन्क़ीस का मजमूआ़ क़रार देते हैं। दर ह़क़ीक़त येह मुह़म्मद बिन **अ़ब्दुल वह्हाब** नजदी की किताब "**अत्तौह़ीद**" का

---

1 ख़ुद भी गुमराह और दूसरों को भी गुमराह करने वाले

खुलासा है, जिस में तमाम उम्मते मुह़म्मदिय्या علىٰ صاحِبِهَا الصَّلوٰةُ وَالسَّلام को काफ़िर व मुशरिक कहा गया है और दिल खोल कर ख़ुदा के मुक़द्दस और मह़बूब बन्दों की शान में गुस्ताख़ियां की गई हैं।

(31) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दी उ़-लमाए किराम **"या शैख़ अ़ब्दल क़ादिर"** कहने वालों को काफ़िर, मुर्तद, मलऊ़न, जहन्नमी कहते हैं। फिर जो शख़्स जान बूझ कर इन्हें ऐसा न कहे उस को भी वैसा ही काफ़िर, मुर्तद, मलऊ़न, जहन्नमी और ज़ानी क़रार देते हैं। और उन के निकाह़ को बाति़ल समझते हैं।

मुलाह़ज़ा फ़रमाइये : फ़तावा मुन्दरजा **"बुल ग़तुल ह़ैरान"** स. 2...

"या शैख़ अ़ब्दल क़ादिर या ख़्वाजा शम्सुद्दीन पानीपती, चुनान्चे, अ़वाम मी गोयन्द शिर्क व कुफ़्र अस्त"

फ़तवा : मौलाना मुर्तज़ा ह़सन साह़िब, नाज़िमे ता'लीमे देवबन्द ब ह़वाला पर्चा अख़्बार अमृतसर, 114 अक्तूबर 1927 ई.

"इन अ़क़ाइदे बाति़ला पर मुत्तलअ़ हो कर इन्हें काफ़िर, मुर्तद, मलऊ़न, जहन्नमी न कहने वाला भी वैसा ही मुर्तद व काफ़िर है फिर इस को जो ऐसा न समझे वोह भी ऐसा ही है।

"كوكب يمانى على اولاد الزانى"، "كوكب يمانين على الجعلان والخراطين"، "توضيع المراد لمن تخبط فى الاستمداد"

इन किताबों में साबित किया है कि ऐसे अ़क़ाइद रखने वाले काफ़िर हैं। इन का निकाह़ कोई नहीं। सब ज़ानी हैं।

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के नज़दीक सिह़्ह़ते ए'तिक़ाद के साथ "या शैख़ अ़ब्दल क़ादिर जीलानी" और इस क़िस्म के तमाम अल्फ़ाज़े निदा कहना जाइज़ हैं। जो शख़्स कहने वालों को

काफ़िर, मुर्तद, मलऊ़न, जहन्नमी और ज़ानी क़रार देता है वोह अकाबिर औलियाए उम्मत की शान में गुस्ताख़ी कर के ख़ुद मलऊ़न, जहन्नमी और ज़ानी है।

(32) देवबन्दियों का मज़हब

उ़-लमाए देवबन्द के नज़दीक बुज़ुर्गाने दीन को अल्लाह तआ़ला का बन्दा और उस की मख़्लूक़ मान कर और उन के लिये अल्लाह की दी हुई कुव्वत तस्लीम कर के उन्हें अपना सिफ़ारिशी समझने वाले और उन की नज़्रो नियाज़ करने वाले (गोया सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से ले कर आज तक के तमाम मुसलमान, औलिया, उ़-लमा, मुज्तहिदीन, सालिह़ीन) सब काफ़िर व मुर्तद और अबू जह्ल की त़रह़ मुशरिक हैं। "**तक्वियतुल ईमान**" सफ़्ह़ा **4** पर मरक़ूम है :

"काफ़िर भी अपने बुतों को अल्लाह के बराबर नहीं जानते थे बल्कि उसी की मख़्लूक़ और उसी का बन्दा समझते थे और इन को उस के मुक़ाबिल की त़ाक़त साबित नहीं करते थे मगर येही पुकारना और मन्नतें माननी और नज़्रो नियाज़ करनी और इन को अपना वकील और सिफ़ारिशी समझना येही उन का कुफ़्र व शिर्क था। सो जो कोई किसी से येह मुआ़मला करे गो कि उस को अल्लाह का बन्दा व मख़्लूक़ ही समझे, सो अबू जह्ल और वोह शिर्क में बराबर है।"

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के नज़दीक ऐसे लोगों को काफ़िर व मुशरिक कहना ख़ुद कुफ़्रो शिर्क के वबाल में मुब्तला होना है। मुक़र्रबीने बारगाहे ख़ुदावन्दी के लिये मुक़य्यद बिल इज़्ने तसर्रुफ़, त़ाक़त व क़ुदरत और सिफ़ारिश साबित करना[1] ह़क़ और दुरुस्त है और इस का इन्कार मूजिबे ज़लाल और बाइ़से नकाल[2] है।

---

1 या'नी इन्हें येह त़ाक़त व तसर्रुफ़ और सिफ़ारिश का इख़्तियार अल्लाह ने दिया है। 2 गुमराही और अ़ज़ाब का सबब है।

(33) देवबन्दियों का मज़हब

अकाबिरे उ़-मलाए देवबन्द के ह़स्बे ज़ैल अ़क़ाइद व मसाइल मुन्दरिजए ज़ैल इबारात व ह़वाला जात **मन्क़ूला** में मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

(1) रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़ल्मे ग़ैब का अ़क़ीदा रखना सरीह़ शिर्क है।

(2) उ़र्स का इल्तिज़ाम करे या न करे, बहर ह़ाल नाजाइज़ है।

(3) तारीख़े मुअ़य्यन पर क़ब्रों पर जम्अ़ होना बिग़ैर लग़विय्यात के भी गुनाह है।

(4) मुत्तबेए़ सुन्नत और दीनदार को **वहाबी** कहते हैं।

(5) तीजा वग़ैरा नाजाइज़ है। क़ुरआन शरीफ़ व कलिमए त़य्यिबा और दुरूद शरीफ़ पढ़ कर सवाब पहुंचाना और चने तक़्सीम करना सब नाजाइज़ है।

(6) चालीसवां और ग्यारहवीं भी बिदअ़त है।

(7) खाने या शीरिनी वग़ैरा पर फ़ातिह़ा पढ़ना बिदअ़त और गुमराही है और ऐसा करने वाले सब बिदअ़ती और गुमराह हैं।

ह़वाला जात मुलाह़ज़ा फ़रमाएं ....

"**फ़तावा रशीदिय्या**" ह़िस्सा दुवुम, स. 141 पर है...

(1) और येह अ़क़ीदा रखना कि आप को इ़ल्मे ग़ैब था, सरीह़ शिर्क है।

(2) उ़र्स का इल्तिज़ाम करे या न करे बिदअ़त और नादुरुस्त है।

(3) तअ़य्युने तारीख़ से क़ब्रों पर इजतिमाअ़ करना गुनाह है ख़्वाह और लग़विय्यात हों या न हों।

(4) इस वक़्त और इन अत़राफ़ में वहाबी मुत्तबेए़ सुन्नत और दीनदार को कहते हैं।

(5) नीज़ "**फ़तावा रशीदिय्या**" ह़िस्सा अव्वल, स. 101 पर है :

"क्या फ़रमाते हैं उ़-लमाए दीन व मुफ़्तियाने शर्ए मतीन इस सूरत में कि फ़ी ज़मानिना रवाज है कि जब कोई मर जाता है तो उस के अ़ज़ीज़ो अक़ारिब उस रोज़ या दूसरे या तीसरे रोज़ या किसी और रोज़ जम्अ़ हो कर और मस्जिद या किसी और मकान में क़ुरआन शरीफ़ व कलिमए त़य्यिबा और दुरूद शरीफ़ पढ़ कर बिला तअ़य्युने शुमार सवाब उस पढ़े हुवे का मुतवफ़्फ़ा[1] को बख़्शते हैं और चने वग़ैरा तक़्सीम करते हैं तो इस त़रह़ जम्अ़ होना और क़ुरआने मजीद वग़ैरा पढ़ना और पढ़वाना दुरुस्त है या नहीं ? بَيِّنُوْا بِالْكِتَابِ تُوْجَرُوْا فِيْ يَوْمِ الْحِسَابِ[2] मुज़य्यन ब महर[3] फ़रमाएं ।

अल जवाब : सूरते मसऊला का येह है कि मुजतमिअ़ होना अ़ज़ीज़ो अक़ारिब वग़ैरुहुम का वासिते़ तीसरे रोज़ बिदअ़त व मकरूह है । **शरअ़ शरीफ़** में इस की कुछ अस्ल नहीं ।

(6) इसी त़रह़ "**फ़तावा रशीदिय्या**" ह़िस्सा सिवुम, स. 92 पर है :

सुवाल : मरने के बा'द चालीस रोज़ तक रोटी मुल्ला को देना दुरुस्त है या नहीं ?

अल जवाब : चालीस रोज़ तक रोटी की रस्म कर लेना बिदअ़त है । ऐसे ही ग्यारहवीं भी बिदअ़त है । बिला पाबन्दिये रस्म व क़ुयूद ईसाले सवाब मुस्तह़सन है ।

फ़क़त़ واللہ تعالیٰ اعلم । बन्दा **रशीद अह़मद गंगोही**

(7) इस के इ़लावा "**फ़तावा रशीदिय्या**" ह़िस्सा दुवुम में स. 150 पर है :

मस्अला : फ़ातिह़ा का पढ़ना खाने पर या शीरीनी पर बरोज़े जुमा'रात के दुरुस्त है या नहीं ?

अल जवाब : फ़ातिह़ा खाने या शीरीनी पर पढ़ना बिदअ़ते ज़लालत है । हरगिज़ न करना चाहिये । फ़क़त़ रशीद अह़मद गंगोही

---

1. फ़ौतशुदा 2. किताब से बयान करो और क़ियामत के दिन अज्र पाओ ।
3. मोहर लगा कर ज़ीनत बख़्शें ।

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत व जमाअत के अ़क़ाइद ह़स्बे ज़ैल हैं।

(1) ब ए'लामे खु़दावन्दी[1] रसूलों के लिये इ़ल्मे ग़ैब ह़ासिल होने का अ़क़ीदा ऐन ईमान है।

(2) अहले सुन्नत के नज़दीक बिग़ैर वुजूबे इल्तिज़ाम के अ़क़ीदे के इल्तिज़ाम के साथ उ़र्स करना जाइज़ है और बिला इल्तिज़ाम भी जाइज़ है।[2]

(3) तारीखे़ मुअ़य्यन पर मज़ाराते औलियाउल्लाह पर मुसलमानों की ह़ाज़िरी और बुज़ुर्गों की रूह़ानिय्यत से फ़ैज़ ह़ासिल करना अहले सुन्नत के अ़क़ाइद की रू से न सिर्फ़ जाइज़ बल्कि मुस्तह़सन है बशर्त़ येह कि वहां फ़िस्क़ो फ़ुजूर और मा'सिय्यत न हो।

(4) अहले सुन्नत के नज़दीक मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल वह्हाब के मुत्तबेईन को वहाबी कहते हैं। जिन के अ़क़ाइद की रू से सिर्फ़ वोही लोग मुसलमान हैं जो उन के हम मस्लक और हम मशरब हों। बाक़ी तमाम मुसलमानों को वोह काफ़िर व मुशरिक और मुबाहुद्दम[3] कहते हैं।

(5) अहले सुन्नत के नज़दीक तीजा वग़ैरा और क़ुरआन शरीफ़ व कलिमए त़य्यिबा व दुरूद शरीफ़ पढ़ कर इस का सवाब अरवाहे़ मोअमिनीन को पहुंचाना और चने तक़्सीम करना सब जाइज़ और मूजिबे रह़मत व बरकत है बशर्त़ येह कि येह उमूर खु़लूसे ए'तिक़ाद और नेक निय्यती से किये जाएं।[4]

(6) और (7) चालीसवां, ग्यारहवीं शरीफ़ और खाने या शीरीनी वग़ैरा पर फ़ातिह़ा पढ़ना सब जाइज़ और बाइ़से अज्रो सवाब है और ऐसा करने वाले मुसलमान सह़ीहुल अ़क़ीदा अहले

---

(1) अल्लाह तआ़ला के बताने से (2) या'नी उ़र्स को मुस्तह़ब समझ कर करना मुत़लक़न जाइज़ है अलबत्ता इसे वाजिब समझना ग़लत़ी है और मुसलमान इसे वाजिब समझते भी नहीं। (3) जिन का क़त्ल जाइज़ हो (4) या'नी इन्हें मुस्तह़ब समझ कर बजा लाए, वाजिब न समझे।

सुन्नत व जमाअ़त हैं। इन कामों को बिदअ़त क़रार देना और इन कामों के करने वाले सुन्नी मुसलमान को बिदअ़ती कहना सख़्त गुनाह और बिदअ़त व ज़लालत है।

(34) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दी साहिबान के नज़दीक बिदअ़ती के पीछे नमाज़ मकरूहे तहरीमा है : "**फ़तावा रशीदिय्या**" हिस्सा सिवुम, स. **47** पर है :

सुवाल : बिदअ़ती के पीछे नमाज़ जाइज़ है या नहीं ?

अल जवाब : मकरूहे तहरीमा है (فی در المختار ،باب الامامۃ) واللہ تعالیٰ اعلم۔

बन्दा रशीद अह़मद गंगोही عُفِیَ عَنْہُ

....और इसी "**फ़तावा रशीदिय्या**" हिस्सा सिवुम के सफ़ह़ा **50** ता **51** पर है :

सुवाल : जुमुआ की नमाज़ जामेअ़ मस्जिद में बा वुजूद येह कि इमाम बद अ़क़ीदा है, पढ़े या दूसरी जगह पढ़ ले ?

अल जवाब : जिस के अ़क़ीदे **दुरुस्त** हों उस के पीछे नमाज़ पढ़नी चाहिये।

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत का मस्लक येह है कि उ़र्स व मीलाद करने वालों और खाने या शीरीनी वग़ैरा पर फ़ातिह़ा पढ़ने वालों और ग्यारहवीं करने वालों को बिदअ़ती कहना और इन के पीछे नमाज़ पढ़ने को मकरूहे तहरीमा जानना सख़्त गुनाह और बदतरीन क़िस्म की गुमराही है।

अहले सुन्नत के नज़दीक फ़ी ज़माना उ़र्स व फ़ातिह़ा करने वालों ही के पीछे नमाज़ पढ़ना सहीह है। इन के मुख़ालिफ़ीने मज़कूरैन के पीछे जाइज़ नहीं।

(35) देवबन्दियों का मज़हब

अकाबिरे ह़ज़राते उ़-लमाए देवबन्द के नज़दीक कोई मजलिसे मीलाद और कोई उ़र्स किसी ह़ाल में दुरुस्त नहीं। मौलवी रशीद

अह़मद साहिब गंगोही "**फ़तावा रशीदिय्या**" ह़िस्सा 2 स. 150 पर इरक़ाम फ़रमाते हैं :

सुवाल : मस्अला इन्इक़ादे मजलिसे मीलाद बदूने क़ियाम ब रिवायते सह़ीह़ा दुरुस्त है या नहीं ? (1)بَیِّنُوْا وَتُوْجَرُوْا

रक़ीमा : नियाज़ मुह़म्मद इम्तियाज़ अ़ली, त़ालिबे इल्म मद्रसा क़स्बा सहनपूर, जवाब त़लब मअ़ ह़वाला किताब फ़क़त़

अल जवाब : इन्इक़ादे मजलिसे मीलाद बहर ह़ाल नाजाइज़ है । तदाइये अम्रे **मन्दूब**(2) के वासित़े मन्अ़ है ।

फ़क़त़ واللہ تعالٰی اعلم

अगर पढ़ोगे तो ह़वालए कुतुब मा'लूम हो जाएंगे, न पढ़ोगे तो तक़्लीद से अ़मल करना फ़क़त़ वस्सलाम

कतबा : अल अह़क़र(3) रशीद अह़मद गंगोही

सुवाल : जिस उ़र्स में सिर्फ़ कुरआन शरीफ़ पढ़ा जाए और तक़्सीमे शीरीनी हो, जाइज़ है या नहीं ?

अल जवाब : किसी उ़र्स और मौलूद शरीफ़ में शरीक होना दुरुस्त नहीं और कोई सा उ़र्स और मौलूद दुरुस्त नहीं ।

फ़क़त़ واللہ تعالٰی اعلم (बन्दा रशीद अह़मद गंगोही عفی عنہ)

मस्अला : मह़फ़िले मीलाद में जिस में रिवायाते सह़ीह़ा पढ़ी जाएं और लाफ़ो गुज़ाफ़(4) और रिवायाते मौज़ूआ़ और काज़िबा न हों, शरीक होना कैसा है ?

अल जवाब : नाजाइज़ है ब सबब और वुजूह के ।

फ़क़त़ रशीद अह़मद (फ़तावा रशीदिय्या, ह़िस्सा, 2 स. 155)

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के मज़हब में मजलिसे मीलादे पाक अफ़्ज़ल तरीने मन्दूबात(5) और आ'ला तरीन मुस्तह़सनात से है और

---

1 ऐसी मीलाद की मजलिसे मुनअ़क़्क़िद करना जिस में क़ियामे ता'ज़ीमी न हो और अह़ादीस व वाक़िआ़त भी दुरुस्त बयान किये जाएं, क्या दुरुस्त है ?

2 मुस्तह़ब अ़मल 3 ह़क़ीर तरीन शख़्स 4 बेहुदा सराई 5 मुस्तह़ब आ'माल में अफ़्ज़ल तरीन

आ'रासे[1] बुज़ुर्गाने दीन भी अहले सुन्नत के नज़दीक मिन जुमला मुस्तह़ब्बात हैं। **जो शख़्स येह कहता है कि "बुज़ुर्गाने दीन के उ़र्स में कोई लग़्विय्यत और अम्रे ममनूअ़ न हो तब भी नाजाइज़ और बिदअ़त है" वोह बुज़ुर्गाने दीन का सख़्त मुआ़निद[2] और इन के फ़ुयूज़ो बरकात से मह़रूम और ख़ाइबो ख़ासिर है।**

इसी त़रह़ मीलाद शरीफ़ को बहर ह़ाल नाजाइज़ व बिदअ़त क़रार देना ह़त्ताकि सलाम व क़ियाम न हो और रिवायाते मौज़ूआ़ न हों बल्कि सह़ीह़ रिवायतों के साथ मीलाद शरीफ़ पढ़ा जाए तब भी उसे नाजाइज़ और बिदअ़त व ह़राम कहना अहले सुन्नत के नज़दीक बारगाहे रिसालत से बुग़्ज़ो इनाद की रोशन दलील है।

(36) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दी उ़-लमा के नज़दीक ब रिवायाते सह़ीह़ा मुह़र्रम में ह़ज़राते ह़सनैन رضی اللہ تعالٰی عنہما की शहादत का बयान, शरबत और दूध पिलाना, सबील लगाना सब ह़राम है। मुलाह़ज़ा फ़रमाइये, "**फ़तावा रशीदिय्या**" ह़िस्सा सुवुम, स. **113**

सुवाल : मुह़र्रम में अ़शरह वग़ैरा के रोज़ शहादत का बयान करना ब रिवायते सह़ीह़ा या बा'ज़ ज़ईफ़ा भी व नीज़ सबील लगाना, चन्दा देना और शरबत, दूध बच्चों को पिलाना दुरुस्त है या नहीं ?

अल जवाब : मुह़र्रम में ज़िक्रे शहादते ह़सनैन علیہما السلام करना अगर्चे ब रिवायाते सह़ीह़ा हो या सबील लगाना, शरबत पिलाना या चन्दा सबील और शरबत में देना सब ना दुरुस्त और तशब्बोहे रवाफ़िज़ की वजह से ह़राम है।[3]

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के मस्लक में रिवायाते सह़ीह़ा के साथ मुह़र्रम वग़ैरा में ह़ज़राते ह़सनैन رضی اللہ تعالٰی عنہما का ज़िक्रे शहादत

1. उ़र्स की जम्अ़ 2. सख़्त दुश्मन 3. अस्ल किताब की इबारत बाब "**अ़क्सी इबारात**" में मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

बाइसे रह़मत व बरकत है। इसी लिये शुहदाए किराम को ईसाले सवाब के लिये शरबत व दूध वग़ैरा पिलाना सब जाइज़ और मुस्तह़्सन है।

तशब्बोह बिर्रवाफ़िज़[1] की आड़ ले कर इन उमूरे मुस्तह़्सना को नाजाइज़ व ह़राम कहना मुसलमानों को ह़ुसूले ख़ैरो बरकत से मह़रूम रखना है।

(37) देवबन्दियों का मज़्हब

अकाबिरे उ़-लमाए देवबन्द के मज़्हब में हिन्दूओं के सूदी रूपे से जो पानी पियाव (सबील) लगाई जाए उस का पानी पीना मुसलमानों के लिये जाइज़ है। देखिये "फ़तावा रशीदिय्या" ह़िस्सा **3** सफ़्ह़ा नम्बर **114** पर है :

सुवाल : हिन्दू जो पियाव पानी कि लगाते हैं सूदी रूपिया सर्फ़ कर के, मुसलमानों को उस का पानी पीना दुरुस्त है या नहीं ?

अल जवाब : उस पियाओ से पानी पीना मुज़ाइक़ा नहीं। फ़क़त् واللہ تعالیٰ اعلم [2] (रशीद अह़मद गंगोही عفی عنہ)

देवबन्दी ह़ज़रात के मस्लक में हिन्दूओं की होली और दीवाली की पूरियां वग़ैरा मुसलमानों के लिये खाना ह़लाले त़य्यिब है। "फ़तावा रशीदिय्या" ह़िस्सा दुवुम, स. **123** पर मरक़ूम है :

मस्अला : हिन्दू तहवार होली या दीवाली में अपने उस्ताद या ह़ाकिम या नोकर को खेलें या पूरी या और कुछ खाना बत़ौरे तौह़फ़ा भेजते हैं इन चीज़ों का लेना और खाना उस्ताद या ह़ाकिम व नौकर मुसलमान को दुरुस्त है या नहीं।

अल जवाब : दुरुस्त है फ़क़त्।[3]

---

1. शीओं से मुशाबहत
2. -3. अस्ल किताब की इ़बारत बाब "अ़क्सी इ़बारात" में मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के नज़दीक येह अम्र अहले बैते अत़हार खुसूसन सय्यिदुना इमाम हुसैन رضی اللہ تعالٰی عنہ के साथ अ़दावते क़ल्बी की बय्यिन दलील है कि इमाम हुसैन رضی اللہ تعالٰی عنہ के फ़ातिह़ा के शरबत को तशब्बोह बिर्रवाफ़िज़ की आड़ ले कर ह़राम कहा जाए और इस के बिल मुक़ाबिल तशब्बोह बिल हुनूद[1] से आंखें बन्द कर के हिन्दूओं के मुशरिकाना तहवार होली, दीवाली की पूरी कचोरी को जाइज़ व ह़लाल क़रार दिया जाए।

नीज़ अहले सुन्नत इस बात को अहले बैते रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के साथ बद तरीन दुश्मनी तसव्वुर करते हैं कि इमामे हुसैन رضی اللہ تعالٰی عنہ को ईसाले सवाब के लिये लगाई हुई सबील के पानी को नाजाइज़ समझा जाए और इस के मुक़ाबले में हिन्दूओं के सूदी रूपे से लगाए हुवे पियाव का पानी ह़लाले त़य्यिब जाइज़ और पाक माना जाए। मक़ामे तअ़ज्जुब है कि तशब्बोह बिर्रवाफ़िज़ तो मल्हूज़ रहे और तशब्बोह बिल कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन[2] बिल्कुल नज़र अन्दाज़ कर दिया जाए। अहले इन्साफ़ ग़ौर फ़रमाएं कि येह अ़दावते हुसैन नहीं तो क्या है? العیاذ باللہ والیہ المشتکی

(38) देवबन्दियों का मज़हब

उ़-लमाए देवबन्द के पेश्वायाने किराम के मज़हब में ''ज़ागे मा'रूफ़ा'' (मश्हूर कव्वा जो आ़म तौ़र पर पाया जाता है) खाना सवाब है। ''**फ़तावा रशीदिय्या**'' हि़स्सा 2, स. 130 को देखिये। इस पर लिखा है :

मस्अला : जिस जगह ज़ागे मा'रूफ़ा को अकसर ह़राम जानते हों और खाने वाले को बुरा कहते हों तो ऐसी जगह इस को खाने वाले को कुछ सवाब होगा या न सवाब होगा न अ़ज़ाब?

अल जवाब : सवाब होगा। फ़क़त़ : रशीद अह़मद गंगोही[3]

---

1. हिन्दूओं से मुशाबहत
2. कुफ़्फ़ार और मुशरिकीन से मुशाबहत
3. अस्ल किताब की इ़बारत बाब ''**अ़क्सी इ़बारात**'' में मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत का मज़हब येह है कि पाक ग़िज़ा पाक लोगों के लिये है और ख़बीस व नापाक ग़िज़ा ख़बीसों और नापाकों के लिये है। ज़ाग़ (मशहूर कव्वा) ह़राम और ख़बीस है जिस का खाना मोअमिनीने त़य्यिबीन के लिये जाइज़ नहीं। कव्वा खाने वाले ह़राम ख़ोर और अ़ज़ाबे आख़िरत के सज़ावार हैं।

(39) देवबन्दियों का मज़हब

उ़-लमाए देवबन्द की नज़र में मौलवी रशीद अह़मद साह़िब गंगोही, बानिये इस्लाम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के "**सानी**" हैं। मुलाह़ज़ा फ़रमाइये "मर्सिय्या" मुसन्निफ़ह मौलवी मह़मूद ह़सन देवबन्दी, मत़बूआ़ साढ़ूरा, स. **6**

ज़बान पर अहले अहवा [1] की है क्यूं उ'लू हुबल [2] शायद
उठा दुन्या से कोई बानिये इस्लाम का सानी

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के नज़दीक हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लासानी व बे नज़ीर हैं और **मरसिय्या** का ज़ेरे नज़र शे'र हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान में तौहीन व तन्क़ीस है। इस शे'र में मौलवी रशीद अह़मद गंगोही को बानिये इस्लाम का सानी कहा गया है।

"**बानिये इस्लाम**" से मुराद **अल्लाह** तआ़ला होगा या रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लिहाज़ा मौलवी रशीद अह़मद गंगोही

---

1 गुमराहों 2 **तर्जमा :** ऐ हुबल ! बुलन्द हो जा....हुबल कुफ़्फ़ारे मक्का के एक बुत का नाम है। कुफ़्फ़ारे मक्का अपनी फ़त्ह़ के मौक़अ़ पर "उ'लु हुबल" के ना'रे लगा कर मसर्रत का इज़्हार करते।"

(مَعَاذَاللہ) **अल्लाह** तआ़ला के सानी हुवे या रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ? ज़ाहिर है कि येह गिनती और शुमार का मौक़अ़ नहीं, इस लिये तस्लीम करना पड़ेगा कि मौलवी मह़मूदुल ह़सन साह़िब देवबन्दी ने मौलवी रशीद अह़मद साह़िब गंगोही को **अल्लाह** तआ़ला या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मिस्ल क़रार दे कर ख़ुदा और रसूल की शान में तौहीन की।

तअ़ज्जुब है कि अगर किसी जाहिल आदमी को मौलवी अशरफ़ अ़ली थानवी या मौलवी रशीद अह़मद गंगोही का सानी कह दिया जाए तो देवबन्दियों के दिल में फ़ौरन दर्द पैदा होगा कि "उफ़" हमारे मुक़्तदाओं की तौहीन हो गई लेकिन येह ख़ुद एक मौलवी को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **का सानी कहें तो इन्हें तौहीने रसूल का क़त़अ़न एह़सास नहीं होता बल्कि ऐसे तौहीन आमेज़ कलाम की तावीलाते फ़ासिदा में ऐड़ी चोटी का ज़ोर लगाने लगते हैं।** فَاعْتَبِرُوْا يَا اُولِى الْاَبْصَار(1)

(40) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दियों के नज़दीक मौलवी रशीद अह़मद साह़िब गंगोही के ह़क़ीर और छोटे से काले गुलामों का लक़ब "**यूसुफ़े सानी**" है। देखिये : "**मर्सिय्या**" मौलवी मुह़म्मद ह़सन साह़िब, स. **11** :

क़बूलिय्यत उसे कहते हैं, मक़्बूल ऐसे होते हैं

उ़बैदे सौद का उन के लक़ब है यूसुफ़े सानी

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत का मस्लक येह है कि किसी को वस्फ़े ऐब से ता'बीर कर के "**यूसुफ़े सानी**" उस का लक़ब क़रार देना

(1) तो इ़ब्रत लो ऐ निगाह वालो !

यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की शान में तौहीन व तन्क़ीस है। "**ऊ़बैदे सौद**" के मा'ना हैं : "काले रंग के ह़क़ीर और छोटे गुलाम" जिन को दूसरे लफ़्ज़ों में "काले गुलमटे" भी कहा जा सकता है। अगर किसी ने किसी को यूसुफ़े सानी से ता'बीर किया है तो उस के ह़ुस्न को तस्लीम कर के और उसे ह़सीन क़रार दे कर कहा है लेकिन इस शे'र में तो मौलवी रशीद अह़मद साहिब गंगोही के गुलामो को "**ऊ़बैदे सौद**" काले गुलमटे कह कर और इन के **मुह़क़्क़र व मुसग़्ग़र**[1] होने का इज़्हार कर के फिर उन्हें सियाह फ़ाम मानने के बा'द उन का लक़ब "**यूसुफ़े सानी**" रखा है, जिस में जमाले यूसुफ़ी की सरीह़ तौहीन है। اَلْعِيَاذُ بِاللّٰه

(41) देवबन्दियों का मज़्हब

देवबन्दी मस्लक में मौलवी रशीद अह़मद साह़िब गंगोही की मसीह़ाई सय्यिदुना ईसा बिन मरयम[2] की मसीह़ाई से बढ़ चढ़ कर है। देखिये "**मर्सिय्या**" मुसन्निफ़हू मौलवी मुह़म्मद ह़सन साह़िब देवबन्दी, स. **33**

मुर्दों को ज़िन्दा किया, ज़िन्दों को मरने न दिया
इस मसीह़ाई[3] को देखें ज़री[4] इब्ने मरयम

अहले सुन्नत का मज़्हब

अहले सुन्नत का मज़्हब येह है कि किसी नबी के मो'जिज़ात और कमालात में किसी ग़ैरे नबी को नबी से बढ़ चढ़ कर मानना तौहीने नबुव्वत है। इस शे'र में मुर्दा और ज़िन्दा से ह़क़ीक़ी मुर्दा और ज़िन्दा मुराद हो या मजाज़ी हो, हर सूरत में ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की तौहीन है। इस लिये कि मौलवी रशीद अह़मद साह़िब की मसीह़ाई

---

1 इन्तिहाई ह़क़ीर और छोटा 2 عَلَيْهِ السَّلَام 3 ह़यात बख़्शी, ज़िन्दगी देना
4 ज़री : ज़रा की जगह इस्ति'माल होता है, मा'ना थोड़ा (फ़ीरोज़ुल्लुग़ात)

का ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام की मसीहाई से मुक़ाबला किया गया है और फिर मौलवी रशीद अह़मद साह़िब की मसीह़ाई को ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام की मसीह़ाई पर तरजीह़ दी गई है जो सय्यिदुना मसीह़ इब्ने मरयम की शान में गुस्ताख़ी है। اَلْعِیَاذُ بِاللّٰہِ

(42) देवबन्दियों का मज़हब

देवबन्दी ह़ज़रात के नज़्दीक का'बे में भी गंगोह का रस्ता तलाश करना चाहिये। मौलवी महमूदुल ह़सन साह़िब देवबन्दी अपने तस्नीफ़ कर्दा "मर्सिय्या" के सफ़्ह़ा नम्बर **13** पर इरशाद फ़रमाते हैं :

फिरें थे का'बा में भी पूछते गंगोह का रास्ता
जो रखते अपने सीने में थे शौक़ व ज़ौक़े इरफ़ानी

अहले सुन्नत का मज़हब

अहले सुन्नत के नज़्दीक का'बए मुत़ह्हरा तमाम दुन्याए इन्सानिय्यत का मर्कज़ व मरजअ़ और सब के लिये अम्न व आ़फ़िय्यत का गहवारा है। मर्दे मोमिन का दिल ख़ुद ब ख़ुद का'बा की त़रफ़ खींचता है, ख़ुसूसन आ़रिफ़ बा ज़ौक़ पर का'बा के ह़क़ीक़ी ह़ुस्नो जमाल और इस के अन्वार व तजल्लिय्यात का इन्किशाफ़ होता है। **ऐसी सूरत में जो लोग का'बा में पहुंच कर भी गंगोह का रस्ता ढूंडते हैं वोह इल्मो इरफ़ान और ज़ौक़ो शौक़ से क़त़अ़न महरूम हैं। का'बा में पहुंचने के बा'द गंगोह का मुतलाशी होना यक़ीनन का'बए मुत़ह्हरा की अ़ज़मत व शान को घटाना है।**

नाज़िरीने किराम

तस्वीर के दोनों रुख़ आप के सामने मौजूद हैं। अब आप को इख़्तियार है जिसे चाहें पसन्द फ़रमाएं। मैं अपने मा'बूदे हक़ीक़ी रब्बे काइनात मुजीबुद्दा'वात جَلَّ مَجْدُہ से बसद तज़र्रुअ़ व ज़ारी दुआ करता हूं कि **अल्लाह** तआ़ला क़बूले हक़ की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन

وَهُوَ يَهْدِىْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ وَ آخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، وَ الصَّلَاةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ وَ عَلٰى آلِهٖ وَ صَحْبِهٖ وَ اَوْلِيَاءِ مِلَّتِهٖ وَ عُلَمَاءِ اُمَّتِهٖ اَجْمَعِيْنَ.

تَمَّتْ بِالْخَيْر

सय्यिद अहमद सईद काज़िमी

ज़ियारते औलिया व करामाते औलिया

- कभी ज़ियारत, अहले क़ुबूर से फ़ाइदा उठाने के लिये होती है जैसा कि क़ुबूरे सालिहीन की ज़ियारत के बारे में अहादीस आई हैं।

(जज़्बुल क़ुलूब तर्जमा अज़ फ़ारसी)

- इमाम इब्नुल हाज मुदख़ल में इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह बिन नो'मान की किताब मुस्तताब سفینۃ النجاء لاہل الالتجاء فی کرامات الشیخ ابی النجاء से नाक़िल :

تَحَقَّقَ لِذَوِى الْبَصَائِرِ وَالْاِعْتِبَارِ زِيَارَةُ قُبُوْرِ الصَّالِحِيْنَ مَحْبُوْبَةٌ لِاَجْلِ التَّبَرُّكِ مَعَ الْاِعْتِبَارِ فَاِنَّ بَرَكَةَ الصَّالِحِيْنَ جَارِيَةٌ بَعْدَ مَمَاتِهِمْ كَمَا كَانَتْ فِىْ حَيَاتِهِمْ. (المدخل: فصل فی زیارۃ القبور، دار الکتاب العربی بیروت ۱/۲۴۹)

या'नी अहले बसीरत व ए'तिबार के नज़्दीक मोहक़्क़िक़ हो चुका है कि क़ुबूरे सालिहीन की ज़ियारत ब ग़रज़े तह्सीले बरकत व इब्रत महबूब है कि इन की बरकतें जैसे ज़िन्दगी में जारी थीं बा'दे विसाल भी जारी हैं।